मेरी खेती

किसानों की बात मेरी खेती के साथ

दिसंबर, 2023 मूल्य: 49 रु.

- खेत खलियान
- सरकारी नीतियां
- मौसम व अन्य कृषि सुझाव
- सब्ज़ी
- फूल
- औषधीय खेती
- पशुपालन - पशुचारा
- प्रगतिशील किसान

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01-02
सब्ज़ी	03-05
फल	06-08
फूल	09
मशीनरी	10-13
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	14-16
सामान्य लेख	17-19
सरकारी नीतियां	20-28
किसान समाचार	29-41
औषधीय खेती	42-44
पशुपालन-पशुचारा	45-46
मिट्टी की सेहत - खाद	47-49
प्रगतिशील किसान	50

विज्ञापन के लिए संपर्क करें: +91 9899991906, +91 8800777501

सम्पादकीय

पपृथ्वी से जुड़ा एक अनमोल रिश्ता: मिट्टी का महत्व

पृथ्वी हम सभी के लिए एक आद्यात्मिक घर है, जिसमें हर कोने में छुपा हुआ है वहम का जहाज - मिट्टी। हरियाली, फल, फूल और अनगिनत जीवों का घर, मिट्टी न केवल एक साधारिता है, बल्कि यह हमारे जीवन के लिए एक स्रोत भी है।

5 दिसंबर को हम मिट्टी दिवस मना रहे हैं ताकि हम इस अद्वितीय तोहफे को समझें और सुरक्षित रखें। मिट्टी का सही से प्रबंधन करना हमारी जिम्मेदारी है।

मिट्टी में एक अद्भुत जीवन अंश हैं, जिन्होंने हमें अनगिनत उपहार दिए हैं। यह हमारी खेतों को फलाहार करती है, वृक्षों को बढ़ावा देती है और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखती है।

इस मिट्टी दिवस पर, हम सभी को यह समझने का समय है कि हमारी योजनाएं और कृषि तंतु कैसे मिट्टी को स्वस्थ रख सकती हैं। हमें अपनी ज़िम्मेदारी को समझना चाहिए ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इस अनमोल संसाधन का आनंद उठा सकें।

इस मिट्टी दिवस पर, हम सभी को यह सोचने का भी एक मौका मिले कि हम कैसे अपने आस-पास के स्थानों की मिट्टी की देखभाल कर सकते हैं और इसे स्वच्छ रख सकते हैं।

मिट्टी से जुड़ा हमारा संबंध अद्वितीय है, और इसे सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है। इस मिट्टी दिवस पर, हम सभी को मिट्टी के महत्व को समझने और इसे सुरक्षित रखने का संकल्प लेने की आवश्यकता है।

सोचिए, बचाइए और मिलकर काम करें - मिट्टी को हमारे जीवन का सहारा देने का करें यह प्रतिबद्धिता।

मृदा दिवस की बहुत बहुत शुभकानाएं!

धन्यवाद,

-संपादक
दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

डॉ. हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति, एसवीबीपीयूएटी, मेरठ,
साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

डॉ एसके सिंह
प्रोफ़ेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र
प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा,
बिहार

BRAJDHAM

BRAJDHAM
FARMS & RESORT

Explore The Nature

Starting ₹999*

www.brajdhamfarms.com

BOOK NOW

खेत खलियान

जानिए बांस को किसानों का एटीएम क्यों कहा जाता है ?

बांस ने सिद्ध किया है, कि यह किसी भी हालत में अपना विकास करने में सक्षम है। क्योंकि यह अपनी जलवायु विविधता के मुताबिक परिवर्तन लाने की क्षमता की वजह संजीवनी पौधा है। बतादें, कि चाहे बाढ़ हो अथवा सुखाड़, रेगिस्तान अथवा पहाड़ी इलाका हो, बांस बड़ी सहजता से उग जाता है। यह उपजाऊ अथवा बंजर भूमि में भी सहजता से उग सकता है।बांस किसानों के घर के आंगन से लेकर लड़ाई के मैदान में दुश्मनों के विरुद्ध लठ बजाने जैसे बहुतसे से कामों में सहारा देने वाला एक टिकाऊ बहुमुखी प्राकृतिक पौधा है। यह जीवन में भी शादी के मंडप से मृत्यु की शैय्या तक साथ देने की वजह से काफी उपयोगी होता है। बांस की मांग दिन–प्रतिदिन निरंतर बढ़ती जा रही है। इसलिए, इसे 'ग्रीन गोल्ड' कहा जाता है। इसको किसानों के लिए एक वास्तविक एटीएम के तौर पर जाना जाता है।

जानिए हरा सोना यानी कि बांस की उपयोगिता के बारे में

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि बांस एक बहुउपयोगी पौधा है। इस वजह से ही इसे ग्रीन गोल्ड कहा जाता है। बांस का इस्तेमाल भवन निर्माण से लेकर खानपान एवं कुटीर उद्योग में बहुतायत से किया जाता है। अगरबत्ती उद्योग, पैकिंग उद्योग, कागज उद्योग एवं बिजली उत्पन्न करने आदि में भी उपयोग किया जाता है। सामान्य तौर पर शहरों–क़स्बों अथवा गांवों में सीमेंटेड घर बनाते वक्त, इसके इस्तेमाल पर आपकी नजर पड़ी होगी। परंतु, सजावटी, रसोई और घरेलू वस्तु बनाने में भी ये बेहद काम आता है। इसका उपयोग वाद्य–यंत्र एवं आयुर्वेदिक दवा के तौर पर होता है। इससे शानदार गुणवत्ता की चेचरी एवं मैट तैयार किए जाते जाते हैं। बतादें कि प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि भूकंप, तूफान और बाढ़ वाले क्षेत्रों में बांस से निर्मित घर ज्यादा सुरक्षित माने जाते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, मृदा–क्षरण को रोकने में भी, बांस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बतादें, कि बाढ़ वाले क्षेत्रों में जहां अन्य फसलों को हानि होती है, वहां बांस सुरक्षित रहता है।

बांस को किसानों का एटीएम कहा जाता है

बांस को किसानों का ATM कहा जाता है। इसका इस्तेमाल कई सारी चीजों में होने की वजह से बांस को बेचने में कोई दिक्कत नहीं रहती है। खरीदार अथवा व्यापारी स्वयं, खेतों से बांस काटकर ले जाते हैं। ना बाजार का कोई झंझट, ना दाम की कोई चिकचिक। इसके साथ ही अन्य दूसरी फसलों में जहां हर समय नजर रखनी पड़ती है। उसमें मानव–श्रम काफी अधिक लगता है। इसके साथ ही बांस का बगीचा, एक बार लगा देने पर इसमें अधिक मानव–श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके साथ ही 5 वर्ष उपरांत से लेकर, 30 साल तक इससे नियमित तौर पर आमदनी होती रहती है। बतादें, कि अपने इन्हीं खास गुणों की वजह से बांस को किसानों का ATM कहा जाता है।

बांस की शानदार किस्में इस प्रकार हैं

राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केंद्र झांसी के मुताबिक भारत में सामान्यतः बांस की 23 वंश की 58 किस्में पाई जाती हैं। यह प्रजातियां पूर्वी और पश्चिमी इलाकों में हैं। भारत में सेंट एक्टस वंश 45 प्रतिशत, बॉम्बुसा बॉम्बे;13 प्रतिशत एवं डेंड्रोकैलामस मिल्टनी 7 फीसद पाई जाती है। बांस के बीज चावल की भांति होते हैं। बांस की टिश्यू कल्चर के माध्यम से तैयार पौध से रोपाई की जाती है।

बांस की खेती से कम लागत में लाखों का मुनाफा

प्रत्येक चार वर्ष उपरांत बांस के बगीचे तैयार हो जाते हैं। तब आप बांस की कटाई कर सकते हैं। चार वर्ष पर एक एकड़ से 15 से 20 लाख आमदनी ले सकते हैं अथवा मेड़ पर लगाकर प्रति वर्ष 20 हजार तक की आमदनी ले सकते हैं। बांस 30 वर्ष के जीवनकाल तक चलता रहता है। इस प्रकार बांस की बागवानी लगाकर आप बाढ़ वाले क्षेत्रों में भी अच्छी एवं निश्चित आमदनी कमा सकते हैं। ये हर समय बिक्री को तैयार रहने वाला पौधा है, जिस वजह से इसे ग्रीन गोल्ड भी कहा जाता है। भारत में इसकी खेती को प्रोत्साहन देने के लिए नेशनल बैंबू मिशन चलाया जा रहा है। वर्तमान में नेशनल बैंबू मिशन के अंतर्गत सरकार अनुदान भी प्रदान कर रही है। आप इसके सहभागी बन कर फायदा प्राप्त कर सकते हैं।

मोटे अनाज यानी ज्वार, बाजरा और रागी का सेवन करने से होने वाले लाभ

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ज्वार, बाजरा एवं रागी जैसे मोटे अनाजों में फाइबर, विटामिंस, आयरन और प्रोटीन जैसे मिनरल तत्व भरपूर मात्रा में उपस्थित होते हैं। इसके साथ ही ये अनाज ग्लूटन-फ्री सुपरफूड्स के रूप में जाने जाते हैं, जो डाइबिटीज को नियंत्रित करने में बेहद सहायता करते हैं। ऐसी स्थिति में आज हम आपको मोटे अनाज जैसे कि रागी, बाजरा और ज्वार का सेवन करने से होने वाले लाभों के विषय में बताऐंगे।

विगत दीर्घकाल से ना सिर्फ भारत में, बल्कि विश्वभर में लोगों के मध्य मोटे अनाजों की चर्चा काफी तीव्र हो गई है। क्योंकि इस साल यानी कि 2023 को भारत सरकार के आह्वान पर इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाया जा रहा है। मोटे अनाजों की खेती तथा इस्तेमाल को प्रोत्साहन देने में जुटी भारत सरकार लगातार इस बात के प्रयास में जुटी है, कि मोटे अनाजों की पहुंच भारत में हर घर तक बने। साथ ही, मोटे अनाज का सेवन करने से होने वाले लाभों के विषय में लोगों को जानकारी मिल सके।

श्री अन्न यानी मोटे अनाज का सेवन करने से होने वाले लाभ

दरअसल, ये तो स्पष्ट तौर पर जाहिर है, कि ज्वार, बाजरा तथा रागी जैसे मोटे अनाज विटामिंस, आयरन, प्रोटीन और फाइबर जैसे मिनरल तत्वों से भरपूर होते हैं। साथ ही, ये अनाज ग्लूटन-फ्री सुपरफूड्स के रूप में जाने जाते हैं, जो कि डाइबिटीज को नियंत्रित करने में बेहद सहायता करते हैं। अगर हम बात करें ग्लूटन की तो, ग्लूटन एक प्रकार का प्रोटीन होता है, जो गेहूं, जौ एवं राई में पाया जाता है। इसके साथ ही ग्लूटन-फ्री डाइट सेहत में सुधार लाने, वजन घटाने एवं एनर्जी बढ़ाने में सहायता करती है।

साथ ही, जिन व्यक्तियों को हृदय संबंधित बीमारियां हैं, उनके लिए मिलेट्स खाना लाभदायक साबित हो सकता है। क्योंकि ज्वार और बाजरा खाने से ब्लड सर्कूलेशन काफी अच्छा रहता है। ऐसी स्थिति में यदि आप दिल के मरीज हैं, तो आप ज्वार और बाजरा का सेवन अवश्य करें। इसके अतिरिक्त पेट में कब्ज हो अथवा एसिडिटी, पाचन शक्ति को बढ़ाने में भी श्री अन्न काफी लाभदायक साबित होता है। बतादें, कि मोटे अनाजों को इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में भी जाना जाता है। अस्थमा, मेटाबॉलिज्म और डायबिटीज जैसी विभिन्न स्वास्थ्य परेशानियों को दूर करने में मोटे अनाजों को शानदार माना गया है।

मोटे अनाजों का सेवन इन बीमारियों से ग्रसित लोग ना करें

हाइपोथायरायडिज्म, जिसको अंडरएक्टिव थायरॉयड ग्रंथि के नाम से भी जाना जाता है। यदि कोई व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित है, तो उन्हें मोटे अनाजों का सेवन करने से बचना चाहिए। क्योंकि, मोटे अनाज में गोइट्रोजेन होता है जो आयोडीन के अवशोषण में बाधा पैदा कर सकता है। हालांकि, जब खाना पकाया जाता है, तो पकने की वजह से इसमें मौजूद गोइट्रोजेन की मात्रा कम हो सकती है। परंतु, इसको पूर्णतय समाप्त नहीं किया जा सकता।

मशरूम की टॉप 5 उन्नत किस्म

जानिए मशरूम की जानी मानी इन 5 उन्नत किस्मों के बारे में

मशरूम की ये टॉप पांच उन्नत किस्में बटन मशरूम, ऑयस्टर मशरूम, दूधिया मशरूम, पैडीस्ट्रा मशरूम एवं शिमेजी मशरूम प्रजाति कम खर्च में ज्यादा उत्पादन देने में सक्षम है। मशरूम की खेती से कृषक कम समय में ज्यादा आमदनी हांसिल कर सकते हैं। यदि एक नजर से देखा जाए तो लोग मशरूम को काफी पसंद कर रहे हैं।बाजार के अंदर भी इसकी कीमत काफी ज्यादा होती है। अब ऐसी स्थिति में यदि किसान अपने खेत में मशरूम की उन्नत प्रजातियों की खेती करते हैं, तो वह काफी मोटी आमदनी अर्जित कर सकते हैं। इसी कड़ी में आज हम भारत के कृषकों को मशरूम की टॉप पांच उन्नत किस्मों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो कम लागत में ज्यादा उपज देने की क्षमता रखती है। हम जिन मशरूम की उन्नत किस्मों की बात कर रहे हैं, वह बटन मशरूम,ऑयस्टर मशरूम, दूधिया मशरूम, पैडीस्ट्रा मशरूम और शिमेजी मशरूम है। दरअसल, मशरूम की इन उन्नत किस्मों का उत्पादन करने के लिए कृषकों को मृदा की जरूरत नहीं होती है। दरअसल, आप इन्हें अन्य जगहों जैसे कि कंपोस्ट खाद, धान और गेहूं के भूसे और प्लास्टिक के बैग में भी सहजता से उगा सकते हैं।

मशरूम की टॉप पांच उन्नत किस्में इस प्रकार हैं

बटन मशरूम – मशरूम की इस प्रजाति को विशेष रूप पर कच्चा अथवा पकाकर खाया जाता है। इसका इस्तेमाल सलाद, सूप एवं पिज्जा आदि उत्पादों में किया जाता है। इस वजह से यह बाजार में सबसे ज्यादा बिकने वाली मशरूम हैं। इसके लिए 22-26 डिग्री सेल्सियस का तापमान की जरूरी होता है।

ऑयस्टर मशरूम – यह मशरूम 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान में उत्पादित होती है। यदि देखा जाए तो यह 3 माह में पककर तैयार हो जाती है। ऑयस्टर मशरूम खाने में मीठी होती है। इसका आकार मखमली की तरह होता है।

दूधिया मशरूम– आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि यह मशरूम आकार में काफी बड़ी होती है। वहीं, स्वास्थ्य के लिए भी इसको बेहद अच्छा माना जाता है।

पैडीस्ट्रा मशरूम – पैडीस्ट्रा मशरूम के लिए 28-35 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान होना चाहिए। इसकी सबसे बेहतरीन विशेषता यह है, कि यह काफी शीघ्रता से तैयार होकर बाजार में बिकने के लिए उपलब्ध हो जाती है।

शिमेजी मशरूम – मशरूम की शिमेजी किस्म समुद्र तट के मृत वृक्षों पर उगाई जाती हैं। लोगों के द्वारा मशरूम की इस किस्म को काफी ज्यादा पंसद किया जाता है। क्योंकि यह मशरूम पकने के उपरांत कुरकुरे की भांति स्वादिष्ट लगता है।

ग्वार की ये 5 किस्में किसानों को देंगी ज्यादा उपज और मुनाफा

किसान बीन्स की खेती से भी काफी शानदार आय अर्जित कर सकते हैं। किसान तरबूज की बेहतरीन किस्मों का चयन करके शानदार उत्पादन एवं मुनाफा दोनों अर्जित कर सकते हैं। बीन्स लता वाले समूह का एक पौधा होता है। इसके पौधों पर निकलने वाली फलियां सेम अथवा बीन्स कहलाती हैं, जिन्हें सब्जी के तौर पर उपयोग किया जाता है। इसको ग्वार के नाम से भी जाना जाता है, इसकी फलियां भिन्न–भिन्न आकार की होती हैं। जो दिखने में सफेद, हरी और पीले रंग की होती हैं। बीन्स की मुलायम फलियां सब्जी के तौर पर उपयोग की जाती हैं। इसके अंदर प्रोटीन, विटामिन तथा कार्बोहाइड्रेट की पर्याप्त मात्रा उपस्थित होती है।

साथ ही, यह सब्जी कुपोषण को दूर करने में ज्यादा लाभकारी होती है। इसके चलते बाजार में इसकी मांग वर्ष भर बनी रहती है। ऐसी स्थिति में किसानों के लिए ग्वार की खेती बड़े लाभ का सौदा सिद्ध हो सकती है। क्योंकि इसका उत्पादन करके किसान शानदार आय कर सकते हैं। तरबूज का ज्यादा उत्पादन लेने के लिए कृषकों को उसकी सही समय पर खेती एवं शानदार किस्मों का चयन करना अत्यंत आवश्यक है। इसकी कुछ ऐसी भी प्रजातियां हैं, जिसमें न तो कीट लगते हैं और न ही रोग लगता है। इन किस्मों की खेती से किसान काफी शानदार मुनाफा अर्जित कर सकते हैं।

ग्वार की 5 किस्में

टाइगर ग्वार सीड्स

शक्ति सीड्स कंपनी का यह वैराईटी ज्यादा शाखाओं एवं ज्यादा फैलाव वाली ग्वार किस्म है। इस किस्म के दाने गोल, चमक और वजनदार होते है। जड़ गलन, झुलसा, ब्लाईट जैसे रोगों के प्रति उच्च सहनशील प्रजाति है। लंबी अवधि के साथ पकती है, जिसका 100 से 110 का वक्त लग जाता है। अधिकतम उत्पादन के साथ 7 से 10 क्विंटल / एकड़ उत्पादन देखने को मिलता है। यह किस्म समस्त प्रकार की मृदा में उपयुक्त मानी गई है।

ग्वार की सुपर एक्स -7

सुपर एक्स -7 किस्म के पौधो की ऊंचाई 90 से 100 सेंटीमीटर मानी जाती है। भारत में सिंचित और असिंचित अवस्था दोनों में की जा सकती है। इस किस्म को पकने में 80 से 100 दिन का समयांतराल लग जाता है। इसका ओसत उत्पादन 6 से 8 क्विंटल / एकड़ देखा जा सकता है। यह बीज किस्म ब्लाईट, जड़ गलन जैसें रोगों के प्रति सहनशील होती है।

ग्वार की एच जी -365

विभिन्न शाखाओं के साथ फैलने वाली यह प्रजाति प्रमाणित उन्नत प्रजाति है। यह 60 से 70 दिनों के समयांतराल में शीघ्रता से पकने वाली किस्म है। पैदावार की बात की जाए तो 18-20 क्विंटल / हेक्टेयर लिया जा सकता है।

ग्वार की कोहिनूर 51 किस्म

बतादें, कि बीन्स की कोहिनूर 51 किस्म का फल हरे रंग का होता है। इसके फल बाकी किस्मों से लंबे होते हैं। इस बीन्स के बीज को रोपने के 48-58 दिनों की अवधि में पहली तुड़ाई शुरू हो जाती है। वहीं, ये किस्म 90 से 100 दिनों में पूर्णतय तैयार हो जाती हैं। इस किस्म की खेती किसान तीनों सीजन मतलब कि रबी, खरीफ एवं जायद में कर सकते हैं।

ग्वार की अर्का संपूर्ण किस्म

अर्का संपूर्ण किस्म का निर्माण भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा किया गया है। इस प्रजाति के पौधों पर रतुआ एवं चूर्णिल फफूंद का रोग नहीं लगता है। इस प्रजाति के पौधे रोपाई के तकरीबन 50 से 60 दिन पश्चात उत्पादन देना चालू कर देते हैं, जिनका प्रति हेक्टेयर समकुल उत्पादन 8 से 10 टन के करीब होता है।

लौकी की इस किस्म ने बदली किसान की तकदीर

लौकी की नरेंद्र शिवानी किस्म को आचार्य नरेंद्र कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या के निर्वतमान प्रोफेसर डॉक्टर शिवपूजन सिंह द्वारा विकसित किया गया है। लौकी की इस किस्म की लंबाई डेढ़ से दो मीटर और वजन दो किलो तक होता है।

किसान अपने खेत में विभिन्न प्रकार की शानदार उन्नत किस्मों की सब्जियों की खेती करते हैं। ताकि वह उसको बाजार में बेचकर बेहतरीन कमाई कर सकें। यदि आप अपने खेत में सब्जियों की खेती करने के बारे में विचार कर रहे हैं, तो आपके लिए लौकी की सब्जी काफी अच्छा विकल्प साबित हो सकती है। इसी कड़ी में आज हम आपके लिए लौकी की एक ऐसी शानदार उन्नत किस्म की जानकारी लेकर आए हैं, जो लौकी की समस्त किस्मों से अलग है। जिस प्रजाति के बारे में हम बात कर रहे हैं, उस किस्म का नाम नरेंद्र शिवानी लौकी है। लौकी की यह प्रजाति डेढ़ से दो मीटर लंबाई वाली वहीं इसका वजन एक से दो किलो तक होता है। लौकी की इस किस्म ने भारत के कई किसानों की तकदीर को बदला है। ऐसे ही एक किसान जिया हक जो अपने खेत में लौकी की उन्नत किस्म नरेंद्र शिवानी की खेती करते हैं।

लौकी की नरेंद्र शिवानी किस्म के बारे में जानकारी

लौकी की इस शानदार किस्म को आचार्य नरेंद्र कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या के निर्वतमान प्रोफेसर डॉक्टर शिवपूजन सिंह द्वारा तैयार किया गया है। इस प्रजाति की लौकी की लंबाई डेढ़ से दो मीटर तक होती है। साथ ही, इसके फल का कुल वजन एक से दो किलो तक होता है। बतादें, कि इस किस्म की बुवाई करने के लिए जुलाई का महीना सबसे उपयुक्त होता है। यदि किसान इसका मचान विधि से उत्पादन करते हैं, तो वह इससे काफी अधिक पैदावार हांसिल कर सकते हैं।

लौकी की नरेंद्र शिवानी किस्म ने किसान को किया मालामाल

उत्तर प्रदेश के जनपद बहराइच, ब्लाक चितौरा के निवासी प्रगतिशील किसान जिया हक ने अपने खेत में लौकी की नरेंद्र शिवानी किस्म की खेती की एवं वर्तमान में वह इससे बेहतरीन उत्पादन पा रहे हैं। इसके साथ ही बाजार में भी उन्हें इस किस्म की लौकी का शानदार भाव मिल रहा है। किसान जिया हक का कहना है, कि वह अपने खेत में केवल लौकी की नरेंद्र शिवानी किस्म की खेती के साथ वह नरेंद्र हल्दी-2 का भी पैदावार कर रहे हैं। उनका कहना है, कि इन दोनों ही फसलों से किसान को काफी शानदार लाभ मिलेगा। क्योंकि, यह उत्पादन एवं शुद्धता के मामले में बाकी फसलों से अधिक लाभ देती हैं।

फल

ब्लैक एप्पल की खेती

ब्लैक एप्पल की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी

ब्लैक एप्पल की फसल अपने आप में एक दुर्लभ फसल है। इसका उत्पादन बेहद ही ठंडे इलाकों में देखने को मिलता है। दिखने में यह सेब गहरे काले रंग या गहरे काले बैंगनी रंग का होता है। इसके अंदर विभिन्न ऐसे गुण उपस्थित हैं, जो इसे बेशकीमती बनाते हैं। यही कारण है, कि 'ब्लैक डायमंड एप्पल' का एक पीस 500 से 1000 रुपये में बिकता है।

जब भी हम सेब की बात करते हैं, तो दिमाग में लाल और हरे सेब की तस्वीर सामने आ जाती है। कहते हैं, कि सेब जितना लाल हो वह उतना ही अच्छा और मंहगा होता है। वैसे हरा सेब भी किसी से कम नहीं है। इसके स्वास्थ्य लाभों के चलते विगत कुछ वक्त से बाजार में इसकी मांग काफी बढ़ी है। परंतु, सेब की एक प्रजाति ऐसी भी है, जो न तो लाल है और न ही हरी। जी हां, सही सुना आपने इन दिनों एक खास तरह के सेब की खूब चर्चा है। सेब की इस किस्म का नाम है 'ब्लैक डायमंड एप्पल' जैसा कि आप नाम से ही समझ गए होंगे कि ये दिखने में काले रंग का होता है और इसकी चमक भी बिल्कुल हीरे जैसी होती है। यह दिखने में जितना सुंदर होता है, स्वाद में भी उतना ही शानदार होता है। यही कारण है, कि इस किस्म के एक सेब की कीमत 500 रुपये तक होती है।

ब्लैक डायमंड एप्पल

बाजार के अंदर सेब की 100 से ज्यादा किस्में मौजूद हैं। उन्ही में से एक है 'ब्लैक डायमंड एप्पल' ये काफी दुर्लभ होता है, जिस वजह से ये सुगमता से नहीं मिलता है। इसे कहीं भी नहीं उगाया जा सकता। यही कारण है, कि ये बाजार में सुगमता से नहीं मिलता और इतना ज्यादा महंगा भी होता है। दिखने में यह सेब गहरे काले रंग अथवा गहरे काले बैंगनी रंग का होता है। ऐसा कहते हैं, कि ब्लैक डायमंड एप्पल के काले रंग के पीछे की वजह इन फलों पर पड़ने वाली गहराई बैंगनी किरणें होती हैं। ये किरणें इनके रंग को गहरा बैंगनी बना देती हैं।

काले सेब की खेती कहां पर होती है

काला सेब काफी ठंडी जगहों पर उगाया जाता है। अब तक इसकी खेती केवल भूटान अथवा तिब्बत की पहाड़ियों में ही की जाती है। जहां की जलवायु परिस्थितियां इसके लिए पूर्णतय सही बैठती हैं। वहां के स्थानीय निवासी इसे 'हुआ निउ' के नाम से जानते हैं। काले सेब को समुद्रतल से बेहद ऊंचाई पर पहाड़ियों में उत्पादित किया जाता है। इसके अंदर बहुत सारे ऐसे गुण मौजूद हैं, जो इसे बेशकीमती बनाते हैं। यही वजह है, कि 'ब्लैक डायमंड एप्पल' का एक पीस 500 से 1000 रुपये में बिकता है। चीन सहित बहुत सारे देशों में इस सेब की बेहद मांग रहती है।

सर्दियों में बागवानी की इन फसलों की खेती से किसान लाखों कमा सकते हैं

सर्दियों के दिनों में बहुत सारी सब्जी एवं फल आते हैं। अब इन दिनों में किसान भाई फल व सब्जियों की फसलों की खेती कर शानदार आय अर्जित कर सकते हैं। मौसम में तब्दीली के साथ अब सर्दियां आ चुकी हैं। ऐसी स्थिति में बाजार में विभिन्न प्रकार की सब्जियां तथा मौसमी फल आना चालू हो जाएंगे, जिनका उत्पादन कर कृषक भाई तगड़ा मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। बतादें, कि इस मौसम में विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जा सकती हैं।

सब्जियों और फलों की खेती

सब्जियों की बात की जाए तो सर्दी के मौसम में विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती की जा सकती है। दरअसल, इन सब्जियों के अंतर्गत पालक, धनिया, पुदीना, टमाटर, बैंगन, भिंडी और मटर आदि शम्मिलित हैं। इन सब्जियों की खेती से शानदार मुनाफा हांसिल किया जा सकता है। साथ ही, फलों की तरफ देखें तो सर्दी के मौसम में कुछ विशेष प्रकार के फलों की खेती की जा सकती है। बतादें, कि इन फलों के अंतर्गत नाशपाती, संतरा, अंगूर और सेब इत्यादि शुमार हैं। इन फलों के उत्पादन से भी बेहतरीन मुनाफा कमाया जा सकता है। सर्दी के मौसम में दलहन की खेती भी की जा सकती है, जिसके अंतर्गत मसूर, अरहर, मूंग और चना आदि शामिल हैं।

मूली की खेती

मूली की खेती करने के लिए ठंडी जलवायु काफी उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी स्थिति में किसान भाई मूली की खेती कर अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। शानदार फसल के लिए दोमट मृदा का उपयोग आवश्यक है। किसान टमाटर की खेती कर सकते हैं। इसके लिए कृषकों को टमाटर की उन्नत किस्म को चयनित करना होगा, जिससे शानदार उपज के साथ बेहतरीन गुणवत्ता की फसल उन्हें हांसिल हों सके।

मटर की खेती

बतादें, कि इस मौसम में मटर की मांग काफी ज्यादा बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में किसान मटर की खेती कर शानदार लाभ हांसिल कर सकते हैं। मटर एक पौष्टिक सब्जी है, जो कि प्रोटीन, फाइबर एवं अन्य पोषक तत्वों का शानदार स्रोत है। मटर की खेती के लिए दोमट अथवा बलुई दोमट मृदा अनुकूल होती है। इसकी खेती करने के लिए शानदार गुणवत्ता वाले बीज का उपयोग करना चाहिए।

नाशीकीट से खतरा

केले की खेती करने वालों को इस नए नाशीकीट से खतरा

केले की फसल में नवीन कीट की जाँच की गई है, जिसे फॉल आर्मीवर्म कहा जाता है। वैज्ञानिकों ने इसको केले के पत्तों को खाते हुए देखा है। यह कीट प्रमुख रूप से मक्के की फसल के अंदर पाया जाता है। ऐसी स्थिति में कहा जा रहा है, कि ये वहीं से केले पर देखने को मिला हो। इसकी रोकथाम करने के लिए वैज्ञानिकों ने शोध चालू कर दिया है।

भारत में बड़े स्तर पर केले का उत्पादन होता है। यह एक ऐसा फल है, जो बहुत सारी चीजों में उपयोग किया जाता है। पकने से पूर्व इसका उपयोग चिप्स और सब्जी निर्मित करने में किया जाता है। बतादें, कि पके हुए केले को साबुत तौर पर ही खाया जाता है। केला कैल्शियम, फास्फोरस और कार्बोहाइड्रेट का एक अच्छा स्त्रोत माना जाता है।

केले के पत्ते बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किए जाते हैं

सिर्फ इतना ही नहीं भारत में केले के पत्ते का भी काफी बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। इसको पूजा एवं भोजन परोसने के लिए उपयोग में लिया जाता है। परंतु, केले की खेती करना उतना भी सहज नहीं है। यदि केले की फसल में कोई रोग लग जाए अथवा कीट आक्रमण कर दे तो संपूर्ण फसल बर्बाद हो जाती है। ऐसी स्थिति में कृषकों को वक्त रहते इसकी रोकथाम के लिए उपाय कर लेने चाहिए, जिसे उन्हें नुकसान न उठाना पड़े।

केले की फसल में नवीन नाशीकीट का पता कैसे करें

वर्तमान में वैज्ञानिकों ने केले की फसल में एक नवीन नाशीकीट का पता लगाया जा सके, जिसको फॉल आर्मीवर्म (स्पोडोप्टेरा फुजीपर्डा) कहा जाता है। यह एक आक्रामक कीट है, जो मुख्य तौर पर मक्के की फसल में पाए जाते हैं। लेकिन, वैज्ञानिकों ने इसे केले के पत्तों को खाता हुआ पाया गया है। इस कीट को आक्रामक इस वजह से कहा जाता है, क्योंकि यह टिड्डियों की भांति झुंड बनाकर फसल को चट कर जाते हैं।

केले की इस प्रजाति पर कीट की मौजदगी दर्ज की गई

वैज्ञानिकों ने इसको केले पर अपना जीवनचक्र पूर्ण करते हुए पाया है। इसको तमिलनाडु के त्रिची जनपद में मक्का के खेतों के समीप केले के पौधों पर पाया गया है। यह संभावित है, कि यह मक्का से केले में आया हो। तमिलनाडु के करूर एवं तिरुचिरापल्ली जनपद में केले के पौधों के ऊपर बोंडार नेस्टिंग व्हाइटफ्लाई नामक एक विदेशी आक्रामक कीट का संक्रमण हाल ही में भारत में अधिसूचित किया गया है। इसी तरह बैगवर्म का गंभीर संक्रमण केले की कर्पूवल्ली प्रजाति पर देखा गया है। साथ ही, इस किस्म से समकुल 108 जननद्रव्यों की प्राप्तियों को इससे क्षतिग्रस्त पाया गया है।

कीट संक्रमण को रोकने हेतु वैज्ञानिक शोध में जुटे हुए हैं

केले पर इस कीट के संक्रमण की यह प्रथम रिपोर्ट है। इसको सुपारी, नारियल एवं तेल-ताड़ समेत विभिन्न तरह के ताड़ वृक्षों के एक गंभीर कीट के तौर पर जाना जाता है। वैज्ञानिकों द्वारा इसपर नियंत्रण करने के लिए शोध आधारित कोशिशें की जा रही हैं, जिससे कि केले की फसल को इसके संक्रमण से वक्त रहते बचाया जा सके।

श्री राम
फर्टीलाइजर्स एवं कृषि उद्योग

One-stop solutions for improving the crop and soil texture.

फूल

इस राज्य में गेंदे की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए 70% प्रतिशत अनुदान

बिहार सरकार की तरफ से किसानों के लिए कई सारी योजनाऐं चलाई जा रही हैं। सरकार गेंदे के फूलों की खेती करने के लिए अनुदान प्रदान कर रही है। सरकार की तरफ से कृषकों को इस फूल की खेती करने के लिए 70 फीसद तक का अनुदान भी दिया जा रहा है।

गेंदे के फूल का उपयोग पूजा पाठ से लेकर सजावट के कार्यों में किया जाता है। ये फूल दिखने में काफी ज्यादा खूबसूरत होता है। इस फूल की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए बिहार राज्य की सरकार कृषकों को अनुदान प्रदान कर रही है। बिहार सरकार ने गेंदे के फूलों की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए एक नवीन योजना तैयार की है। इसके अंतर्गत गेंदे के फूलों की खेती के लिए सरकार की तरफ से 70 फीसद तक अनुदान दिया जा रहा है। गेंदे के फूलों की खेती काफी फायदेमंद है। इन फूलों की हर वक्त मांग बनी रहती है। इन फूलों को स्वागत समारोह, शादी-विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों एवं सजावट में इस्तेमाल किया जाता है।

बिहार सरकार 70 प्रतिशत तक अनुदान प्रदान करेगी

बिहार सरकार का कहना है, कि किसानों को गेंदे के फूलों की खेती से ज्यादा धनराशि मिलेगी। इसके साथ ही इससे प्रदेश में लोगों को कार्य भी मिलेगा।किसान इस योजना के अंतर्गत एक एकड़ में गेंदे के फूलों की खेती करने के लिए 40,000 रुपये खर्च करेंगे। सरकार 28,000 रुपये अथवा 70 प्रतिशत खर्चा अनुदान के तौर पर प्रदान करेगी।

बिहार में बढ़ेगा फूलों की खेती का रकबा

किसानों को इस योजना का फायदा प्राप्त करने के लिए संबंधित जनपद के उद्यान विभाग/कृषि विभाग में आवेदन करना पड़ेगा। कृषकों को आवेदन के साथ-साथ भूमि पट्टा, खाद, बीज और अन्य सामग्री की खरीद का दस्तावेज जमा करना होगा। सरकार का यह मानना है, कि बिहार में गेंदे के फूलों की खेती इस योजना से बढ़ेगी। इससे कृषकों की आमदनी में काफी बढ़ोतरी होगी और राज्य में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

ध्यान रखने योग्य बातें

गेंदे के फूलों की खेती के लिए दोमट मृदा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती के लिए 6-8 घंटे की धूप आवश्यक है। गेंदे के फूल की खेती करने के लिए प्रति एकड़ के अनुरूप लगभग 10 टन खाद की आवश्यकता होती है। साथ ही, गेंदे के फूलों की खेती के लिए प्रति एकड़ 100 किलोग्राम यूरिया, 50 किलोग्राम डीएपी एवं 50 किलोग्राम पोटाश की भी आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त गेंदे के फूल की खेती के लिए सिंचाई की उत्तम व्यवस्था भी होनी चाहिए।

मशीनरी

जानें लेजर लैंड लेवलर मशीन की खासियत, कीमत और लाभ के बारे में

खेत की मृदा से फसल का शानदार उत्पादन हांसिल करने के लिए किसानों को अपने खेत में कृषि मशीन लेजर लैंड लेवलर का उपयोग करना चाहिए। इससे खेत की मृदा एकसार होगी। साथ ही, मृदा में नमी एवं पोषक तत्वों का भी अभाव नहीं होगा।

फसल से शानदार उत्पादन हांसिल करने के लिए खेत की मृदा का भी अच्छा होना काफी आवश्यक है। इसके लिए किसान अपने खेत में विभिन्न प्रकार के कार्यों को करते हैं। परंतु, आज हम खेत की मृदा को फसल के योग्य बनाने के लिए एक शानदार कृषि मशीन की जानकारी लेकर आए हैं, जिनका नाम लेजर लैंड लेवलर है। बतादें, कि इस मशीन का उपयोग खेत की मृदा को एकसार करने के लिए किया जाता है। यदि आपके खेत की मृदा एकसार नहीं हैं, तो इसे खेत की मृदा में नमी एवं पोषक तत्वों की कमी हो सकती है। इसकी वजह से किसानों को उनकी फसल की बेहतरीन उपज हांसिल नहीं हो पाती है।

इस प्रकार लेजर लैंड लेवलर मशीन संचालित की जाती है

खेत में लेजर लैंड लेवलर मशीन को चलाने से पूर्व किसान को अपने खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए। साथ ही, मृदा में लगभग पांच फीसद तक नमी बनी रहनी चाहिए। इस बात का भी विशेष ध्यान रहे, कि खेत में खरपतवार एवं घास इत्यादि नहीं होनी चाहिए। लेजर लैंड लेवलर मशीन ट्रैक्टर के द्वारा खेत में चलाई जाती है। क्योंकि, इसको ट्रैक्टर के पीछे लगाकर खेत की मृदा को एकसार बनाया जाता है। यह कृषि मशीन एक से दो घंटे में एक एकड़ भूमि की मृदा को एकसार बना सकती है।

लेजर लैंड लेवलर मशीन से क्या-क्या लाभ होते हैं

- लेजर लैंड लेवलर मशीन को खेत में चलाने के पश्चात फसल का उत्पादन लगभग एक समान होता है।
- फसल के उत्पादन में 10-15 फीसद तक की बढ़ोतरी।
- सिंचाई के दौरान 30-35 प्रतिशत पानी की खपत कम होगी।
- खेत में एक बार उपयोग होने के पश्चात 2-3 वर्ष तक खेत की मृदा सुरक्षित बनी रहती है।
- इसके इस्तेमाल से किसान कम लागत में ही बेहतरीन उत्पादन हांसिल कर सकते हैं।

लेजर लैंड लेवलर मशीन की कितनी कीमत होती है

लेजर लैंड लेवलर मशीन की कीमत के बारे में बात करें तो किसानों के लिए यह लेजर लैंड लेवलर मशीन की कीमत काफी ज्यादा किफायती होती है। साथ ही, भारतीय बाजार में इस कृषि मशीन की कीमत तकरीबन 1.35 लाख रुपये से चालू होती है।

पत्थर निकालने की मशीन

यह मशीन खेत से पत्थर निकालने में मदद करेगी

ढ़ंग से सफाई कर फसल की ज्यादा उपज प्राप्त कर सकते हैं। किसान स्टोन पिकर मशीन की सहायता से खेत में उपस्थित हर प्रकार के पत्थरों को एक ही बार में बाहर निकाल सकते हैं।

भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार की फसलों का किसानों के द्वारा उत्पादन किया जाता है। साथ ही, खेती-किसानी को सुगम बनाने के लिए कृषि उपकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दरअसल, कृषि मशीनों के आ जाने पर उन राज्यों में भी खेती करना सहज हो गया है। जहां की मृदा में काफी संख्या में कंकड़-पत्थर पाए जाते हैं। वहीं, जुताई के दौरान किसानों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे कि पहाड़ी हिस्सों के खेत की जुताई करने के लिए यहां के कृषकों की ज्यादा लागत लगती है। किसानों की परिस्थितयों को मंदेनजर रखते हुए स्टोन पिकर मशीन की जानकारी लेकर आए हैं, जो किसानों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती है। यह मशीन खेत में उपस्थिति छोटे और बड़े पत्थरों को एक ही बार में बाहर निकाल देती है, जिससे कि खेत की जुताई बेहतर ढ़ंग से हो सके। साथ ही, फसल के उत्पादन में भी बढ़ोतरी हो सके।

स्टोन पिकर मशीन इस तरह खेत में कार्य करता है

स्टोन पिकर मशीन का खेत में संचालन के लिए किसान को ट्रैक्टर की आवश्यकता होगी। क्योंकि, यह मशीन ट्रैक्टर के पीछे लगाकर चलाई जाती है। किसान इस मशीन से एक एकड़ जमीन से लगभग दो घंटे में ही समस्त पत्थरों को बहार निकाल सकते हैं। साथ ही, यह खेत की मृदा को बेहतर ढ़ंग से साफ कर उसे खेती के लायक बना देता है। ताकि किसान अपने खेत की बेहतर ढ़ंग से जुताई कर फसल की ज्यादा उपज हांसिल कर सकें।

कार्यक्षमता: इससे तकरीबन 0.40 हेक्टेयर/घंटा की दर से कटाई कर सकते हैं। इससे कटाई की लागत लगभग 1050/- रुपए घंटा आती है।

कीमत: इस मशीन का अनुमानित मूल्य तकरीबन 2 से 3 लाख रुपए के आस-पास होता है।

स्वचालित वर्टिकल कन्वेयर रीपर

किसान भाइयों आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि छोटे और मध्यम किसानों के लिए गेहूं की कटाई करने हेतु यह अत्यंत उपयोगी मशीन है। इस मशीन में आगे की तरफ एक कट्टर बार लगी होती है, तो वहीं पीछे संचरण प्रणाली लगी होती है। इसके साथ ही रीपर में तकरीबन 5 हॉर्स पावर का एक डीजल इंजन लगा होता है, जो कि पहियों और कटर बार के लिए चलाने का कार्य करता है।

कीमत: इस मशीन की अनुमानित लागत रुपए लगभग 100000/- है।

कार्यक्षमता: इस मशीन से कटाई करने की लागत लगभग 1100 रुपए प्रति हेक्टेयर आती है. इसकी कार्य क्षमता लगभग 0.21 हेक्टेयर प्रति घंटा है।

इन कृषि यंत्रों को खरीदने के लिए आप अपने क्षेत्र में स्थानीय कंपनियों से संपर्क कर सकते हैं, जो कि कृषि यंत्रों का निर्माण करती हैं। बतादें, कि यह कृषि यंत्र आपको बहुत ही कम कीमत में मिल जाएंगे।

जीरो टिलेज तकनीक से गेहूं की करें बिजाई और बचाये 1500 रुपए प्रति एकड़

किसान भाइयों रबी का मौसम शुरू हो गया है कई राज्यों में गेहूं कि बुवाई चालू हो गयी है। इस लेख में हम आपको गेहूं की बुवाई करनी के एक उत्तम विधि के बारे में बातएंगे जिसका नाम जीरो टिलेज तकनीक है। जीरो टिलेज मशीन से गेहूं की बुआई करने से प्रति एकड़ 1500 रुपए बच आएगी। गेहूं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कृषि विभाग इस तकनीक को खेती के लिए भी प्रोत्साहित कर रहा है। यदि किसान जीरो टिलेज तकनीक से गेहूं की बुआई करता है, तो उसे दो फायदे होंगे। पहला फायदा यह है कि बीज की मात्रा कम लगेगी और दूसरा इससे समय और पैसा बचेगा।

जीरो टिलेज तकनीक क्या है?

जीरो टिलेज सीड ड्रिल का उपयोग करके किसान खेत को जोते बिना आसानी से बुआई कर सकता है। इस तकनीक में, पिछली फसल की कटाई के बाद उसके खड़े अवशेषों या फानों को खेत को तैयार किए बिना बीजा जा सकता है, बिना खेत को तैयार किए। इसलिए इसे सीधी बिजाई की तकनीक या जीरो टिलेज तकनीक कहते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र खंडवा के वैज्ञानिक सुभाष रावत ने बताया जीरो टिलेज मशीन से खेतों में गेहूं के बीज और खाद की एक साथ बुवाई की जा सकती है। इस तरीके से समय बचता है। धान कटने के बाद गेहूं लगाना आसान है। पौधे से पौधे की सही दूरी होने से उत्पादकता बढ़ती है।

पहली सिंचाई 15 से 20 दिन बाद करें

आपकी जानकारी के लिए बात दे कि 15 से 20 दिन बाद जीरो टिलेज से बीजी गई गेहूं की फसल में पहली सिंचाई करनी चाहिए। खेत में अधिक नमी होने पर पहली सिंचाई सामान्य सलाह के अनुसार ही करें। जरूरत के अनुसार अतिरिक्त सिंचाई करें। खेत में जलभराव न होने दें। इस तरह की तकनीक को अपनाकर बहुत से किसान काफी लाभ ले रहे हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ रही है।

जीरो टिलेज सीड ड्रिल से गेहूं की बुआई करने के फायदे

- पारंपरिक विधि से धान कटने के बाद गेहूं की बुआई के लिए खेती की तैयारी के लिए 5-6 बार जुताई पर खर्च 1500-2000 रुपए प्रति एकड़ की बचत हो सकती है।
- धान की कटाई के बाद मिट्टी में समुचित नमी रहने पर गेहूं की बुआई की अवधि में 20 से 25 दिनों का समय मिल सकता है।
- गेहूं के बीच की गहराई 3-5 सेमी होती है। हल्की मिट्टी की परत पड़ती जाती है। बीज का जमाव कल अच्छे होते हैं।
- फसल में डाली गई खाद सीधे पौधों को खुराक देती है।
- 10-15% पानी बचता है।

उपयुक्त मशीन का चयन करना चाहिए

जीरो टिल ड्रिल मशीन में 18 से 20 सेमी की दूरी पर 9 से 11 भालानुमा फाले लगे होते हैं। ट्रैक्टर के पीछे जोड़कर इन्हें चलाया जाता है। एक घंटे में लगभग एक एकड़ की खेत की बिजाई कर सकती हैं। जिन क्षेत्रों में कंबाइन से धान कटाई की जाती है, उनमें बहुत सारे फसल अवशेष बच जाते हैं। गेहूं की खेती अब कठिन हो जाती है। यहां किसान हैप्पी सीडर का उपयोग कर सकते हैं। इसमें रोटर और जीरो ड्रिल मशीन हैं, जो गेहूं के दानों को गहराई तक डालती हैं।

बीजोपचार करने से कई बीमारियों से मिलेगी राहत

गेहूं को दीमक से बचाने और अधिक उत्पादकता देने के लिए कीटनाशक, फफूंदनाशक और जैविक खाद से बीजों को तैयार करें। यदि बीज पहले से उपचारित नहीं है, तो 2 ग्राम बाविस्टीन या वीटावैक्स प्रति किग्रा मिला लें। ध्वज पत्ता कांगियारी या खुली कंगियारी से बचने के लिए प्रति किग्रा रैक्सिल से बीज उपचार करें। दीमक को दूर करने के लिए एक क्विंटल बीज को 150 मिली क्लोरपाइरीफोस से मिलाएं।

खेत में नमी का होना है जरुरी

गेहूं की बिजाई करते समय खेत में नमी का ध्यान रखें। जब खेत में उचित नमी हो तब जीरो टिलेज मशीन से बिजाई करनी चाहिए। धान की फसल को एक सप्ताह पहले सिंचाई करें जब कम नमी है। धान कटाई के बाद समुचित नमी में गेहूं बोएं। इससे लाभ मिल सकता है।

एससी-एसटी को 50 और सामान्य वर्ग को 40 फीसदी अनुदान

एचआई-8663 (पोषण), पूसा तेजस, पूसा उजाला, जे-डब्ल्यू 3336, जेडब्ल्यू (एमपी) 3288, एमपी 3382 को दिसंबर तक बो सकते हैं। जीरो टिलेज मशीन पर लघु सीमांत किसान और महिला वर्ग एससी/एसी को 50 फीसदी और सामान्य वर्ग के किसानों को 40 फीसदी अनुदान मिलेगा। इसके अलावा राज्य सरकार का 10 हजार रुपए टॉपअप दिया जा रहा है।

जीरो टिलेज तकनीक से बोए गेहूं के लिए बरतें सावधानियां

धान कटाई के समय फसल के फानों को बहुत बड़ा नहीं होने देना चाहिए। बीज की गहराई 5-6 सेमी होनी चाहिए। बिजाई से पहले खेत में बीज खाद की पूरी मात्रा डाल दें। स्क्रू बोल्ट की मदद से मशीन के दोनों तरफ पहिए ऊपर या नीचे कर सकते हैं। मशीन के पीछे चलकर खाद-बीज की कोई नाल बंद तो नहीं देखनी चाहिए।

जोश का राज़ मेरा
SWARAJ
ट्रैक्टर बोले तो
SWARAJ
POWERFUL ENGINE
STRONG FRONT AXLE
LED FENDER AND TAIL LAMP
SWARAJ 744 FE
NAYA SWARAJ, MERA SWARAJ

फसलों में पोषक तत्वों की कमी की जाँच करने का तरीका

खेती किसानी के दौरान बहुत बार किसानों की फसलें तबाह हो जाती हैं। साथ ही, उत्पादन कम हो जाता है अथवा कई रोग व कीट लग जाते हैं। साथ ही, फसलों में होने वाली इन दिक्कतों के पीछे की एक बड़ी वजह उसमें उपस्थित पोषक तत्वों की कमी भी हो सकती है। इसलिए आज हम आपको इस लेख में फसल के लिए आवश्यक कुछ ऐसे ही पोषक तत्वों के विषय में बताएंगे, जिन पर पौधों की उन्नति व विकास निर्भर करता है।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि जिस प्रकार से एक मानव शरीर को पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार से पौधों को भी अपने विकास के लिए विभिन्न पोषक तत्वों की जरूरत होती है। इन पोषक तत्वों की वजह से पौधे अपना विकास, प्रजनन एवं कई तरह की जीवाणु क्रियाओं को कर पाते हैं। यदि ये पोषक तत्व पौधों को वक्त से न मिलें तो इससे उनका विकास रुक जाता है।

इन पोषक तत्वों में विशेष तौर पर ऑक्सीजन, पोटाश, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, कार्बन और हाइड्रोजन इत्यादि शम्मिलित हैं। बतादें, कि इन पोषक तत्वों के अभाव का असर फसल की उपज पर पड़ता है। यदि पौधों में इनकी मात्रा में कमी होने पर कृषकों को भरपूर उत्पादन नहीं मिल पाता है। ऐसी स्थिति में आज हम आपको फसलों के लिए ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण पोषक तत्वों के विषय में जानकारी देंगे, जो कि पौधों के लिए बेहद आवश्यक हैं।

पोषक तत्वों की कमी के लक्षण

फसलों में बोरान की कमी के लक्षण

फसल में बोरान के अभाव की वजह से वर्धनशील हिस्से के पास की पत्तियों का रंग पीला हो जाता है। इसके अतिरिक्त कलियां सफेद अथवा हल्के सफेद मृत ऊतक की भांति नजर आती है।

फसलों में सल्फर/गंधक की कमी के लक्षण

सल्फर/गंधक की कमी के कारण फसल की पत्तियां, शिराओं समेत, गहरे हरे से पीले रंग में तब्दील हो जाती हैं। इसके बाद में यह सफेद हो जाती हैं। गंधक की कमी की वजह से सर्वप्रथम नवीन पत्तियां प्रभावित होती हैं।

फसलों में मैगनीज की कमी के लक्षण

मैगनीज पोषक तत्व की कमी की वजह से पत्तियों का रंग पीला-घूसर अथवा लाल घूसर हो जाता है। वहीं, इसकी शिराएं हरी हो जाती हैं। पत्तियों के किनारे एवं शिराओं का मध्य हिस्सा हरितिमाहीन हो जाता है। हरितिमाहीन पत्तियां अपने सामान्य आकार में ही रह जाती हैं।

फसलों में जिंक/जस्ता की कमी के लक्षण

जिंक/जस्ता की कमी की वजह से सामान्य तौर पर पत्तियों के शिराओं के मध्य हरितिमाहीन के लक्षण नजर आते हैं। बतादें, कि पत्तियों का रंग कांसा की भांति हो जाता है।

फसलों में मैग्नीशियम की कमी के लक्षण
फसल में यदि मैग्नीशियम की कमी हो जाए, तो पत्तियों के आगे के हिस्से का रंग गहरा हरा होकर शिराओं का बीच का हिस्सा सुनहरा पीला हो जाता है। आखिर में किनारे से अंदर की तरफ लाल-बैंगनी रंग के धब्बे बन जाते हैं।

फसलों में फास्फोरस की कमी के लक्षण
पौधों की पत्तियां फास्फोरस की कमी की वजह से छोटी रह जाती हैं। साथ ही, पौधो का रंग गुलाबी होकर गहरा हरा हो जाता है।

फसलों में कैल्शियम की कमी के लक्षण
कैल्शियम की कमी की वजह से सर्वप्रथम प्राथमिक पत्तियां प्रभावित होती हैं और विलंभ से निकलती हैं। साथ ही, शीर्ष कलियां बर्बाद हो जाती हैं। कैल्शियम की कमी के चलते मक्के की नोर्के चिपक जाती हैं।

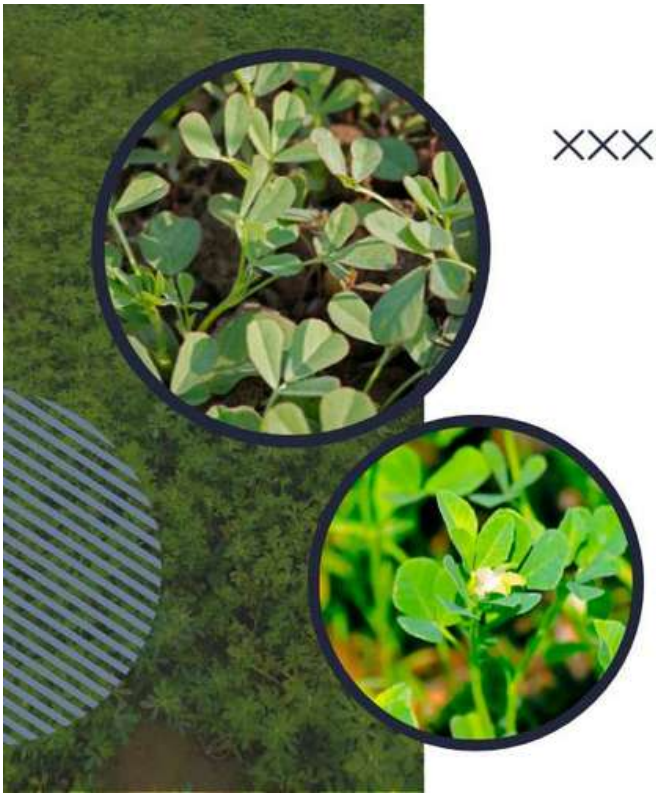

मेंथी की खेती

जानें मेथी की इन टॉप पांच उन्नत किस्मों के बारे में

मेथी की यह टॉप पांच उन्नत प्रजतियाँ पूसा कसूरी, आर.एस.टी 305, राजेंद्र क्रांति, ए.एफ.जी 2 एवं हिसार सोनाली प्रजाति किसानों को कम समय में ही प्रति एकड़ लगभग 6 क्विंटल तक उपज देती हैं। बाजार में इन किस्मों कीमत भी काफी अधिक है।मेथी एक प्रकार की पत्तेदार वाली फसल है, जिसका उत्पादन भारत के तकरीबन समस्त किसान अपने खेत में कर बेहतरीन व शानदार कमाई कर रहे हैं। दरअसल, मेथी हमारे शरीर के लिए बेहद लाभकारी होती है। क्योंकि, इसके अंदर प्रोटीन, सूक्ष्म तत्त्व विटामिन विघमान होते हैं। इसलिए बाजार में इसकी मांग सबसे ज्यादा होती है। ऐसी स्थिति में यदि आप मेथी की उन्नत किस्मों की खेती करते हैं, तो आप कम वक्त में भी शानदार उपज हांसिल कर सकते हैं। मेथी की ये टॉप पांच उन्नत किस्में पूसा कसूरी, आर.एस.टी 305, राजेंद्र क्रांति, ए.एफ.जी 2 और हिसार सोनाली प्रजाति हैं, जो प्रति एकड़ में तकरीबन 6 क्विंटल तक उत्पादन देने में सक्षम हैं।

मेथी की टॉप पांच उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं

मेथी की राजेंद्र क्रांति किस्म
मेथी की राजेंद्र क्रांति प्रजाति से किसान प्रति एकड़ तकरीबन 5 क्विंटल तक शानदार पैदावार हांसिल कर सकते हैं। मेथी की यह किस्म खेत में तकरीबन 120 दिनों के अंदर पककर तैयार हो जाती है।

मेथी की पूसा कसूरी किस्म
मेथी की पूसा कसूरी किस्म में फूल काफी विलंभ से आते हैं। किसान इस किस्म की एक बार बिजाई करने के बाद लगभग 5-6 बार उपज प्राप्त कर सकते हैं। मेथी की इस किस्म के दाने छोटे आकार के होते हैं। किसान पूसा कसूरी से प्रति एकड़ 2.5 से 2.8 क्विंटल उपज आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

मेथी की आर.एम.टी. 305 किस्म
मेथी की यह किस्म बेहद शीघ्रता से पककर तैयार हो जाती है। मेथी की आर.एम.टी. 305 किस्म में चूर्णिल फफूंद रोग और मूल गांठ सूत्रकृमि रोग नहीं लगते हैं। किसान इस प्रजाति से प्रति एकड़ लगभग 5.2 से 6 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं।

मेथी की ए.एफ.जी 2 किस्म
मेथी की इस प्रजाति के पत्ते बेहद चौड़े होते हैं। किसान मेथी की ए.एफ.जी 2 किस्म की एक बार बिजाई करने के पश्चात लगभग 3 बार कटाई कर उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। इस किस्म के दाने छोटे आकार में होते हैं। किसान मेथी की इस प्रजाति से प्रति एकड़ 7.2 से 8 क्विंटल पैदावार अर्जित कर सकते हैं।

किसान ने फसल का संरक्षण करने के लिए तैयार किया अनोखा स्ट्रक्चर

मध्य प्रदेश के एक किसान ने एक स्ट्रक्चर तैयार किया है, जिसके माध्यम वह स्वयं की फसल को आंधी-तूफान से संरक्षित कर सकता है। सिर्फ इतना ही नहीं इस स्ट्रक्चर पर ओले एवं पाले का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। क्षेत्र के बाकी कृषक भी इस स्ट्रक्चर को खूब पसंद कर रहे हैं।

एक कहावत है, कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। ये कहावत मध्य प्रदेश के सागर के युवा किसान आकाश चौरसिया पर पूर्णतय फिट बैठती है। उन्होंने अपनी फसल को मौसम की मार से संरक्षण के लिए एक अद्भुत फार्मूला इजात कर डाला है। समीपवर्ती क्षेत्र के किसान भी उनकी इस तरकीब को खूब पसंद किया जा रहा है। साथ ही, उनसे इस बारे में प्रशिक्षण लेने भी पहुंच रहे हैं। इस युवा किसान के द्वारा खोजे गए फार्मूले की वजह से किसी भी फसल को तेज आंधी, गर्मी और सर्दी से संरक्षित किया जा सकता है। दरअसल, आकाश चौरसिया जैविक खेती करते हैं। क्षेत्र में उनको किसान हित में अपने नवाचारों के लिए जाना जाता है। वह खेती को और अच्छा बनाने के लिए कुछ न कुछ नया करते ही रहते हैं।

फसलों का संरक्षण करने हेतु अनोखा स्ट्रक्चर

आकाश चौरसिया ने अपनी फसलों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने अपने खेत में एक स्ट्रक्चर तैयार किया है, जिसमें उन्होंने एक निर्धारित फासले और ऊंचाई पर अपने खेत पर बांस एवं घास का ढांचा तैयार किया है। सर्दी के मौसम में कोहरे की अधिकता बढ़ने से फसलों पर पाला लगने की आशंका भी काफी बढ़ जाती है। परंतु, अगर आप इस स्ट्रक्चर को अपने खेत में बनाते हैं, तो आपकी फसल हवा में लगभग 12 फीट ऊपर अटक जाती है। ऐसी स्थिति में यदि आंधी आती है, तो यह स्ट्रक्चर उसे हानि नहीं पहुंचाता है। इस स्ट्रक्चर पर ओलावृष्टि का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि, ओले घास में अटक जातें हैं। जो कि बाद में पिघलकर पानी के तौर पर फसल के लिए फायदेमंद होते हैं।

स्ट्रक्चर तैयार करने में कितना खर्चा आया

आकाश चौरसिया का कहना है, कि इस स्ट्रक्चर को तैयार करने में न्यूनतम 50 हजार रुपये खर्च होते हैं। परंतु, एक बार तैयार होने के पश्चात यह स्ट्रक्चर 6 वर्ष तक चल सकता है। उसके बाद फिर मिट्टी में मिल जाता है। स्ट्रक्चर बनाने के स्थान पर, वहां दो प्रकार की फसलें उत्पादित की जा सकती हैं। एक, जमीन पर फसल की पैदावार की जा सकती है और दूसरा, इस स्ट्रक्चर पर विंटर की फसलें चढ़ा के पैदावार की जा सकती है। इस स्ट्रक्चर को अपने खेत में तैयार करने के उपरांत किसान एक एकड़ भूमि से डेढ़ लाख रुपये तक की आमदनी सुगमता से कर सकते हैं।

नि:शुल्क ट्रेनिंग देते हैं आकाश चौरसिया

आकाश चौरसिया इस स्ट्रक्चर को तैयार करने का नि:शुल्क प्रशिक्षण भी देते हैं, जिससे कि अन्य किसान भी इसका लाभ उठा सकें। वह बताते हैं, कि दूर-दूर से किसान उन तक इसको बनाने का प्रशिक्षण लेने आते हैं। आकाश चौरसिया सागर के संजय नगर के निवासी हैं, जहां उन्होंने एक ढाई एकड़ भूमि में इस स्ट्रक्चर को तैयार कर रखा है। उनके पास कपूरिया गांव में भी फार्म हाउस है, जहां वे बाकी कृषकों को भी इस स्ट्रक्चर का प्रशिक्षण देते हैं।

FIELDKING

Equipment that are Built Tough

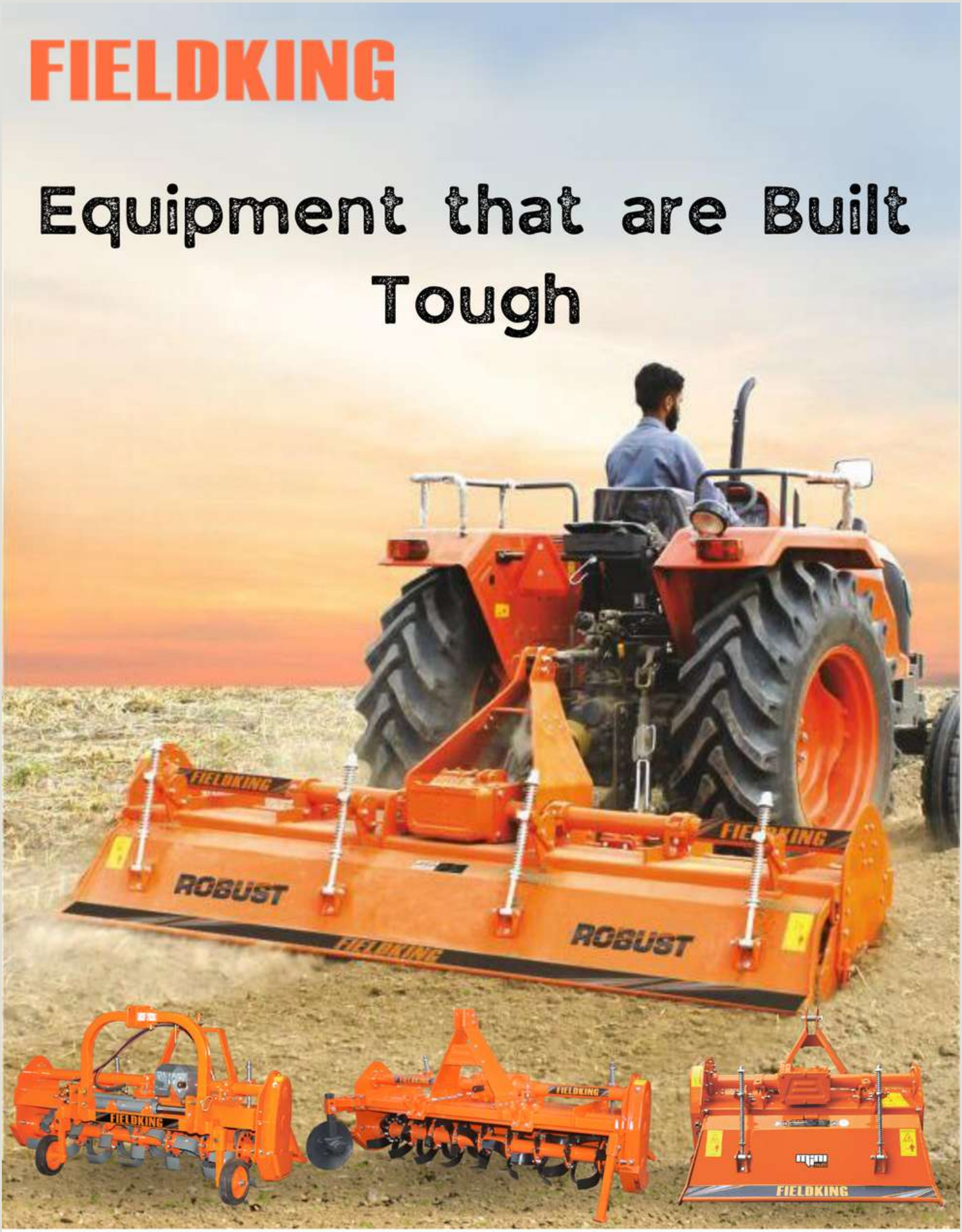

Add: Plot No.235, Sec-3, HSIIDC,
Karnal -132001 (Haryana), India

www.fieldking.com

Become a Dealer : +91 9254016570

+91 184 7156665 / 66

सामान्य लेख

लाल प्याज की भारी मात्रा में आवक

इस राज्य की मंडियों में लाल प्याज भारी मात्रा में आवक से जाम

आपकी जानकारी के बतादें, कि इस साल बारिश के अभाव की वजह से लाल प्याज की आवक विलंभ से हो रही है। इसकी रोपाई विलंभ से हुई थी, क्योंकि राज्य के ज्यादातर हिस्सों में मॉनसून की वर्षा काफी विलंभ से शुरू हुई थी। किसानों को यह आशा है, कि आने वाले समय में बाजार में नया प्याज भरपूर मात्रा में आने तक प्याज की कीमतें स्थिर रहेंगी। बतादें कि देश के महाराष्ट्र राज्य में वाशिम जिला स्थित करंजाड उपबाजार में प्याज की शानदार आवक हो रही है। बतादें, कि लगभग एक हजार वाहनों से करीब 19 हजार 500 क्विंटल ग्रीष्मकालीन लाल प्याज की आवक हुई। लाल प्याज को ग्रीष्मकालीन प्याज के मुकाबले में ज्यादा कीमत मिली है।

बाजार समिति के सभापति मनीषा पगार और सचिव संतोष गायकवाड के मुताबिक ग्रीष्मकालीन प्याज को सबसे ज्यादा 3300 से 3695 रुपये प्रति क्विंटल एवं औसत भाव 3000 रुपये प्रति क्विंटल मिला है। उसके मुकाबले में लाल प्याज को अधिकतम 4150 रुपये और औसतन 3600 रुपये प्रति क्विंटल का मूल्य मिला। दिवाली के पंद्रह दिन के अवकाश के पश्चात सोमवार को प्याज बाजार खुलने के बाद से ही प्याज की बेहतरीन आवक हो रही है। ग्रीष्मकालीन प्याज का मौसम अपने आखिरी चरण में है। साथ ही, आशा है कि आगामी समय में प्याज की कीमतें स्थिर रहेंगी।

लाल प्याज की आवक में देरी का कारण

इस वर्ष मौसम की बेरुखी मतलब कि बारिश के अभाव की वजह से लाल प्याज की आवक विलंभ से हो रही है। दरअसल, इसकी रोपाई काफी विलंभ से हुई थी। क्योंकि, राज्य के ज्यादातर हिस्सों में मॉनसून की वर्षा काफी विलंभ से हुई थी। किसानों को आशा है, कि आगामी समय में बाजार में नवीन प्याज भरपूर मात्रा में आने तक प्याज की कीमतें नियंत्रित रहेंगी। दिवाली से पूर्व प्याज की कीमतें 5,000 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच चुकी थीं। यही वजह थी, कि बाजार में केवल ग्रीष्मकालीन प्याज था, नया प्याज आया ही नहीं था। खरीफ सीजन वाले लाल प्याज की आवक शुरू हो गई है। इससे कीमत स्थिर हो गई है।

सरकार कृषकों की सहायता के लिए क्यों नहीं आती

हालांकि, अतीत में, हजारों कृषकों ने अपना प्याज सस्ती कीमतों पर बेचा है। प्याज उत्पादक किसान संघ के पदाधिकारियों ने प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा है, कि मूल्य वृद्धि का लाभ किसानों से अधिक व्यापारियों को हो रहा है। पूर्व में जब किसान 200 रुपये क्विंटल प्याज बेच रहे थे, तब सरकार सहायता के लिए सामने नहीं आई। अब जब कीमतें थोड़ी ठीक हुई तो दाम गिराने आ गई। इस प्रकार के रवैये से कृषकों में गुस्सा है। काफी समय तक राज्य के कृषकों ने उत्पादन लागत से कम भाव पर प्याज बेचा है। तब सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिए थी।

मंडी समिति ने कृषकों से क्या अपील की है

फिलहाल, दिवाली के पश्चात मंडियों में प्याज की आवक इतनी ज्यादा हो रही है, कि उससे भरे वाहनों की भीड़ रोड पर जाम लगा रही है। करंजाड उपमंडी परिसर में क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में प्याज की आवक हो रही है। सचिव संतोष गायकवाड, अरुण अहिरे ने अपील करी है, कि किसान माल छांटकर माल बेचें, नीलामी के उपरांत संबंधित व्यापारियों से नकद भुगतान लें। वाहन पार्क करने के दौरान किसान बाजार समिति प्रशासन का सहयोग करें।

सुप्रीम कोर्ट – पराली जलाने वाले किसानों से एमएसपी पर नहीं खरीदी जाएगी फसल

जैसा कि आप सब जानते हैं, कि कोर्ट के आदेश के बावजूद भी पंजाब में पराली जलना बंद न होने के चलते सुप्रीम कोर्ट ने काफी नाराजगी व्यक्त की है। कोर्ट ने कहा है, कि जो कृषक पराली जला रहे हैं, उन्हें कोई आर्थिक फायदा क्यों मिलना चाहिए, जिन्होंने पराली जलाई है और रेड फ्लैग हैं, उन पर एफआइआर दर्ज होने एवं जुर्माना लगाने के अतिरिक्त ऐसे किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य के फायदों से वंचित किया जाना चाहिए। सरकार को कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर झटका लगे।

सरकारें एक दूसरे पर आरोप मढ़ना बंद करें – SC

कोर्ट ने पराली जलने से रोकने में पंजाब सरकार के रवैये पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जब हरियाणा कर सकता है, तो पंजाब क्यों नहीं कर सकता। कोर्ट ने पंजाब सरकार से कहा है, कि वह अगली तारीख पर बताए कि उसने पराली जलाने पर कितने कृषकों पर जुर्माना लगाया और उसमें से कितना वसूला गया। कोर्ट ने फिर कहा कि इस मुद्दे पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। एक–दूसरे पर आरोप मढ़ने अथवा एक की दूसरे से तुलना नहीं की जानी चाहिए। केंद्र और राज्य को राजनीति भूल कर दीर्घकालिक हल ढूंढना चाहिए। ये टिप्पणियां, सुझाव और आदेश न्यायमूर्ति श्री संजय किशन कौल और श्री सुधांशु धूलिया की पीठ ने दिल्ली एनसीआर में वायु प्रदूषण के मामले पर सुनवाई के दौरान दिये।

पंजाब ने अपनी और से क्या कहा

पंजाब ने कहा है, कि पूर्व की तुलना में पराली जलना काफी कम हुआ है। 984 एफआइआर दर्ज की गईं हैं। दो करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। खेत में पराली जलना रोकने के लिए उड़न दस्ते तैयार किए गए हैं। परंतु, लोग उन्हें पहुंचने नहीं देते, रास्ता बाधित किया जाता है। कानून व्यवस्था की भी समस्या हो रही है। इस पर पीठ ने कहा है, कि आदेश में एसएचओ को जिम्मेदार बनाया गया है। आप कानून व्यवस्था की बात नहीं कह सकते। इस पर केंद्र सरकार की तरफ से पेश अटार्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने केंद्र की स्टेटस रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि पंजाब ने सिर्फ 6621 पर्यावरण क्षति पूर्ति लगाई हैं। पंजाब में 3415 चालान हुए और 86.8 लाख रूपये का जुर्माना भी लगाया गया और 473 एफआइआर दर्ज हुईं हैं।

इस राज्य में फसल पर ड्रोन से छिड़काव व निगरानी बिल्कुल मुफ्त में की जाएगी

झारखंड में फसलों की निगरानी के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग किया जाएगा। इससे फसलों की सुरक्षा के साथ–साथ किसानों के समय की बचत होगी। इसके लिए कृषि विभाग की ओर से प्रस्ताव तैयार किया गया है और कमेटी को प्रस्ताव भेजा गया है। बता दें कि राज्य के 167 सेंटर से किसानों को ड्रोन की मुफ्त सेवा मिलेगी। झारखंड राज्य में ड्रोन के माध्यम से फसल एवं पौधों का संरक्षण किया जाएगा। ड्रोन से फसलों एवं पौधों का बचाव करने के लिए दवा का स्प्रे एवं सर्वेक्षण का काम किया जाएगा। इसके लिए कृषि विभाग की तरफ से प्रस्ताव तैयार किया गया है। इसमें कीटनाशक दवा एवं संबंधित कार्य के लिए उपकरण खरीदा जाएगा। इसके लिए संबंधित समिति को प्रस्ताव भेजा गया है।

इस तरह की योजना पहले से ही चल रही थी

बतादें, कि छत्तीसगढ़ में इस प्रकार की योजना पहले से चल रही थी। विगत कुछ वर्षों से इस योजना पर विभाग की तरफ से ध्यान नहीं दिया जा रहा था। जब राज्य में निरंतर दो वर्षों से कम वर्षा होने की वजह से बहुत से प्रखंडों में सुखाड़ की स्थिति पैदा हो गई। विलंभ से बारिश होने पर किसानों ने धान की विलंभ से ही रोपाई की है। विभाग द्वारा फसल क्षति को लेकर जमीन आंकलन कराया गया और इसमें फसल हानि के कारणों का पता किया गया, तब समय पर कीटनाशक दवा का छिड़काव नहीं होने तथा बाकी रोगों से फसल के खराब होने की भी जानकारी मिली। इसके पश्चात फसलों का संरक्षण करने के लिए ड्रोन से दवा छिड़काव करने एवं सर्वेक्षण का कार्य करने के लिए जाने का प्रस्ताव तैयार किया गया है।

छत्तीसगढ़ में लगभग 167 पौध संरक्षण केंद्र हैं

राज्य में समकुल 167 प्लांट प्रोटेक्शन सेंटर पहले से स्थापित हैं। प्रत्येक केंद्र में तीन पद सृजित हैं, जिसमें कनीय प्लांट प्रोटेक्शन अफसर समेत अन्य के पद शम्मिलित है। परंतु, केंद्र पर कर्मियों की कमी है। इसके लिए अब आउटसोर्स के माध्यम से कर्मियों को बहाल किए जाने की योजना निर्मित की जा रही है। ड्रोन समेत अन्य उपकरण की खरीदारी सरकार की तरफ से की जा रही है। हालांकि, कितने ड्रोन खरीदे जाएं, इस पर वर्तमान में विचार–विमर्श चल रहा है। इसके पश्चात आउटसोर्स कर्मियों को ड्रोन चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

किसानों को यह सुविधा पूर्णतय मुफ्त में प्रदान की जाऐगी

बतादें, कि इस योजना में कुल 32 करोड़ रुपये खर्च होने वाले हैं। हालांकि, यह खर्चा बढ़ भी सकता है। ड्रोन की खरीदारी एवं प्रशिक्षण के पश्चात प्लांट प्रोटेक्शन केंद्र पर कोई भी किसान अपने खेतों में स्प्रे के लिए आवेदन देगा। इसके बाद सेंटर से ड्रोन ले जाकर किसान के खेतों में छिड़काव का कार्य किया जाएगा। यह सेवा पूर्ण रूप से नि:शुल्क मुहैय्या कराई जाएगी। विभाग की तरफ से फसल एवं पौधे के पोषण के लिए दवा व कीटनाशक दवा के साथ–साथ बाकी की खरीदारी भी विभाग की तरफ से की जा रही है।

सरकारी नीतियां

ओडिशा से काजू की पहली खेप बांग्लादेश को APEDA के सहयोग से निर्यात की गई

भारत से बांग्लादेश निर्यात की गई काजू की प्रथम खेप इसलिए भी काफी अहम है, क्योंकि यह राज्य की महिला शक्ति को दर्शाती है। क्योंकि निर्यात करने हेतु जो काजू ली गई है, वह पैशन गॉरमेट से प्राप्त गुणवत्ता काजू है, जिसका संचालन एक प्रगतिशील महिला उद्यमी करती है।कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) की मदद से ओडिशा ने काजू निर्यात के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता प्राप्त की है। राज्य ने पहली बार काजू की खेप को बांग्लादेश भेजा है। ओडिशा से काजू का निर्यात करने में एपीडा ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ओडिशा की ओर से बांग्लादेश भेजे गए काजू की प्रथम खेप में प्रीमियम गुणवत्ता वाले काजू हैं, जो कि 2 मीट्रिक टन की मात्रा तक हैं। इसको पश्चिम बंगाल स्थित एक्सपोर्टर पाफ ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड ने निर्यात किया है। ऐसा माना जा रहा है, कि यह महत्वपूर्ण कदम न सिर्फ दोनों देशों के मध्य आर्थिक संबंधों को सशक्त करता है बल्कि ओडिशा में कृषि क्षेत्र के लिए नवीन रास्ते भी खोलने के लिए सहायक साबित होगा।

काजू की पहली खेप महिला शक्ति को दर्शाती है

बांग्लादेश को भेजी गई काजू की पहली खेप इसलिए भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह राज्य की महिला शक्ति को दिखाती है। निर्यात के लिए जो काजू ली गई है वह पैशन गॉरमेट से प्राप्त क्वालिटी काजू है, जिसका संचालन एक प्रगतिशील महिला उद्यमी करती है। बतादें कि इस पहल से राज्य में महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलेगा और उनके आर्थिक स्थिति को सुधारेगी। इससे प्रदेश के महिलाओं की उन्नति होगी। इस अवसर को ऐतिहासिक बनाने के लिए राष्ट्रीय काजू दिवस मनाने हेतु एपीडा ने ओडिशा सरकार के सहयोग से, एक निर्यात–उन्मुख क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया है।

भारत से बेहतरीन निर्यात कड़ी बनाने की कवायद

बतादें, कि इस कार्यक्रम को इस प्रकार से डिजाइन किया गया है, कि किसान उत्पादक संगठनों एवं किसान उत्पादक कंपनियों को कृषि निर्यात के क्षेत्र में उद्यम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। उन्हें एक बेहतरीन एक्सपोर्टर बनाया जा सके और एक चेन से बिचौलियों को समाप्त करना इसका उद्देश्य है। ताकि किसानों की आय को बढ़ाया जा सके। बांग्लादेश भेजे गए शिपमेंट को एपीडा के अध्यक्ष अभिषेक देव सहित बाकी अधिकारियों ने कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग, सरकार की मौजूदगी में हरी झंडी दिखाई गई।

काजू की पहली खेप ओडिशा से निर्यात होने पर शुभकामनाएं

ओडिशा की स्थानीय वेबसाइट के अनुसार, एपीडा के अध्यक्ष अभिषेक देव ने अपने संबोधन में काजू दिवस पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संपूर्ण भारत से काजू के निर्यात में वृद्धि हो रही एवं इसकी सराहना भी की है। साथ ही, उन्होंने ओडिशा से हो रहे काजू निर्यात के लिए बधाई दी। कृषि विभाग के प्रधान सचिव अरबिंद पाधी ने प्रदेश की विभिन्न संभावनाओं एवं उत्पादन शक्ति के विषय में विस्तार से चर्चा की है। एमएसएमई विभाग के प्रमुख सचिव सास्वत मिश्रा ने ओडिशा से निर्यात की गति के लिए उपलब्ध विशाल अवसर और संभावनाओं के विषय में चर्चा की है। उन्होंने प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर सामान्य सुविधा केंद्रों के जरिए से उद्यमियों को मुहैय्या कराई गई विभिन्न सुविधाओं के विषय में चर्चा की है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए एपीडा एवं बाकी सुविधा एजेंसियों द्वारा की जा रही कोशिशों की सराहना की है।

काजू अन्य देशों में भी भेजने की तैयारी

पाफ ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक सुब्रत घोष ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के विषय में उत्साह जाहिर करते हुए कहा, "यह सफल शिपमेंट न सिर्फ ओडिशा में काजू उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि को दर्शाती है, बल्कि भारत एवं बांग्लादेश के मध्य कृषि क्षेत्र में विकास और सहयोग की क्षमता को भी दर्शाती है। साथ ही, कहा कि अब ओडिशा से काजू की खेप बहरीन एवं कतर समेत कुछ बाकी देशों में भेजने की योजना तैयार की जा रही है।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

Wholly owned by Cooperatives

सरकार द्वारा गेंहू की इस किस्म के बीज पर 50% प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है

बीते साल भी विभिन्न क्षेत्रों में करण वन्दना की बिजाई की गई थी। इस किस्म को साल 2019 में जारी एवं अधिसूचित किया गया था। करण वंदना (DBW 187) पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, असम और पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में सिंचित मौसम में बिजाई की जाने वाली नवीनतम गेहूं किस्म है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि यह रवी का मौसम चल रहा है। किसान अपनी फसलों की बिजाई में काफी व्यस्त हैं। विशेषकर अब किसान तीव्रता से गेहूं की बुआई कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में बाजार में गेहूं के बीज काफी महंगे बिक रहे हैं। यदि आपको इसका बीज अनुदानित दर पर चाहिए, तो आप अपने समीपवर्ती प्रखंड कृषि कार्यालय से हांसिल कर सकते हैं। दरअसल यह सस्ता होने के साथ–साथ गुणवत्ता का भी है। गेहूं की इस किस्म का नाम करण वंदना है। करण वंदना (DBW 187) पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, असम और पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में बोई जाने वाली नवीनतम सिंचित गेहूं की किस्म है। इन क्षेत्रों में गेहूं की वर्तमानित किस्मों जैसे एचडी 2967, के 0307, एचडी 2733, के 1006 और डीबीडब्ल्यू 39 के मुकाबले में करण वंदना (डीबीडब्ल्यू 187) किस्म का उत्पादन काफी ज्यादा है।

गेंहू की करण वंदना किस्म की विशेषता क्या है

बतादें, कि विगत वर्ष भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में करण वंदना की बिजाई की गई थी। इस किस्म को साल 2019 में जारी एवं अधिसूचित किया गया था। करण वंदना (DBW 187) पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, असम और पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में सिंचित मौसम में बोई जाने वाली नवीनतम गेहूं किस्म है। इसमें पत्ती झुलसा एवं अस्वास्थ्यकर स्थिति जैसी महत्वपूर्ण बीमारियों के लिए शानदार प्रतिरोधक क्षमता है। करण वंदना में बिजाई के 77 दिन पश्चात फूल आने लगते हैं। साथ ही, 120 दिन के उपरांत फसल पककर तैयार हो जाती है।

यह किस्म 75 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्रदान करती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसका उत्पादन तकरीबन 75 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं औसत उत्पादन करीब 63.1 क्विंटल है। सामान्यतः गेहूं में प्रोटीन की मात्रा 10 से 12 फीसद और लौह की मात्रा 30 से 40 प्रतिशत होती है। परंतु, इस किस्म में 12 फीसद से ज्यादा प्रोटीन और 42 प्रतिशत से ज्यादा आयरन की मात्रा पाई गई है।

इस किस्म में विभिन्न बीमारियों से लड़ने की सामर्थ्य है

सामान्य रूप से धान में 'ब्लास्ट' नामक बीमारी ज्यादा देखने को मिलती है। कुछ वर्ष पूर्व यह बीमारी बांग्लादेश में गेहूं की फसल में देखी गई थी। तब से इस चुनौती को मन्देनजर रखते हुए गेहूं की इस किस्म को मुख्य रूप से पूर्वोत्तर की परिस्थितियों के अनुरूप तैयार किया गया है। इसको तैयार करने के लिए शोध कार्य शुरू हुआ, जिसके नतीजतन 'करण वन्दना' को तैयार किया गया। यह वर्तमानित किस्मों HD-2733, K-1006, DBW-39, HD-2967 और K-0307 की अपेक्षा में ज्यादा उत्पादन देता है, जो कि अधिकतर बोई जा रही हैं।

गेंहू की इस किस्म पर 50% फीसद अनुदान प्रदान किया जा रहा है

गेहूं की इस किस्म पर 50 प्रतिशत अनुदान मिल रहा है। बाजार में इसकी कीमत 42 रुपये प्रति किलो है। यदि आप इसे ब्लॉक से अनुदान के आधार पर खरीदते हैं, तो इसकी कीमत 22 रुपये प्रति किलोग्राम है। एक बैग की कीमत 880 रुपये है। इस पर लगभग 50 प्रतिशत अनुदान मिल रहा है। साथ ही, कहा है, कि इस गेहूं की प्रथम पलटन बिजाई के 22 दिन पश्चात करनी चाहिए। यह गेहूं 120 दिन के समयांतराल में पककर तैयार हो जाता है।

ये किसान पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ नहीं उठा पाऐंगे

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अन्तर्गत प्रति वर्ष कृषक भाइयों के खाते में 6000 रुपये भेजे जाते हैं। विगत दिनों कृषकों के खाते में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएम किसान सम्मान निधि योजना की 15वीं किस्त हस्तांतरित की थी। इसका फायदा भारत भर के करोड़ो कृषक भाइयों को मिला था। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत भारत भर के करोड़ों किसान भाइयों को हर साल 6 हजार रुपये भेजे जाते हैं। ये धनराशि किसान भाइयों के खातों में तीन किस्तों में आर्थिक मदद प्रदान की जाती है। मगर ऐसे बहुत सारे कृषक भी हैं, जिनको अभी तक इस किस्त का फायदा हांसिल नहीं हुआ है।

पीएम किसान योजना के लिए लाभार्थी की पात्रता योजना का फायदा उठाने वाले किसान को भारत का नागरिक होना चाहिए। किसान को भूमि का स्वामित्व होना आवश्यक है। किसान की भूमि का समकुल क्षेत्रफल 2 हेक्टेयर से ज्यादा नहीं होना चाहिए। वहीं, किसान का परिवार किसी सरकारी नौकरी में नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त किसान के परिवार की सालाना आमदनी दो लाख रुपये से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

इन कृषकों को नहीं नहीं मिल पाएगा फायदा

पीएम किसान सम्मान निधि की 15वीं किस्त का फायदा उन कृषकों को नहीं मिला है, जिन्होंने इस योजना के लिए आवेदन नहीं किया था। बतादें, कि कृषकों का आवेदन स्वीकार नहीं किया गया था। बतादें, कि कृषक भाइयों ने योजना के पात्रता मानदंडों को पूर्ण नहीं किया था। इसके अतिरिक्त जिन कृषकों ने योजना की शर्तों का उल्लंघन किया था, उन्हें योजना का लाभ नहीं मिल पाया है। अगर कोई भी किसान भाई योजना का फायदा नहीं उठा पा रहा है, तो उसे योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर खुद का नाम लाभार्थी सूची में देख लेना चाहिए। अगर किसान का नाम लाभार्थी सूची में शम्मिलित नहीं है, तो उसे योजना के लिए आवेदन करना चाहिए। आवेदन पत्र योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर मौजूद है।

इस योजना के तहत फसलों की ग्रेडिंग-पैकेजिंग हेतु मिलेगी सहायता

खेती किसानी के बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहन देने के लिए 24 नवंबर को हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के पीटरहॉफ में राज्य स्तरीय कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है। कृषि मंत्री प्रो. चंद्र कुमार की अध्यक्षता में होने वाले इस कॉन्क्लेव में कृषि–बागवानी से संबंधित 160 से ज्यादा विभिन्न हितधारक भाग लेंगे। भारत के किसानों को आर्थिक तौर से सशक्त बनाने एवं उन्हें ग्रामीण उद्योग के साथ जोड़ने के लिए केंद्र सरकार "कृषि अवसंरचना कोष योजना" (AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND SCHEME) चला रही है। इसी योजना के अंतर्गत कृषि के बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहन देने के लिए शुक्रवार (24 नवंबर) को हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के पीटरहॉफ में राज्य स्तरीय कॉन्क्लेव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। कृषि मंत्री प्रो. चंद्र कुमार की अध्यक्षता में होने वाले इस कॉन्क्लेव में कृषि–बागवानी क्षेत्र से संबंधित 160 से ज्यादा विभिन्न हितधारक हिस्सा लेंगे।

बतादें, कि इस कॉन्क्लेव के चलते विभिन्न हितधारकों को भारत सरकार के कृषि अवसंरचना कोष के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी। कृषि सचिव हिमाचल प्रदेश सी पालरासू ने कहा है, कि केंद्र सरकार की तरफ से भारत भर में फार्मगेट और एकत्रिकरण बिंदुओं, प्राथमिक कृषि सहकारी समीतियों, किसान–उत्पादक संगठनों, कृषि उद्यमियों, स्टार्टअप इत्यादि पर कृषि अवसंरचना परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए भारत सरकार द्वारा 1 लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है।

कृषि सचिव ने इसको लेकर क्या कहा है

कृषि सचिव ने कहा है, कि इस कोष के अंतर्गत कोल्डचेन इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के साथ फार्मगेट इन्फ्रास्ट्रक्चर जिसमें खेतों में ही छंटाई, ग्रेडिंग और पैकेजिंग सुविधा स्थापित करने के लिए मदद प्रदान की जाएगी। इसके अतिरिक्त रसद एवं परिवहन के क्षेत्र में भी वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस कोष के लिए निजी संस्थाओं के साथ–साथ एफपीओ, पीएसीएस, स्वंय सहायता समूह, जेएलजी, सहकारी समितियों, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की सहकारी समितियों के संघ, एफपीओ के संघ और एसएचजी के संघ पात्र लाभार्थी होंगे। बतादें, कि इस कॉन्क्लेव में समस्त हितधारकों जिनमें कृषि व बागवानी विभाग, मार्केटिंग बोर्ड, नाबार्ड, एसएलवीसी और एलडीएम्स, बैंकों के प्रमुख, उद्योग विभाग, सीए, कृषि उद्यमी समेत अन्य हितधारकों को विशेष रूप से शम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया है। कॉन्क्लेव में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव तथा उनकी टीम भी प्रमुख तौर पर भाग लेगी।

कृषि अवसंरचना कोष से आप क्या समझते हैं

यह भारत सरकार द्वारा कृषि के बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहन देने के लिए जारी की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। यह परियोजना 2020-21 से 2032-33 तक जारी रहेगी। साथ ही, इसके अधीन प्रारंभिक 6 वर्ष में यानि 2026 तक ऋण वितरण का कार्य पूर्ण किया जाएगा। कृषि अवसंरचना कोष का मुख्य उद्देश्य कृषि उपज के एकत्रिकरण एवं विपणन के लिए बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाना है। भंडारण सुविधाओं का आधुनिकीकरण करके फसल कटाई के पश्चात होने वाली हानि को कम करना एवं किसानों की पैदावार को प्रभावी तौर से बाजारों तक पहुंचाने के लिए एक निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला की सुविधा प्रदान करना है। इस परियोजना के अंतर्गत निजी संस्थाओं के साथ–साथ एफपीओ, पीएसीएस, स्वंय सहायता समूह, जेएलजी, सहकारी समीतियों, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की सहकारी समीतियों के संघ, एफपीओ के संघ और एसएचजी के संघ पात्र लाभार्थी होंगे।

अब आप 10 वीं पास करके भी खाद बीज की दुकान खोल सकते हैं

केंद्र सरकार ने हटाई बाध्यता अब आप 10 वीं पास करके भी खाद बीज की दुकान खोल सकते हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 10वीं उत्तीर्ण युवाओं के लिए केंद्र सरकार ने एक विशेष पहल चालू की है। युवाओं को खाद बीज से संबंधित जानकरी प्रदान करने के लिए एक विशेष योजना तैयार की गई है। भारत सरकार ने खाद–बीज उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए नियमों में परिवर्तन करके रोजगार के अवसरों को बढ़ावा दिया है। वर्तमान में दसवीं पास युवाओं को भी खाद–बीज का व्यवसाय करने का अवसर हांसिल हो रहा है। इसके लिए सरकार ने 15 दिन का पाठ्यक्रम तैयार किया है, जिसे पूरा करने के पश्चात युवा खाद–बीज की दुकान खोल सकते हैं। कृषि क्षेत्र में स्नातक युवाओं के साथ–साथ 10वीं उत्तीर्ण युवाओं को भी इस कदम से खाद–बीज व्यवसाय में प्रवेश का मौका मिलेगा। यह कदम बगैर किसी बड़ी चुनौती के युवाओं को रोजगार के अवसर नहीं देगा। खाद–बीज क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रदान की गई सुविधा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने का शानदार माध्यम साबित हो सकता है। कृषि क्षेत्र में नवीन अवसर उत्पन्न कर सकती है।

किसान भाई निवेश से ज्यादा आय अर्जित करें

वर्तमान में खाद–बीज व्यवसाय में कम निवेश करके ज्यादा धनराशि कमाने का तरीका पूर्णतय बदल गया है। वर्तमान में खाद–बीज व्यवसाय में प्रवेश करने के लिए लाइसेंस हांसिल करने हेतु नवीन नियम लागू हो गए हैं। व्यावसायिक योग्यता प्राप्त करने के लिए खाद–बीज केंद्र में 12500 रुपये का पंजीकरण शुल्क देना होगा। यह कोर्स पूर्ण करना बेहद अनिवार्य है, यदि कोई इसे पूरा नहीं करेगा तो उसे लाइसेंस नहीं मिलेगा। विशेषज्ञों का कहना है, कि यह कदम खाद–बीज व्यापारियों को ज्यादा अनुभवी बनाएगा, जिससे वे शानदार मार्केटिंग एवं उत्पादन तकनीक सीख सकेंगे। किसानों के अतिरिक्त व्यावसायिक उद्यमियों को इससे नवीन संभावनाएं मिलेंगी।

अब 10वीं उत्तीर्ण व्यक्ति खाद–बीज की दुकान खोल सकता है

कृषि और किसान कल्याण विभाग ने एक महत्वपूर्ण फैसला लिया है। वर्तमान में खाद–बीज की दुकान खोलने के लिए 10 वीं उत्तीर्ण होना ही जरूरी रहेगा। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए पहले कृषि में बीएससी अथवा कृषि में डिप्लोमा होना चाहिए था। वर्तमान में 10वीं पास लोग भी कीटनाशक व खाद–बीज का व्यापार कर सकते हैं। क्योंकि इस बाध्यता को पूर्णतय हटा दिया गया है। खाद–बीज के क्षेत्र में नवीन उम्मीदों की दिशा में यह फैसला एक महत्वपूर्ण कदम है।

किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए किसानों को क्या फायदा होता है

किसान भाई किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण हांसिल कर सकते हैं। इस कार्ड के माध्यम से किसान भाइयों को सस्ती दर पर कर्ज मिलता है। किसानों की सहायता के लिए सरकार की ओर से विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं, जिसमें से एक किसान क्रेडिट कार्ड भी है। कृषक भाई को इस कार्ड के माध्यम से बेहद कम ब्याज दर पर लोन मिलता है। किसान क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने वाले कृषकों की आयु कितनी होनी चाहिए। साथ ही, कौन-कौन से दस्तावेजों की आवश्यकता होती है। ये हम आपको इस खबर के माध्यम से बताएंगे। किसान क्रेडिट कार्ड से सस्ती ब्याज दरों पर तीन लाख रुपये तक का कर्ज सुगमता से मिल जाता है। इस लोन पर ब्याज दर 7 प्रतिशत से शुरू होती है। वहीं, समय पर लोन चुकाने वाले कृषकों को ब्याज दर में 3 फीसद तक की छूट प्रदान की जाती है। इस प्रकार किसान क्रेडिट कार्ड से लिए जाने वाले कर्ज पर सिर्फ 4 प्रतिशत की ब्याज दर देनी होती है।

किसान क्रेडिट कार्ड के लिए पात्रता

किसान क्रेडिट कार्ड का फायदा प्राप्त करने के लिए किसान की आयु 18 वर्ष से लेकर 75 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। किसान के समीप कम से कम 2 एकड़ कृषि जमीन होनी चाहिए। साथ ही, किसान भाइयों का बैंक खाता भी होना जरूरी है। किसान क्रेडिट कार्ड हेतु आवेदन करने के लिए किसान को संबंधित बैंक की शाखा में जाना आवश्यक है। किसान क्रेडिट कार्ड से किसान कृषि के कार्यों के लिए आवश्यक धनराशि हांसिल कर सकते हैं। इस कर्ज का इस्तेमाल किसान भाई खाद, बीज, कृषि मशीन, पशुपालन और मछली पालन आदि के लिए कर सकते हैं।

KCC बनवाने हेतु आवश्यक दस्तावेज

- पैन कार्ड
- आधार कार्ड
- राशन कार्ड
- वोटर आईडी
- बैंक खाते की जानकारी
- कृषि भूमि से जुड़े दस्तावेज

इस बार कौन होगा मध्य प्रदेश CM रेस का दावेदार?

नरेन्द्र सिंह तोमर

प्रहलाद पटेल

कैलाश विजयवर्गीय

रीति पाठक

netahub.com

NetaHub के साथ जुड़ें और आज ही अपनी सफलता की नई कहानी लिखें!

मोदी जी ने पीएम किसान सम्मान निधि की सहायता राशि दोगुनी करने का ऐलान किया

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार ने एक बड़ा निर्णय लिया है। दरअसल, किसानों को इस योजना में वार्षिक 6,000 रुपये तक प्रदान किए जाते हैं। साथ ही, वर्तमान में किस्त की इस धनराशि को दोगुना कर दिया गया है। चलिए ऐसे में जानते हैं, कि किन किसानों को पीएम किसान योजना का यह फायदा मिलेगा।

केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में एक काफी बड़ा बदलाव करने का ऐलान किया है। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत देश के किसानों की आर्थिक तौर पर मदद करने के लिए वार्षिक 6,000 रुपये तक देती हैं। परंतु, केंद्र सरकार ने हाल ही में राजस्थान के किसानों के लिए इस योजना की धनराशि में बढ़ोतरी कर 12,000 रुपये वार्षिक देने का वादा किया है। जानकारी के लिए बतादें, कि बीते कल मतलब कि 20 नवंबर, 2023 के दिन राजस्थान के हनुमानगढ़ में पीएम मोदी ने चुनावी जनसभा में कहा कि "राजस्थान बीजेपी ने किसानों से एमएसपी/MSP पर फसल खरीदने का निर्णय किया है। साथ ही, उन्हें बोनस भी प्रदान करेगी। राजस्थान बीजेपी ने किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से 12,000 रुपये तक देने का फैसला भी किया है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में कितने रुपए मिलेंगे

दरअसल, राजस्थान में आजकल सियासी सरगर्मियां चरम सीमा पर हैं। क्योंकि विधानसभा चुनाव पास आते जा रहे हैं। इसी कड़ी में पीएम मोदी ने सोमवार को राजस्थान राज्य का दौरा किया एवं किसानों के लिए विभिन्न घोषणाऐं की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने कृषकों को कर्ज में डुबो दिया। आगे उन्होंने कहा कि कपास की लाखों हेक्टेयर फसल जो कि बर्बाद हुई हैं, कांग्रेस को उसका जवाब देना पड़ेगा। साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि जिन्होंने किसान को ठगा है, उन्हें छोड़ा नहीं जाएगा। इसी क्रम में राजस्थान भाजपा ने निर्णय लिया है, कि राज्य के किसानों की फसल की MSP पर खरीद करेंगे। इसके साथ-साथ किसानों को बोनस भी प्रदान करेगी। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में मिलने वाली धनराशि को बढ़ाकर 12,000 रुपये तक कर दिया जाएगा।

किसानों को सस्ती खाद प्रदान करने हेतु सरकार करोड़ों खर्च कर रही है

राजस्थान की चुनावी रैली में पीएम मोदी ने यह भी कहा कि किसानों की सहायता के लिए सरकार सदैव उनके साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि कृषकों के लिए सस्ती खाद हेतु केंद्र सरकार के द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। जिससे कि किसान को सस्ती खाद प्राप्त हो सके एवं खाद के लिए उन्हें कहीं और न भटकना पड़े। उन्होंने आगे कहा कि विश्वभर में यूरिया की एक बोरी की कीमत तकरीबन 3,000 रुपये तक मिलती है। लेकिन, वहीं भारत में यूरिया की एक बोरी की कीमत सरकार के द्वारा 300 रुपये से भी कम भाव पर किसानों को मुहैय्या करवाई जाती हैं।

घरेलू ट्रैक्टर की बिक्री में 4 प्रतिशत कमी के साथ-साथ निर्यात में भी रिकॉर्ड गिरावट

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस वर्ष अक्टूबर माह में ट्रैक्टरों की बिक्री में काफी गिरावट दर्ज की गई है। भारत के दक्षिणी हिस्सों में इसका सर्वाधिक प्रभाव देखने को मिला है। जहां, कम बरसात एवं कम अनुदान की वजह से बिक्री काफी कम रही है। हालांकि, इस माह ट्रैक्टरों की बिक्री बढ़ने के आसार हैं।

अक्टूबर माह में घरेलू ट्रैक्टर की बिक्री में विगत वर्ष की तुलना में गिरावट दर्ज की गई है। दरअसल, अक्टूबर माह में ट्रैक्टरों की बिक्री 4 फीसद तक गिरी है। कुल मिलाकर, इस वर्ष अक्टूबर में 118,232 ट्रैक्टर की बिक्री हुई है। वहीं, विगत वर्ष ये तादात 123,525 थी। उद्योग विशेषज्ञों का कहना है, कि अनियमित मानसून और लंबे त्योहारी सीजन की वजह से इस बार विगत वर्ष की तुलना में अक्टूबर माह में बिक्री कम रही है। हालांकि, धनतेरस एवं दिवाली की खरीदारी की वजह से नवंबर में ट्रैक्टरों की ब्रिकी में तेजी देखने को मिली है। यह आशा है, कि नवंबर माह में ट्रैक्टरों की बिक्री अक्टूबर के मुकाबले में शानदार रहेगी।

ट्रैक्टरों की बिक्री में इस वजह से आई गिरावट

बिजनेस लाइन में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, देश की टॉप ट्रैक्टर निर्माता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अक्टूबर 2023 में 2 प्रतिशत की गिरावट के साथ 49,336 ट्रैक्टरों की सेल की. जबकि, एस्कॉर्ट्स कुबोटा की ट्रैक्टर बिक्री पिछले महीने 9 प्रतिशत गिरकर 12,642 यूनिट्स पर रही. ट्रैक्टरों की बिक्री में सबसे अच्छा प्रदर्शन उत्तरी क्षेत्रों का रहा. जहां इनकी सबसे ज्यादा सेल हुई. इसी तरह पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में भी सरकारी योजना के तहत मिलने वाली सब्सिडी के चलते सेल काफी हद तक अच्छी रही. जबकि, दक्षिणी क्षेत्रों में ट्रैक्टरों की सेल अच्छी नहीं रही।

ट्रैक्टर निर्यात में भी दर्ज की गई गिरावट

2023 अक्टूबर माह में 7,186 इकाइयों पर मासिक निर्यात जून 2020 के पश्चात सबसे कम रहा है। ट्रैक्टर का उत्पादन अक्टूबर माह में 94,438 इकाइयों पर था। वहीं, सितंबर माह में 90,688 एवं अक्टूबर 2022 में ये 86,856 इकाइयों पर था। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अप्रैल-अक्टूबर 2023 की अवधि के दौरान ट्रैक्टर निर्यात में 33 फीसद की सालाना गिरावट के साथ 7,470 इकाइयों की घटोतरी दर्ज की है। इसके साथ ही, ट्रैक्टर कंपनी एस्कॉर्ट्स के अनुसार, यूरोप में आई मंदी उनके निर्यात में घटोतरी की एक बड़ी वजह है। यूरोप उनके खास बाजारों में से एक है, ऐसी स्थिति में उनका निर्यात भी प्रभावित हुआ है।

दूसरी छमाही शानदार होने की संभावना – हिमंत सिक्का

महिंद्रा एंड महिंद्रा के कृषि उपकरण क्षेत्र के अध्यक्ष, हेमंत सिक्का ने बताया है, कि चालू वित्त वर्ष की द्वितीय छमाही शानदार होगी। क्योंकि, उच्च कुल खरीफ पैदावार, प्रमुख रबी फसलों के लिए उच्च एमएसपी और कृषि अर्थव्यवस्था को सरकार का समर्थन सकारात्मक भावनाओं को प्रेरित करेगा। किसान ट्रैक्टर की मांग का सहयोग कर रहे हैं। वहीं, ट्रैक्टर उद्योग चालू वित्त वर्ष को सपाट अथवा मामूली सकारात्मक विकास के साथ समाप्त करने की संभावना है। उन्होंने बताया है, कि निर्यात में किसी भी तरह का सुधार देखने की आशंका नहीं है। आगामी वर्ष के दौरान इसमें दोहरे अंकों के साथ गिरावट दर्ज की जाएगी। उन्होंने बताया है, कि चालू वित्त वर्ष के दौरान ट्रैक्टर निर्यात में 28 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। सामान्य से कम मानसून एवं उच्च आधार को लेकर चिंताओं की वजह नुवामा ने वित्त वर्ष 2024 के लिए एक सपाट संख्या का अंदाजा लगाया है।

इस राज्य में कृषि यंत्रों पर लॉटरी के जरिए अनुदान प्रदान किया जाएगा

बिहार राज्य में कृषकों की किस्मत लॉटरी द्वारा निर्धारित की जाएगी। कृषि यंत्र योजना के तहत कृषि यंत्रों की खरीद के लिए कृषकों को लॉटरी प्रक्रिया से गुजरना होगा। योजना के लिए आवेदकों की तादात ज्यादा होने की वजह से यह निर्णय लिया गया है।

बिहार के हजारों कृषकों को कृषि यंत्र मुहैय्या कराने के लिए राज्य सरकार कृषि यंत्र योजना का संचालन कर रही है, जिसके अंतर्गत कृषकों को अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस योजना के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि वर्तमान में समाप्त हो चुकी है। हालांकि, योजना का फायदा उठाने के लिए अब तक हजारों कृषक आवेदन कर चुके हैं। आवेदकों की तादात ज्यादा होने की वजह से अब राज्य सरकार ने निर्णय लिया है, कि लॉटरी के जरिए से परमिट निकाला जाएगा। इस संबंध में कृषि निदेशक ने पत्र भी जारी कर दिया है। पत्र के अनुसार, लॉटरी प्रक्रिया 27 से 30 नवंबर के मध्य की जाएगी, जिसके माध्यम से परमिट निकाला जाएगा।

स्वीकृति पत्र चयनित किसानों को ही दिया जाएगा

मीडिया खबरों के अनुसार, जिला स्तरीय कृषि यांत्रिकरण मेला का आयोजन दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह एवं जनवरी के दूसरे सप्ताह में होने की आशंका है। ऐसी स्थिति में प्राप्त आवेदनों की जांच मेले से पूर्व की जाएगी। साथ ही, जिन आवेदनों को स्वीकार किया जाएगा, वे किसान लॉटरी की प्रक्रिया में शम्मिलित हो पाएंगे। जिसके पश्चात चयनित किसान को स्वीकृति पत्र भी जारी किया जाएगा। कृषि निदेशक के निर्देशानुसार जिला कृषि पदाधिकारी की अध्यक्षता में सहायक निदेशक के लॉगिन आईडी से ऑनलाइन लॉटरी के जरिए से लक्ष्य के मुताबिक आवेदकों का चुनाव होगा। यह संपूर्ण प्रक्रिया डीएम अथवा उनके स्तर से प्राधिकृत किसी वरीय अधिकारी की मौजूदगी में होगी। इस दौरान जनपद के समस्त बीएओ, स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहेंगे।

इस समयावधि में कृषि यंत्र की खरीद करनी होगी

लॉटरी प्रक्रिया में चयनित किए गए कृषकों को हांसिल होने वाले स्वीकृति-पत्र की वैधता 15 दिनों की होगी। इसका अर्थ है, कि इस समयावधि में संबंधित किसान को यंत्र की खरीद करना अनिवार्य होगा। स्वीकृति-पत्र अर्जित होने के पश्चात आवेदक कृषि विभाग में पंजीकृत औद्योगिक विक्रेताओं से ही यंत्र की खरीद करेंगे। किसान कृषि मेलों अथवा बाजारों के बाहर स्वयं की पसंद के मुताबिक, यंत्र खरीद सकते हैं। विभाग ने स्पष्ट कर दिया है, कि उक्त योजना के अंतर्गत पात्र किसान कृषि यंत्रों के मूल्य से अनुदान धनराशि कम करके शेष धनराशि का भुगतान करके पर्याप्त विक्रेता से यंत्र खरीद सकेंगे। वहीं, अनुदान की धनराशि संबंधित किसान के खाते में हस्तांतरित की जाएगी।

जानें कौन-कौन से कृषि यंत्रों पर अनुदान मिल रहा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि यह सरकार की एक प्रमुख वित्तीय योजना है, जिसके अंतर्गत 108 कृषि यंत्रों पर सब्सिडी प्रदान की जा रही है। इनके अंतर्गत पैडी ट्रांसप्लांटर, मिनी दाल मिल, राइस मिल, रोटावेटर, पंपसेट, कल्टीवेटर, पावर स्प्रेयर, मैन्युअल कृषि यंत्र किट, पैडी थ्रेसर, रीपर, सीड ड्रिल, रीपर कम बाइंडर, सिंचाई पाइप, थ्रेसर, दो और चार डब्लू डी ट्रैक्टर सहित विभिन्न कृषि यंत्र शम्मिलित हैं।

कृषि अवसंरचना योजना

कृषि अवसंरचना योजना के तहत किसानों को 2 करोड़ तक लोन प्रदान किया जाता है

यदि आप भी एक कृषक हैं और आप एक लघु व्यवसाय शुरू करने की सोच रहे हैं, तो आप सरकार की AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND SCHEME का फायदा उठा सकते हैं। इस योजना के तहत किसान भाइयों को 2 करोड़ तक कर्जा दिया जाता है। सिर्फ इतना ही नहीं सरकार इस पर गारंटी भी देती है।भारत में किसानों के उत्थान के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य किसानों को आर्थिक मदद प्रदान करना है। जिससे कि देश के किसानों की स्थिति तब्दील हो सके। इसी कड़ी में केंद्र सरकार ने कृषि क्षेत्र के विकास के लिए एक नवीन पहल के तौर पर "कृषि अवसंरचना कोष योजना" (AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND SCHEME) का आरंभ किया है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को कोल्ड स्टोरेज, प्रोसेसिंग यूनिट्स, वेयरहाउस और पैकेजिंग यूनिट लगाने पर दो करोड़ रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त योजना के तहत ऋण लेने वाले कृषकों को सरकार गारंटी भी देती है।

कृषि अवसंरचना योजना

कृषि अवसंरचना कोष योजना के अंतर्गत इच्छुक लोगों को 2 करोड़ रुपये तक का बैंक कर्ज प्रदान किया जाता है। इस लोन की ब्याज दर पर सरकार तीन प्रतिशत की छूट भी प्रदान करती है। ब्याज में यह छूट लोन स्वीकृति होने के 7 साल तक रहती है। योजना के अंतर्गत 2 करोड़ रुपये तक के बैंक लोन पर गारंटी भी प्रदान की जाती है। जिसकी जिम्मेदारी माइक्रो एंड स्मॉल इंटरप्राइजेज फंड ट्रस्ट लेता है। इसके अतिरिक्त गारंटी फीस का भुगतान भी सरकार ही करती है। यानी आपको अपनी जेब से कोई धनराशि नहीं देनी पड़ेगी। बतादें, कि किसी अन्य योजना का फायदा लेते हुए भी आप इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

कृषि अवसंरचना कोष योजना से होने वाले लाभ व इसके लिए पात्र

कृषि अवसंरचना कोष योजना के अंतर्गत कृषि और संबंधित क्षेत्रों के तकरीबन समस्त कार्यों के लिए ऋण लिया जा सकता है। वास्तव में इस योजना के अंतर्गत खेती, उद्यानिकी, मत्स्य पालन और पशुपालन जैसे कार्यों के लिए आसानी से कर्जा लिया जा सकता है। मतलब कि इस योजना के अंतर्गत किसान सुगमता से खेती और नए उद्योग के लिए कर्जा ले सकते हैं। प्राथमिक कृषि साख समितियां, विपणन सहकारी समितियां, किसान उत्पादन संगठन (एफपीओ), स्वयं सहायता समूह, संयुक्त देयता समूह, बहुउद्देशीय सहकारी समितियां, कृषि उद्यमियों, स्टार्टअप और एग्रीगेशन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोवाइडर्स इत्यादि इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

भारत के जलाशयों में जल के स्तर की क्षमता में 70 प्रतिशत गिरावट

भारत के 150 प्रमुख जलाशयों में जल का स्तर क्षमता की 70 फीसद से नीचे चला गया है। वहीं, 14 राज्यों में भंडारण इस सप्ताह सामान्य स्तर से नीचे पहुँच गया है। आंकड़ों से यह ज्ञात हुआ है, कि जिन 14 राज्यों में जल स्तर सामान्य से नीचे है, उनमें आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में भंडारण चिंता का विषय है।मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, केंद्रीय जल आयोग के लाइव स्टोरेज पर साप्ताहिक बुलेटिन के मुताबिक, विगत गुरुवार (9 नवंबर) तक प्रमुख जलाशयों में भंडारण 124.124 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) या 178.784 बीसीएम की लाइव क्षमता का 69 फीसद था। यह स्तर विगत वर्ष के साथ-साथ पिछले 10 साल के औसत से भी कम है। विगत सप्ताह भंडारण क्षमता का 71 फीसदी था।अगस्त माह में -32 फीसद कम बारिश एवं मॉनसून के पश्चात कम भंडारण स्तर में कमी की वजह है। मौसम विभाग के मुताबिक, जिन 712 जनपदों से डेटा हांसिल हुआ है, उनमें से 64 प्रतिशत में बारिश नहीं हुई है अथवा कम हुई है। साथ ही, मॉनसून के पश्चात कम वर्ष और जलाशयों में जल का स्तर गिरने से रबी फसलों, विशेषकर चावल, सरसों, चना और गेंहू की पैदावार पर प्रभाव पड़ सकता है।

गुजरात राज्य की बात सबसे अलग है

आंकड़ों से जानकारी मिली है, कि जिन 14 राज्यों में जल स्तर सामान्य से नीचे है, उनमें से आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में भंडारण चिंता का विषय है। गुजरात एक मात्र ऐसा प्रदेश है, जिसके पास पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध है। साथ ही, भंडारण स्तर सामान्य से 31 फीसद ज्यादा है। साथ ही, भारत में 15 जलाशयों का स्तर सामान्य भंडारण के 50 फीसद तक है। वहीं, 105 में सामान्य भंडारण का 80 फीसद या उससे ज्यादा है। दक्षिणी हिस्से में जल स्तर विगत सप्ताह की भांति सामान्य से 45 फीसद से नीचे 44 प्रतिशत पर बना हुआ है। क्षेत्र के 42 जलाशयों में से 12 में स्तर सामान्य भंडारण के 40 प्रतिशत से नीचे है, जबकि 8 क्षेत्रों में यह 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत के मध्य है।

अल नीनो का मानसून पर क्या प्रभाव पड़ा है

दरअसल, इस साल कम वर्षा की एक वजह अल नीनो की उत्पति भी है, जिसके नतीजतन अगस्त में 1901 के उपरांत सबसे कम बरसात हुई। अक्टूबर में 1901 के पश्चात छठी सबसे कम बरसात दर्ज हुई। एक यूरोपीय मौसम एजेंसी के मुताबिक, इस वर्ष जनवरी-अक्टूबर रिकॉर्ड पर सबसे गर्म रहा है। अमेरिकी मौसम एजेंसी नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन का कहना है, कि सितंबर के समापन तक भारत का न्यूनतम 21 प्रतिशत भाग सूखे की चपेट में था। मौसम विभाग ने प्रत्यक्ष तोर पर सलाह जारी की है।

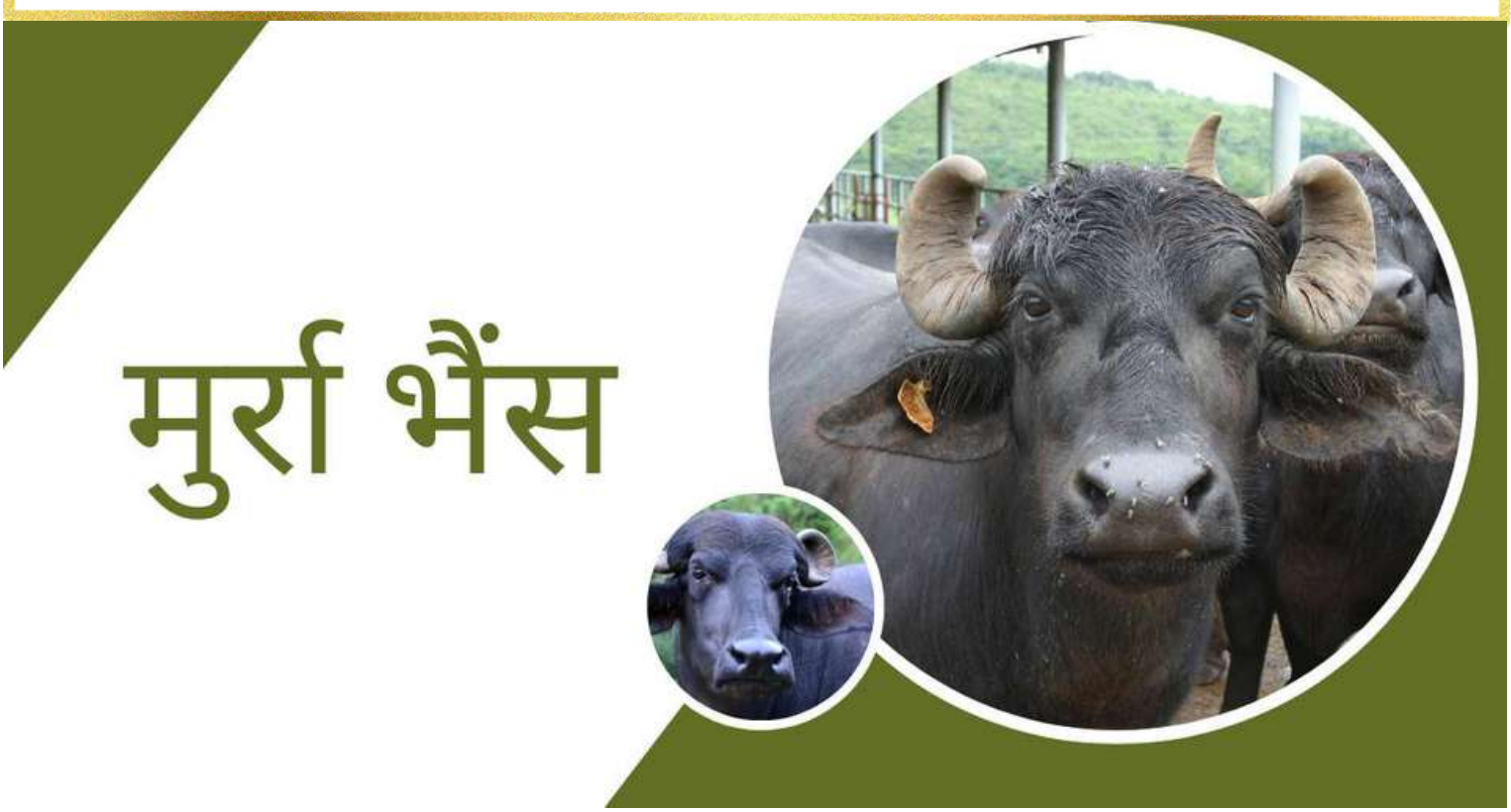

इस नस्ल की भैंस को पालने से पशुपालकों को लाखों की आमदनी होगी

जैसा कि हम सबको ज्ञात है, कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश में खाद्य पदार्थ एवं डेयरी उत्पादों की बेहद मांग है। परंतु, क्या आपको जानकारी है, कि भारत की सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता वाली भैंस की नस्ल कौन सी है। यदि नहीं तो आपके इस प्रश्न का उत्तर यहां है। साथ ही, यदि आप इस भैंस का पालन कर इसके दूध की बिक्री करते हैं तो आप अच्छा पैसा कमा सकते हैं।

भारत में सर्वाधिक दूध देने वाली भैंस की नस्ल मुर्रा को माना जाता है। मुर्रा भैंस औसतन दिन में 25 लीटर से लेकर 30 लीटर तक दूध प्रदान करती है। इस भैंस को उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर पाला जाता है। मुर्रा भैंस का दूध वसा एवं प्रोटीन में उच्च होता है। इसके दूध का सेवन करने से शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम, प्रोटीन एवं वसा मिलता है। इस भैंस के दूध का उपयोग विभिन्न प्रकार के डेयरी उत्पादों जैसे – घी, छाछ, दही और मक्खन तैयार करने के लिए भी उपयोग किया जाता है। मुर्रा भैंस की कीमत की बात की जाए तो ये 50 हजार रुपये से लगाकर 1 लाख रुपये तक होती है। इस भैंस को पालना अत्यंत लाभकारी साबित होता है। एक मुर्रा भैंस से एक दिन में लगभग 25 लीटर दूध मिलता है, जिसके मुताबिक आप दिन के 1000 रुपये से लेकर 1500 रुपये तक कमा सकते हैं।

इस नस्ल की भैंस भी काफी अधिक दूध प्रदान करती है

साथ ही, मेहसाना भैंस भी एक दिन में लगभग–लगभग 20 से 30 लीटर तक दूध प्रदान कर देती है। ये भैंस सर्वाधिक गुजरात और महाराष्ट्र में पाई जाती है। बतादें, कि दोनों ही राज्यों में इस भैंस का पालन किया जाता है। उधर महाराष्ट्र राज्य में मिलने वाली पंढरपुरी भैंस की नस्ल भी अपनी दूध देने की क्षमता के कारण जानी जाती है। सुरती भैंस भी दूध उत्पादन में काफी शानदार होती है।

मुर्रा भैंस की कद काठी कैसी होती है ?

मुर्रा भैंस के सींग मुड़े हुए होते हैं एवं दिखने में यह अन्य भैंसों की तुलना में पावरफुल नजर आते हैं। यह भैंस पंजाब एवं हरियाणा राज्यों में अधिकांश देखने को मिलती है। परंतु, वर्तमान में यह अन्य दूसरे देशों में भी पाली जा रही है। सिर्फ यही नहीं अब तो इस भैंस के सीमन का भी तगड़ा व्यापार हो रहा है। इनमें विभिन्न भैंस काफी लंबी एवं ऊंची होती हैं। इनके मालिक इन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी भेजते हैं। ज्यादातर प्रतियोगियाओं में मुर्रा भैंस ही सबसे अग्रणी रहती हैं। हालांकि, अधिकांश लोग दूध उत्पादन के लिए इनका पालन करते हैं। हरियाणा में इसे 'काला सोना' भी कहा जाता है। ये भैंसे थोड़ी अधिक काली होती हैं।

SHAKTIMAN®

MAKING AGRICULTURE MORE ECONOMICAL®

प्रमुख विशेषताएं

- सबसे बड़ा रोटावेटर निर्माता
- मल्टी स्पीड गियर बॉक्स
- बड़े बियरिंग्स
- बेहतर जुताई के लिए बड़े ब्लेड

बेजोड़ शक्ति
बेजोड़ प्रदर्शन

+91 (2827) 234567
info@shaktimanagro.com
www.shaktimanagro.com

पुष्कर पशु मेले में आए अनमोल और राजा नाम के भैंसों ने खींचा सबका ध्यान

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि राजस्थान के अजमेर जनपद में अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेले का आयोजन किया गया है। इस मेले में विभिन्न राज्यों से पशुपालक अपने पशुओं को साथ लेकर आए हैं। अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेले में प्रति वर्ष विभिन्न उन्नत नस्ल के पशु यहां आकर के आकर्षण का केंद्र बिंदु बनते हैं। प्रति वर्ष की भांति इस बार भी करोड़ों की कीमत के भैंसे बिक्री के लिए आए हैं। इनमें से हरियाणा एवं गुजरात से 2 भैंसे यहां आए, जिन्हें देखकर लोग काफी हैरान रह गए। यह दोनों भैंसे पुष्कर में आकर्षण का केंद्र बिंदु बने हुए है।

हरियाणा से आए 'अनमोल' एवं गुजरात से आए 'राजा' की कीमत लगभग 10 से 12 करोड़ रुपए है। हरियाणा से आए 'अनमोल' का वजन 1570 किलो है। मुर्रा नस्ल के इस भैंसे की कीमत 11 करोड़ रुपए लगाई गई है। अपने आकार एवं कीमत के कारण यह भैंसा पशु मेले में आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। हरियाणा के सिरसा निवासी भैंसा मालिक हरविंदर सिंह का कहना है, कि अनमोल की आयु फिलहाल महज 8 वर्ष है। वहीं, इसके जन्म के समय इसका वजन 80 किलो था। वर्तमान में 5.8 फीट ऊंचे मुर्रा नस्ल के अनमोल का वजन लगभग 1570 किलोग्राम है। परंतु, विगत वर्ष इसका वजन 1400 किलो था।

अनमोल भैंसे के ब्रीडिंग के जरिए 150 बच्चे पैदा हो चुके हैं

हरविंदर का दावा है, कि 8 वर्ष के अनमोल के ब्रीडिंग के माध्यम से अब तक 150 बच्चे पैदा हो चुके हैं। अनमोल का सीमन विक्रय करके वो प्रति माह 8 लाख रुपए कमाते हैं। इसके सीमन से उत्पन्न होने वाली भैंस का वजन 40 से 50 किलो के आसपास रहता है। अनमोल की खुराक एवं अन्य खर्चे मिलाकर प्रति माह 2.50 से 3 लाख रुपये खर्च होते हैं। अनमोल की देखभाल के लिए 2 लोग सदैव रहते हैं, जिन्हें अलग से सैलरी भी दी जाती है।

अनमोल नाम के भैंसे की प्रतिदिन की खुराक कितनी है

अनमोल को खाना यानी कि खुराक के रूप में केले और अंडे दिए जाते हैं। प्रतिदिन 5 किलो फल प्रदान किए जाते हैं, जिसमें 20 आमलेट, 20 केले और 5 किलो दूध प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त अनमोल को खाने के लिए कुट्टी, जौ और मक्का का दलिया सुबह देते हैं। वहीं, इसकी दिन में लगभग तीन से चार बार मालिश की जाती है। इसका प्रतिदिन खाने का खर्चा 2 से 3 हजार रुपए पड़ता है।

राजा भैंसा की कीमत और उसका प्रतिदिन का खर्चा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पुष्कर मेले में गुजरात से आए राजा की कीमत 10 करोड़ रुपए है। यह भैंसा भी पुष्कर पशु मेले में आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। राजा नाम के भैंसे की एक दिन की खुराक का खर्चा 3 से 4 हजार रुपए के आसपास होता है।

राजा एक जाफराबादी नस्ल का भैंसा है

राजा भैंसा के मालिक ने बताया है, कि गुजरात से इस भैंसे को पुष्कर मिलन में बिक्री के लिए लाया गया है। यह एक जाफराबादी नस्ल का भैंसा है। राजा का समकुल वजन तकरीबन 1300 किलो है एवं लंबाई 11 फीट है। राजा के खान पान की एक दिन की लागत तकरीबन 3 से 4 हजार रुपए आती है। इस भैंसे की मां प्रतिदिन 24 लीटर तक दूध देती है।

राजा भैंसा पहली बार पुष्कर मेले में पहुंचा है

राजा के मालिक ने बताया है कि राजा को पुष्कर पहली बार लेकर आए हैं। अनुमानित कीमत लगभग इसकी 10 करोड़ रुपए लगाई है। मालिक ने बताया है, कि इस बार आशा है, कि पुष्कर मेला समाप्त होने से पूर्व ये बिक जाएगा। इस भैंसे की नस्ल के बारे में जिसको जानकारी होगी, तो वह इसे अवश्य खरीदेगा।

पीएम मोदी से एथेनॉल निर्माताओं ने की एथेनॉल के खरीद भाव को बढ़ाने की मांग

एथेनॉल निर्माताओं ने अनाज एवं मक्के से निर्मित एथेनॉल के खरीद मूल्य में इजाफा करने के लिए पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय एवं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को पत्र भेजा है। एथेनॉल विशेष रूप से क्षतिग्रस्त अनाज एवं मक्के से तैयार हो रहा है। भारत में दो स्त्रोतो से एथेनॉल तैयार किया जाता है। इनमें से एक गन्ना एवं दूसरा अनाज (चावल व मक्का) हैं।

एथेनॉल के खरीद मूल्य में बढ़ोतरी की मांग

एथेनॉल निर्माताओं के मुताबिक, अनाज (चावल) से तैयार होने वाले एथेनॉल का खरीद भाव 69.54 एवं मक्के से निर्मित एथेनॉल का खरीद मूल्य 76.80 रुपये प्रति लीटर किया जाए। ऐसा करने पर नवंबर माह से शुरू हो रहे 2023-24 के एथेनॉल आपूर्ति साल में लगातार आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी।

साल 2022-23 में क्षतिग्रस्त अनाज से निर्मित एथेनॉल का खरीद मूल्य 64 रुपये प्रति लीटर एवं मक्के से निर्मित एथेनॉल का खरीद भाव 66.07 रुपये प्रति लीटर निर्धारित किया गया था। एथेनॉल निर्माताओं ने खरीद मूल्य में इजाफा करने की मांग तब की, जब केंद्र सरकार ने गन्ने से निर्मित होने वाले एथेनॉल का खरीद मूल्य घोषित नहीं किया। सामान्य तौर पर यह नवंबर माह के आरंभ में घोषित हो जाता है। वही दूसरी तरफ भारतीय खाद्य निगम ने अतिरिक्त चावल की आपूर्ति बरकरार नहीं रखी हैं।

जीईएमए ने की फीडकॉस्ट के भाव निर्धारित करने की मांग

अनाज एथेनॉल निर्माता एसोसिएशन (जीईएमए) ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं पेट्रोलियम मंत्री श्री हरदीप पुरी से मांग की है, कि आज के समय में खुले बाजार में मौजूद फीडस्टॉक (क्षतिग्रस्त अनाज और मक्के) के खर्च के आधार पर लागत मूल्य निर्धारित किया जाए।

तेल विपणन कंपनियों को कितना एथनॉल मुहैय्या करवाया गया है

एथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2023-24 में तेल विपणन कंपनियों को 2.9 अरब लीटर अनाज आधारित एथेनॉल उपलब्ध करवाया गया है। इसमें क्षतिग्रस्त अनाज (टूटे हुए चावल) की भागेदारी 54 प्रतिशत, एफसीआई से अनुदान प्रदान की गई आपूर्ति की 15 फीसद और मक्के की भागीदारी 31% प्रतिशत रही। तेल विपणन कंपनियों ने एथेनॉल आपूर्ति वर्ष 2023-24 में 15 प्रतिशत सम्मिश्रण एथेनॉल के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 8.25 अरब लीटर एथेनॉल की आपूर्ति की निविदा जारी की है। इसके अंदर 2.9 अरब लीटर एथेनॉल की आपूर्ति अनाज आधारित स्त्रोतों से होती है। वहीं, शेष बची आपूर्ति गन्ना आधारित शीरे से होती है।

अनाज आधारित एथेनॉल के निर्माताओं ने कहा है, कि संपूर्ण वर्ष के लिए गन्ना आधारित एथेनॉल को खरीदने का मूल्य निर्धारित किया जा सकता है। इसकी वजह यह है, कि गन्ने के भाव स्थिर रहते हैं। हालांकि, अनाज आधारित एथेनॉल के भाव प्रतिदिन के आधार पर निर्धारित होते हैं। बहुत बार आपूर्ति व मांग के चलते घंटे के आधार पर भी निर्धारित होते हैं।

जानें आने वाले दिनों में मौसम कैसा रहेगा, कहाँ पड़ेगी बर्फ और कहाँ होगी बारिश

मौसम विभाग के मुताबिक, आने वाले दिनों में बहुत सारे राज्यों में बारिश होने की संभावना हैं। IMD ने कहना है, कि गुजरात, दक्षिण पश्चिम मध्य प्रदेश, दक्षिण राजस्थान, मध्य महाराष्ट्र और उत्तरी कोंकण में 24 से 27 नवंबर के मध्य बरसात होने की संभावना हैं। आइए आपको बताते हैं की मौसम का मिजाज क्या कहता है।

भारत में मौसम का रवैय्या इन दिनों काफी बदला–बदला सा दिखाई दे रहा है। उत्तर भारत में ठंड का आगमन हो चुका है। विगत कुछ दिनों से ठंड में काफी तेजी से इजाफा हुआ है। दिल्ली सहित बहुत सारे राज्यों में तापमान आहिस्ता – आहिस्ता कम होने लगा है। हालांकि, दक्षिण भारत सहित पूर्वोत्तर के विभिन्न इलाकों में आज भी भारी बारिश का दौर जारी है। साथ ही, आने वाले दिनों में मौसम में एक बड़ी तब्दीली देखने को मिल सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक, एक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस उत्तर पश्चिम और पश्चिम भारत को 25 नवंबर से प्रभावित करने जा रहा है, जिसके चलते मौसम में परिवर्तन देखने को मिलेगा। इस परिवर्तन के चलते दक्षिण पश्चिम, मध्य प्रदेश, दक्षिण राजस्थान, मध्य महाराष्ट्र, उत्तरी कोंकण और गुजरात में 24 से 27 नवंबर के बीच बारिश होने की आशंका है।

वर्षा का दौर किन इलाकों में जारी रहेगा

साथ ही, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र एवं उत्तर पश्चिम के मैदानी क्षेत्रों में भी 27 और 28 नवंबर को हल्की वर्षा दर्ज की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, मौसम विभाग ने कहा है, कि आगामी दो से तीन दिनों तक दक्षिण भारत में मूसलाधार बारिश का दौर जारी रहेगा। इस दौरान लक्षद्वीप, दक्षिणी कर्नाटक, तटीय आंध्र प्रदेश, तटीय ओडिशा और दक्षिणी छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और केरल में हल्की से मध्यम वर्षा के साथ कुछ जगहों पर भारी वर्षा होने की आशंका है। मौसम विभाग ने कहा है, कि इस दौरान पश्चिमी पहाड़ी इलाकों पर भी हल्की वर्षा के आसार हैं, जिससे ठंड में और बढ़ोतरी होगी।

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर पुनः बढ़ा

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर कम होने की जगह निरंतर बढ़ रहा है। दिवाली के पश्चात बढ़े प्रदूषण से दिल्लीवासियों को कुछ सीमा तक सहूलियत अवश्य मिली थी। परंतु, अब एक बार पुनः प्रदूषण का स्तर खराब होता दिखाई दे रहा है। दिल्ली में बुधवार को वायु गुणवत्ता की हालत काफी खराब रही है। शहर का एक्यूआई बुधवार को 394 पर दर्ज किया गया। वहीं, एक दिन पूर्व मंगलवार को यह 365 था। प्रदूषण के साथ–साथ फिलहाल दिल्ली में कोहरे का कहर भी देखने को मिल सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली में इस संपूर्ण सप्ताह कोहरा देखने को मिलेगा। इसके साथ–साथ, पहाड़ों पर होने वाली वर्षा के चलते मैदानी क्षेत्रों में तेज हवाएं चल सकती हैं।

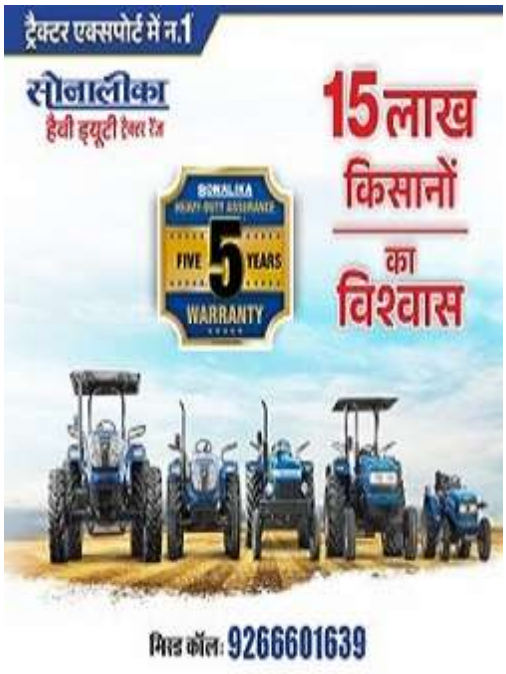

गेहूं की टॉप पांच बायो फोर्टिफाइड प्रजातियां इस प्रकार हैं

गेहूं की ये टॉप पांच बायो फोर्टिफाइड किस्में देश के अधिकांश राज्यों के किसानों के लिए उपयुक्त हैं। गेहूं की ये समस्त किस्में 117 से 150 दिनों के अंतर्गत पक जाती है। साथ ही, किसान इनसे प्रति हेक्टेयर 76 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं।

गेहूं की फसल से ज्यादा फायदा अर्जित करने के लिए किसान को इनकी नवीनतम उच्च पैदावार देने वाली किस्मों का चुनाव करना चाहिए। इसी कड़ी में आज हम भारत के कृषकों के लिए गेहूं की बायो फोर्टिफाइड किस्मों की जानकारी लेकर आए हैं, जो कम खर्चा में कम समय में ज्यादा उत्पादन देने में सक्षम है। दरअसल, जिन किस्मों के बारे में हम बात कर रहे हैं, ये समस्त किस्में 117 से 150 दिनों के समयांतराल में पककर तैयार हो जाती है। वहीं, ये किस्में प्रति हेक्टेयर 76 क्विंटल तक उत्पादन देती हैं।

गेहूं की टॉप पांच बायो फोर्टिफाइड प्रजातियां इस प्रकार हैं

गेहूं की PBW 872 किस्म

गेहूं की यह किस्म दिल्ली, राजस्थान, पश्चिम उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा के क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं। यह किस्म 152 दिनों के समयांतराल में पक जाती है। किसान गेहूं की PBW 872 किस्म से प्रति हेक्टेयर तकरीबन 75 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। गेहूं की इस किस्म में बायोफोर्टिफाइड गुण आयरन 42.3 पीपीएम, जिंक 40.7 पीपीएम विघमान रहते हैं।

गेहूं की PUSA OJASWI (HI 1650) किस्म

गेहूं की इस बायो फोर्टिफाइड किस्म में जिंक 42.7 पीपीएम उपलब्ध होते हैं। यह किस्म मप्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के हिस्सों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। गेहूं की यह किस्म 117 दिनों के समयांतराल में पूरी तरह से पककर तैयार हो जाती है। किसान इस किस्म से तकरीबन 57 क्विंटल/हेक्टेयर तक उत्पादन अर्जित कर सकते हैं।

गेहूं की Karan Vrinda (DBW 371) किस्म

गेहूं की इस बायो फोर्टिफाइड किस्म करण वृंदा (DBW 371) किस्म में प्रोटीन 12.2%, आयरन 44.9 पीपीएम मौजूद होता है। यह किस्म दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा के क्षेत्रों के लिए काफी उपयुक्त होती है। गेहूं की यह किस्म 150 दिन के समयांतराल में पककर तैयार हो जाती है। इसके साथ-साथ देश के किसान इससे तकरीबन 76 क्विंटल/हेक्टेयर उत्पादन हांसिल कर सकते हैं।

गेहूं की Karan Varuna (DBW 372) किस्म

गेहूं की इस किस्म में प्रोटीन 12.2%, जिंक 40.8ppm विघमान रहता है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिम उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों के किसानों के लिए यह अनुकूल है। गेहूं की यह बायो फोर्टिफाइड किस्म 151 दिन के समयांतराल में पूर्णतय पककर तैयार हो जाती है। किसान भाई इस किस्म से प्रति हेक्टेयर लगभग 75 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं।

गेहूं की Unnat (HD 2967) (HD 3406) किस्म

गेहूं की यह उन्नत (एचडी 2967) (एचडी 3406) किस्म 146 दिनों के समयांतराल में पककर बाजार में बिकने के लिए तैयार हो जाती है। किसान इस किस्म से सुगमता से प्रति हेक्टेयर 55 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। बतादें, कि इस किस्म में प्रोटीन 12.25 प्रतिशत तक पाई जाती है।

जाफराबादी भैंस की दुग्ध उत्पादन क्षमता और कीमत

जाफराबादी भैंस की दुग्ध उत्पादन क्षमता और कीमत

दुग्ध उत्पादन करके पशुपालक काफी अच्छा मुनाफा हांसिल करते हैं। जाफराबादी भैंस का नाम गुजरात के जाफराबाद इलाके पर पड़ा है। क्योंकि, इसकी उत्पत्ती जाफराबाद में हुई है। जाफराबादी भैंस बाकी भैंस के मुकाबले में अधिक दिनों तक दूध देती है। पशुपालक इसका पालन दूध उत्पादन क्षमता के लिए करते हैं। क्योंकि, ये बाकी भैंसों की तुलना में अधिक दूध देती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में खेती एवं पशुपालन की काफी प्राचीन परंपरा है। विशेषकर विगत कुछ वर्षों में पशुपालन की ओर किसानों का रुझान बड़ी ही तीव्रता से बढ़ा है। खेती के पश्चात ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आमदनी का यह दूसरा प्रमुख हिस्सा है। पशुपालन के माध्यम से किसान काफी शानदार मुनाफा हांसिल कर रहे हैं। सामान्य तौर पर किसान गाय अथवा भैंस पालना ज्यादा पसंद करते हैं। क्योंकि, इनके दूध के माध्यम से किसान शानदार मुनाफा अर्जित कर हैं। दूध की बढ़ती मांग को मद्देनजर रखते हुए विगत कुछ समय में गाय-भैंस पालन का चलन तेजी से बढ़ा है। इसके साथ-साथ इसी मांग के जरिए डेयरी बिजनेस भी काफी बढ़ रहा है।

जाफराबादी भैंस की कद काठी

हालाँकि, गाय एवं भैंस की सारी प्रजातियां ही एक से बढ़कर एक हैं। परंतु, भैंस की एक नस्ल ऐसी है, जिसकी काफी ज्यादा चर्चा की जाती है। भैंस की इस नस्ल को भैंसों का 'बाहुबली' भी कहा जाता है। क्योंकि, ये भैंस दिखने में काफी हट्टी खट्टी होती है। खास बात यह है, कि इसकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बाकी गाय-भैसों की तुलना में काफी ज्यादा है। जी हां, हम बात करें रहे हैं, भैंस की जाफराबादी नस्ल के बारे में। ऐसे में यदि आप भी डेयरी व्यवसाय के माध्यम से मोटा मुनाफा अर्जित करना चाहते हैं, तो जाफराबादी नस्ल की भैंस आपके लिए अच्छा विकल्प है।

जाफराबादी भैंस की दुग्ध उत्पादन क्षमता और कीमत

जाफराबादी भैंस की उत्पत्ति गुजरात के सौराष्ट्र इलाके से हुई है। यह गुजरात के गिर के जंगलों एवं आसपास के इलाकों, जैसे जामनगर, पोरबंदर, अमरेली, राजकोट, जूनागढ़ और भावनगर जनपदों में पाई जाती है। भैंस की इस नस्ल का नाम गुजरात के अमरेली जनपद के जाफराबाद क्षेत्र के नाम पर पड़ा है। यहां जाफराबादी भैंसों की नस्ल बड़ी तादात में देखने को मिलती है। जाफराबादी भैंस का वजन बेहद भारी होता है। दूध का व्यवसाय करने वाले लोगों के लिए भैंस की ये नस्ल किसी हीरे से कम नहीं है। क्योंकि, ये भैंस प्रतिदिन 20 से 30 लीटर तक दुग्ध उत्पादन करती है, जिससे किसानों को काफी अच्छा मुनाफा होता है। वहीं अगर इसकी कीमत की बात करें तो भैंस की इस नस्ल की कीमत 90 हजार रुपये से डेढ़ लाख रुपये तक होती है। जाफराबादी भैंस की अधिक दूध उत्पादन क्षमता के चलते ही यह इतनी ज्यादा महंगी कीमत पर बिकती है। इसे भावनगरी, गिर अथवा जाफरी के नाम से भी जाना जाता है।

सूरती भैंस की कीमत और दूध देने की क्षमता

सूरती भैंस को विभिन्न नामों से जाना जाता है। इस प्रजाति की भैंसें माही और साबरमती नदियों के मध्य गुजरात के खेड़ा और बड़ौदा में देखने को मिलती हैं। इसकी औसत उत्पादन क्षमता 1600-1800 लीटर प्रति व्यात के दौरान होती है। सूरती भैंस रोजाना 15 लीटर तक दूध देती है, जिससे डेयरी कृषकों को काफी लाभ होता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बेशक किसानी पर अधिक बल दिया जाता हो। परंतु, खेती किसानी के सहित पशुपालन की दिशा में भी किसानों की दिलचस्पी बढ़ी है।

भारत में इसे अब व्यापक रूप से किया जा रहा है, जिसका आंकलन आप इसी बात से लगा सकते हैं, कि पशुपलान के क्षेत्र में हिंदुस्तान आज द्वितीय स्थान पर है। भारत में डेयरी उत्पादों की बढ़ती मांग को मंदेनजर रखते हुए दूध की खपत भी बढ़ी है, जिसकी वजह से डेयरी व्यवसाय काफी फल फूल रहा है। किसान भाई इससे बेहतरीन आमदनी कर रहे हैं। अगर आप भी एक किसान और डेयरी बिजनेस के जरिए अपनी कमाई को बढ़ाना चाहते हैं तो इस खबर में हम आपको भैंस की सूरती नस्ल के बारे में बताएंगे, जो अधिक मात्रा में दूध का उत्पादन करती है।

सूरती नस्ल की भैंस की दूध देने की क्षमता

सूरती भैंस जल भैंस की एक प्रजाति है, जो माही एवं साबरमती नदियों के मध्य गुजरात के खेड़ा एवं बड़ौदा में पायी जाती हैं। इस नस्ल की सबसे अच्छी भैंसें गुजरात के बड़ौदा, आनंद और कैरा जनपदों में पाई जाती हैं। इसकी औसत उत्पादन क्षमता 1600-1800 लीटर प्रति व्यात होती है, इसके दूध में वसा की मात्रा 8-12 फीसद होती है। इस नस्ल की भैंस प्रतिदिन 15 लीटर तक दूध दे सकती है। इसका रंग भूरे से सिल्वर सलेटी, काले या भूरे रंग का होता है। वहीं, इसके सींग मध्यम आकार का नुकीला धड़, लंबा सिर और दराती के आकार की सींग होती है।

सूरती नस्ल की भैंस की कीमत

सूरती भैंस को विभिन्न नामों से भी जाना जाता है, जो क्षेत्रों पर निर्भर करते हैं। विभिन्न इलाकों में इन्हें भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे गुजराती, नडियाडी, तालाबारा, चरोटारी और दक्कनी। सूरती भैंस की ज्यादा दूध उत्पादन क्षमता की वजह से इसे भैंस की उन्नत नस्लों में गिना जाता है। ऐसी स्थिति में यदि आप भी इस भैंस को आमदनी का एक जरिया बनाना चाहते हैं, तो आपको बतादें कि बाजार में इस नस्ल की भैंस की कीमत 40 हजार रुपये से लेकर 50 हजार रुपये के मध्य रहती है।

किसान ने विपरीत परिस्थितियों में स्ट्रॉबेरी और ब्रोकली की खेती कर मिशाल पेश की

राजस्थान के जोधपुर जनपद से संबंध रखने वाले किसान रामचन्द्र राठौड़ विपरीत परिस्थितियों में भी स्ट्रॉबेरी एवं ब्रोकली की खेती कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है। अपनी इस सफलता से उन्होंने बहुत सारे अन्य किसानों को भी प्रेरित किया है। रामचन्द्र विगत 19 वर्षों से खेती कर रहे हैं। जब कोई इंसान कुछ ठान लेता है, तो विपरीत परिस्थितियों में भी उसे हांसिल अवश्य कर लेता है। ऐसी ही एक कहानी है, राजस्थान के जोधपुर जनपद से संबंध रखने वाले किसान रामचन्द्र राठौड़ की, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी कुछ ऐसी फसलों की खेती करी, जो कोई सोच तक भी नहीं सकता था।

सामान्य तौर पर राजस्थान एक कठोर जलवायु परिस्थितियों वाला राज्य है। इसके बावजूद भी रामचन्द्र ने एक बंजर भूमि पर स्ट्रॉबेरी एवं ब्रोकली की खेती कर विभिन्न लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है। अपनी इस सफलता से उन्होंने बहुत से अन्य किसानों को भी प्रेरित किया है। इसके साथ ही दूर-दूर से किसान भी इनसे प्रशिक्षण लेने आ रहे हैं। राजस्थान के इस किसान ने विपरीत परिस्थितियों एवं काफी चुनौतियों से घिरे होने के चलते भी मिशाल पेश कर दी है। बतादें कि इस किसान ने राजस्थान की रेतीली जमीन में स्ट्रॉबेरी और ब्रॉकली की खेती कर ड़ाली है।

समस्यापूर्ण परिस्थितियों में की कृषि

रामचन्द्र राठौड़ जोधपुर जनपद की लूनी तहसील से ताल्लुक रखते हैं। लूनी पश्चिमी राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र का एक हिस्सा है, जो बंजर जमीन के लिए जाना जाता है। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र को प्रदूषित पानी की वजह डार्क जोन के तौर पर वर्गीकृत किया गया है। हाल के दिनों में कुछ सुधार के होते हुए भी, इस रेगिस्तानी इलाके में लोग बार-बार सूखे का संकट झेलने को मजबूर हैं। ज्यादातर युवा नौकरी की खोज में शहरों की ओर पलायन कर गए हैं। परंतु, इस चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में भी रामचंद्र राठौड़ ने अपनी पैतृक जमीन पर स्ट्रॉबेरी और ब्रोकोली की सफलतापूर्वक खेती करके बहुत सारे लोगों को हैरान किया है। ऐसा कहते हैं, कि उनके खेत के टमाटर फ्रिज के अंदर दो महीने तक ताजा रहते हैं। रामचन्द्र की कृषि तकनीकों ने वैश्विक कृषि विशेषज्ञों का ध्यान भी खींचा है।

किसान ने महज 17 वर्ष की आयु में कृषि शुरू की थी

मीडिया खबरों के मुताबिक, रामचन्द्र ने कहा है, कि वे चुनौतियों से भरी परिस्थितियों में बड़े हुए हैं। उनके पिता जी भी एक किसान थे एवं उन्हें अपर्याप्त बरसात की वजह से बार-बार फसल की विफलता का सामना करना पड़ता था। जिसकी वजह से रामचन्द्र को आगे की पढ़ाई करने की जगह खेती में मदद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने अपने परिवार का सहयोग करने के लिए सिलाई की तरफ रुख किया एवं स्व-वित्तपोषण के जरिए से 12वीं कक्षा तक अपनी शिक्षा जारी रखी थी। हालांकि, 2004 में अपने पिता की मौत के पश्चात उन्होंने 17 साल की आयु में अपनी पैतृक जमीन पर वापस खेती करने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि शुरुआत में वे बाजरा, ज्वार और मूंग की खेती किया करते थे। हालांकि, उन्हें प्रदूषित एवं अनुपयुक्त जल के चलते बहुत सारी समस्याओं को सामना भी करना पड़ा।

सरकारी प्रशिक्षण ने जिंदगी को पूर्णतय परिवर्तित कर दिया

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि उनके जीवन में अहम मोड़ तब आया जब उन्हें सरकार की कृषक मित्र योजना के अंतर्गत जोधपुर सीएजेडआरआई संस्थान में सात दिवसीय प्रशिक्षण का अवसर मिला था। इस प्रशिक्षण ने उनको सिखाया कि कृषि के लिए वर्षा जल का संरक्षण किस प्रकार किया जाए। साथ ही, रेगिस्तानी परिस्थितियों में नवीन कृषि पद्धतियों को कैसे अपनाया जाए। बतादें कि प्रशिक्षण ने उन्हें कृषकों की सहायता करने वाली सरकारी योजनाओं की एक श्रृंखला से भी परिचित कराया है। प्रशिक्षण ने उनको इस विश्वास को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया कि अकाल एवं बेमौसम बारिश असाध्य समस्याएं हैं। कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण से अर्जित व्यावहारिक ज्ञान के जरिए उन्होंने वर्षा जल संचयन की क्षमता एवं अनियमित मौसम पैटर्न के विरुद्ध पॉलीहाउस के सुरक्षात्मक लाभों की खोज करी।

किसान रामचंद्र बहुत सारे कृषकों को प्रेरित कर रहे हैं

जोधपुर जनपद में बागवानी विभाग के एक अधिकारी द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर रामचंद्र ने 2018 में एक पॉलीहाउस का निर्माण किया है। इसके पश्चात उन्होंने 2019-20 में एक फार्म तालाब एवं एक वर्मी-कम्पोस्ट इकाई निर्मित करके अपनी कोशिशों का विस्तार किया। पॉलीहाउस में खीरे की खेती के लिए वर्षा जल का इस्तेमाल करके, उन्होंने केवल 100 वर्ग मीटर में 14 टन का रिकॉर्ड-तोड़ उत्पादन हासिल की, जो कि जोधपुर जनपद के किसी भी कृषक द्वारा बेजोड़ उपलब्धि है। अपने नए-नए इनोवेशन को जारी रखते हुए उन्होंने नकदी फसलों के क्षेत्र में कदम रखा और रेगिस्तानी क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी और तोरी की सफलतापूर्वक खेती कर ड़ाली है। उन्होंने अपनी भूमि का एक अहम भाग बागवानी खेती के लिए समर्पित करते हुए जैविक उर्वरक उत्पादन का भी बीड़ा उठाया है। उनकी सफलता की कहानी ने व्यापक असर उत्पन्न किया है। साथ ही, अन्य कृषकों को भी इसी तरह की पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है।

MUSHROOM FARMING: मशरूम की खेती पर 50 प्रतिशत अनुदान की सुविधा

बिहार सरकार एकीकृत बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत राज्य के कृषकों को मशरूम की खेती करने पर 50 फीसद तक अनुदान की सुविधा दी जा रही है। जिससे कि राज्य में मशरूम पैदावार के साथ-साथ मशरूम की आमदनी में भी बढ़ोतरी हो सके।

मशरूम की खेती कर कृषक कम समय में शानदार आमदनी कर सकते हैं। लेकिन, इसके लिए किसानों को मशरूम की खेती से जुड़ी सही जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि मशरूम की खेती के लिए सरकार की ओर से भी आर्थिक तौर पर सहायता की जाती है। इसी कड़ी में अब बिहार सरकार ने राज्य के किसानों को मशरूम की खेती करने के लिए शानदार अनुदान की सुविधा उपलब्ध की है। दरअसल, बिहार सरकार की तरफ से मशरूम की खेती करने वाले कृषकों को तकरीबन 50 फीसद तक की सब्सिड़ी दी जाएगी, जिससे राज्य में मशरूम की पैदावार के साथ-साथ कृषकों की आय में भी बढ़ोतरी हो सके। मशरूम की खेती पर सब्सिडी की यह सुविधा सरकार एकीकृत बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत उपलब्ध करवा रही है। ऐसी स्थिति में आइए बिहार सरकार की ओर से किसानों को मिलने वाली मशरूम की खेती पर अनुदान के विषय में विस्तार से जानते हैं।

मशरूम की खेती पर कितना अनुदान मिलेगा

बिहार सरकार के द्वारा एकीकृत बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत मशरूम की खेती पर किसानों को सब्सिडी की सुविधा शुरू की गई है। सरकार की ओर से इस योजना के लिए कुछ दिशा-निर्देश भी जारी किए हैं, जिसके अंतर्गत मशरूम उत्पादन इकाई का खर्चा लगभग 20 लाख रुपये तय किया गया है, जिसमें से राज्य के कृषकों को तकरीबन 10 लाख रुपये तक के अनुदान की सुविधा प्राप्त होगी। ऐसा कहा जा रहा है, कि सरकार की इस योजना में मशरूम स्पॉन एवं मशरूम कंपोस्ट पर 50 फीसद की आर्थिक सहायता मिलेगी।

मशरूम की खेती पर अनुदान हेतु आवेदन प्रक्रिया

यदि आप किसान हैं, एवं अपने खेत में मशरूम की खेती करना चाहते हैं, तो बिहार सरकार की यह योजना आपके लिए बेहद लाभकारी साबित हो सकती है। राज्य के इच्छुक कृषक मशरूम की खेती पर मिलने वाले अनुदान का लाभ उठाने के लिए बिहार बागवानी की आधिकारिक बेवसाइट **horticulture.bihar.gov.in** पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस योजना से संबंधित ज्यादा जानकारी हांसिल करने के लिए किसान अपने समीपवर्ती कृषि विभाग से भी संपर्क साध सकते हैं।

भैंस की कालाहांडी नस्ल का पालन कर लाखों की आय की जा सकती है

भैंस की कालाहांडी नस्ल मुख्य तौर पर ओडिशा के कालाहांडी एवं रायगढ़ जनपद में पाई जाती है। बतादें, कि इसको भैंस की उन्नत नस्लों में गिना जाता है। यह नस्ल एक ब्यांत में औसतन 680-900 लीटर तक दूध देती है। ऐसी स्थिति में इसे डेयरी व्यवसाय के लिए काफी शानदार माना जाता है।

भारत में डेयरी उत्पादों की खपत में आए उछाल को देखकर लोगों की दिलचस्पी डेयरी व्यवसाय की ओर तेजी से बढ़ी है। विशेषकर ग्रामीण इलाकों में ये व्यवसाय काफी फल फूल रहा है, जिसके माध्यम से किसान शानदार आमदनी कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में यदि आप भी पशुपालन के क्षेत्र से जुड़कर डेयरी व्यवसाय के माध्यम से शानदार कमाई करने की सोच रहें हैं, तो हम आपको भैंस की एक ऐसी नस्ल के विषय में बताएंगे जो डेयरी व्यवसाय के लिए बेहद शानदार मानी जाती है। हम भैंस की कालाहांडी नस्ल के बारे में बात कर रहे हैं।

कालाहांडी नस्ल की भैंस की एक ब्यांत में दुग्ध उत्पादन क्षमता

भैंस की इस नस्ल को कालाहांडी एवं आंध्र प्रदेश में पेडाकिमेडी के नाम से जाना जाता है। इस भैंस की उत्पत्ति ओडिशा के कालाहांडी एवं रायगढ़ जनपद से हुई है। यही कारण है, कि इसका नाम भी कालाहांडी पड़ गया। विशेष रूप से ये भैंस इन्हीं इलाकों में पाई जाती हैं। परंतु, आंध्र प्रदेश के पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में इन्हें देखा जाता है। इनका रंग सलेटी से गहरा सलेटी होता है। वहीं, माथा चपटा होता है, परंतु पूंछ का रंग काला होता है। इसके कूबड़ छोटे एवं लेवा गोल आकार में होते हैं। दूध देने की क्षमता को देखें तो ये भैंस एक ब्यांत में 680-900 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है। भैंस की यह नस्ल सामान्य ताप एवं ठंड को वहन करने में भी सक्षम होती है।

कालाहांडी भैंस का मूल्य

कालाहांडी भैंस की ज्यादा दूध उत्पादन क्षमता की वजह से इसे भैंस की उन्नत नस्लों में शम्मिलित किया जाता है। ऐसी स्थिति में यदि आप भी इस भैंस को आमदनी का एक साधन बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले इसकी पहचान, कीमत और खासियत अवश्य जान लें। बाजार में इस प्रजाति की भैंस की कीमत 25 हजार रुपये से लगाकर 90 हजार रुपये के मध्य है।

कालाहांडी भैंस की जाँच एवं खूबियाँ

कालाहांडी नस्ल की भैंस सामान्य तौर पर ओडिशा में मिलती है। भैंस की इस नस्ल का माथा चपटा एवं उभरा हुआ होता है। माथे पर छोटे बाल भी होते हैं। इस भैंस का रंग सलेटी से गहरा सलेटी होता है, वहीं आकार के मामले में ये मध्यम होती हैं। यह नस्ल एक ब्यांत में औसतन 680-900 लीटर दूध प्रदान करती है। भैंस की इस नस्ल को दूध के अतिरिक्त बोझा ढोने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। कालाहांडी भैंस के सींगों का भी इस्तेमाल किया जाता है। इनके सींगों से घरेलू सामान निर्मित किए जाते हैं। भैंस की ये नस्ल अपने मूल क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता एवं रोग उपकरण क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

आप भैंस की खुराक का खास ध्यान रखें

इस नस्ल की भैंसों को खुराक आवश्यकता के अनुसार चाहिए होती है। सामान्य तौर पर इन्हें फलीदार चारे और तूड़ी भोजन के रूप में पसंद है। इनके भोजन में ऐसे तत्वों को शम्मिलित करें, जिनमें उर्जा, प्रोटीन, कैलशियम, फासफोरस एवं विटामिन ए इत्यादि की भरपूर मात्रा विघमान हो। आप इस भैंस को दाने, तेल बीजों की खल एवं धातु वाले भोजन दे सकते हैं। इनको मक्का/गेहूं/जौं/जई/बाजरा के चारे की खुराक भी दी जा सकती है।

डेयरी व्यवसाय के लिए इस नस्ल की भैंस को शानदार माना जाता है

यदि आप भी डेयरी व्यवसाय के लिए भैंस पालन करने की सोच रहे हैं, तो आपके लिए मेहसाना नस्ल का पालन करना शानदार साबित हो सकता है। ये भैंस अपनी दुग्ध उत्पादन क्षमता के लिए मशहूर है। ये भैंस आपको वार्षिक लाखों का मुनाफा प्रदान कर सकती है।

ग्रामीण इलाके से लेकर शहरी क्षेत्रों में भैंस पालन एक अच्छा कारोबार बनकर उभरा रहा है। बहुत सारे किसान एवं डेयरी पालक दूध की बढ़ती खपत को मंदेनजर रखते हुए भैंस पालन कर रहे हैं। यही कारण है, कि भैंस पालन का व्यवसाय दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। भैंस लेने से पूर्व लोग सामान्य तौर पर सही नस्ल का चुनाव नहीं कर पाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उन्हें हानि उठानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में आज हम आपको भैंस की एक ऐसी उन्नत नस्ल के विषय में बताएंगे, जो अपनी अधिक दूध उत्पादन क्षमता के लिए मशहूर है। आज हम जिस नस्ल की भैंस के विषय में बात कर रहे हैं उस भैंस का नाम मेहसाणा है। आप भैंस की इस नस्ल को अपनाकर वर्षभर में शानदार मुनाफा अर्जित कर सकते हैं।

पशुपालक वार्षिक कितना मुनाफा कमा सकते हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भैंस की यह नस्ल इतनी शानदार है, कि ये वर्ष भर में आपको डेढ़ लाख तक का मुनाफा प्रदान कर सकती है। इस भैंस की उत्पत्ती गुजरात राज्य में हुई है। क्योंकि, गुजरात के मेहसाना जनपद में इस नस्ल की बुहतायत है। इसलिए मेहसाणा जनपद के नाम पर ही भैंस का नाम पड़ा है। मेहसाना के अतिरिक्त ये भैंस साबरकांठा, बनासकांठा, अहमदाबाद और गांधीनगर जनपदों में भी पाई जाती है। इस नस्ल को मेहसाणा या मेहसानी के नाम से जाना जाता है। यह एक शांत स्वभाव की भैंस होती है, जिसके कारण किसान या डेयरी पालक इसे पालना काफी पसंद करते हैं।

मेहसाणा भैंस प्रतिदिन कितने लीटर दूध देती है

मेहसाणा नस्ल की भैंस स्वयं की दूध उत्पादन क्षमता के लिए बेहद मशहूर है। मेहसाणा भैंस को व्यावसायिक डेयरी फार्म के लिए उत्तम माना जाता है। दूध उत्पादन क्षमता की बात करें तो मेहसाणा भैंस प्रतिदिन 5 से 8 लीटर तक दूध देती है। उच्च प्रबंधन एवं पोषण के साथ, ये भैंस प्रतिदिन 10 लीटर तक दूध भी प्रदान कर सकती हैं। वहीं, ब्यांत काल में यह भैंस औसतन 1800 से 2000 लीटर तक दूध प्रदान करती है। भैंस की इस नस्ल की कीमत 50 हजार से 1 लाख रुपये तक होती है। दरअसल, इस भैंस की कीमत क्षेत्र, आकार एवं स्वास्थ्य पर निर्भर करती है।

मेहसाणा नस्ल की क्या-क्या विशेषताएं हैं

मेहसाणा नस्ल की भैंस काले, भूरे और सलेटी रंग को होती है। वहीं, इसका आकार मुर्रा भैंस के मुकाबले में बड़ा होता है। परंतु, वजन में ये उससे कम होती है। एक नर मेहसाणा के औसत शरीर का वजन 560 किलोग्राम तक होता है। तो उधर मादा का वजन लगभग 480 किलोग्राम तक होता है। इनके सींग सामान्यतः हंसिया के आकार के होते हैं। मुर्रा भैंस के मुकाबले में कम घुमावदार होते हैं। इनकी गर्दन काफी लंबी होती है और भली भांति स्थित भी होती है। इनका चेहरा लंबा एवं सीधा होता है। थूथन चौड़ी और नथुने खुले हुए होते हैं। साथ ही आंखे सुंदर, काली और चमकीली होती हैं। ऐसा कहा जाता है, कि मुर्राह और सुरती नस्ल की क्रॉस ब्रीडिंग के द्वारा मेहसाणा नस्ल विकसित हुई है। मेहसाणा भैंस अपनी प्रजनन क्षमता के लिए भी काफी मशहूर है। भैंस की यह नस्ल दुग्ध उत्पादन क्षमता के लिए जानी जाती है। बतादें, कि एक ब्यांत में यह भैंस औसतन 1800 से 2000 लीटर तक दूध प्रदान करती है।

ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में न.1
सोनालीका
हैवी इयूटी ट्रैक्टर रेंज
SONALIKA HEAVY DUTY ASSURANCE FIVE 5 YEARS WARRANTY
15 लाख किसानों का विश्वास
मिस कॉल: 9266601639

प्याज स्टोरेज हाउस

इस राज्य में प्याज स्टोरेज हाउस खोलने पर 75% सब्सिडी

भारत में आजकल प्याज काफी मंहगा हो चुका है। अब आप भी ऐसे में इसका लाभ उठा सकते हैं। परंतु, उसके लिए आपको प्याज स्टोरेज हाउस खोलना होगा। यदि आप भी प्याज के माध्यम से तगड़ी आमदनी करना चाहते हैं, तो एक प्याज स्टोरेज हाउस खोल लें। यहां बड़ी बात यह है, कि इसके निर्माण पर आपको 4.5 लाख रुपये तक का अनुदान भी मिल जाएगा।

भारत में आजकल प्याज जनता के खूब आंसू निकाल रहा है। इसकी कारण इसकी कीमत है। भारत में प्याज की कीमतें पुनः आसमान छू रही हैं। सप्लाई के अनुसार, प्याज का भंडारण न होने के चलते इसकी कीमतों में वृद्धि दर्ज की गई है। परंतु, प्याज की कीमतों में आए उछाल का फायदा आप भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको बस एक प्याज स्टोरेज हाउस खोलना होगा, जिसके निर्माण पर आपको अनुदान भी मिलेगा। वहीं, बाद में प्याज के भंडारण व उसकी नीलामी से मुनाफा भी होगा।

बिहार सरकार ने उठाया अहम कदम

दरअसल, बिहार सरकार ने व्यापक प्याज भंडारण प्रणाली को विकसित करने के लिए एक बड़ी कवायद की है। राज्य सरकार प्याज भंडारण के लिए अनुदान प्रदान कर रही है। जिससे कि राज्य में प्याज का भंडारण सुनिश्चित किया जा सके। वहीं, इससे लोगों को भी लाभ मिले। ऐसी स्थिति में यदि आप भी बिहार से हैं और कोई नवीन व्यवसाय चालू करने की सोच रहे हैं, तो बिहार सरकार की इस योजना का फायदा उठा सकते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण इलाकों में भी किसान अपनी लोकल स्टोरेज बना सकते हैं, जिस पर सरकार 75 फीसद तक की सब्सिड़ी दे रही है।

बिहार सरकार कितनी सब्सिडी प्रदान कर रही है

बिहार सरकार के उद्यान विभाग के मुताबिक, सब्जी विकास कार्यक्रम (2023-2024) के अंतर्गत प्याज स्टोरेज की स्थापना के लिए राज्य सरकार अनुदान मुहैय्या करा रही है। सरकार की इस योजना के मुताबिक, 50 मीट्रिक टन प्याज स्टोरेज यूनिट के लिए 6 लाख रुपये की लागत निर्धारित की गई है। इस पर सरकार आपको 75 फीसद अनुदान देगी। ऐसे में अगर आप एक प्याज स्टोरेज हाउस का निर्माण करते हैं तो इस पर आपको 4 लाख 50 हजार रुपये तक की सब्सिडी मिलेगी। इसका मतलब कि आपको अपनी जेब से निर्माण करने पर सिर्फ 1 लाख 50 रुपये का खर्चा करना होगा।

बिहार के इन जिलों में आवेदन कर सकते हैं

बिहार सरकार वर्तमान में कुछ ही जनपदों में इस योजना को चला रही है। इसके अंतर्गत औरंगाबाद, गया, नालंदा, पटना, बक्सर, नवादा और शेखपुरा जैसे जनपद के लोग एवं किसान प्याज भंडारण के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की प्रक्रिया पूर्ण रूप से ऑनलाइन है, जो वर्तमान में शुरू हो गई है।

योजना का लाभ लेने के लिए इस तरह आवेदन करें

यदि आप भी इस योजना का फायदा उठाकर प्याज स्टोरेज हाउस खोलना चाहते हैं, तो बागवानी विभाग की आधिकारिक वेबसाइट **(https://horticulture.bihar.gov.in)** पर जाकर इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने के लिए सबसे पहले वेबसाइट पर जाएं। इसके बाद 'सब्जी विकास योजना' पर क्लिक करें, जहां आपको प्याज स्टोरेज हाउस के निर्माण पर मिल रहे अनुदान से जुड़ा एक लिंक मिलेगा। लिंक पर क्लिक करने के पश्चात अपनी समस्त जानकारियां भर दें एवं फॉर्म जमा कर दें।

गेंहू की ये 5 उन्नत किस्में

किसानों को 81 क्विंटल तक उपज देने की क्षमता रखती हैं गेंहू की ये 5 उन्नत किस्में

भारतीय कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की टॉप पांच उन्नत किस्में श्रीराम 303 गेहूं की किस्म, GW 322 किस्म, पूसा तेजस 8759 किस्म, श्री राम सुपर 111 गेहूं और HI 8498 किस्म प्रति हेक्टेयर 81 क्विंटल तक उत्पादन देने में सक्षम हैं। साथ ही, यह समस्त किस्में 100 से 120 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं।

गेहूं की खेती से ज्यादा मुनाफा पाने के लिए कृषकों को गेहूं की उन्नत किस्मों का चुनाव करना चाहिए। जिससे कि किसान कम वक्त में ही ज्यादा से ज्यादा उपज हाँसिल कर उसे बाजार में बेच सकें। साथ ही, कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा भी समयानुसार फसलों की नवीन-नवीन किस्मों को तैयार किया जाता है। इसी कड़ी में आज हम देश के कृषकों के लिए भारतीय कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा विकसित की गई गेहूं की टॉप पांच उन्नत किस्मों की जानकारी लेकर आए हैं। जो 100 से 120 दिन में पक जाती हैं। साथ ही, ये किस्में 81 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार देती हैं। गेहूं की जिन टॉप पांच उन्नत किस्मों के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं। वह श्रीराम 303 गेहूं की किस्म, GW 322 किस्म, पूसा तेजस 8759 किस्म, श्रीराम सुपर 111 गेहूं और HI 8498 किस्म हैं।

गेहूं की टॉप पांच उन्नत किस्में इस प्रकार हैं

HI 8498 किस्म

गेहूं की HI 8498 किस्म को जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के द्वारा विकसित की गई है। इससे किसान प्रति हेक्टेयर 77 क्विंटल तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। साथ ही, यह प्रजाति 125-130 दिन में पूर्णतय पककर तैयार हो जाती है।

श्रीराम 303 गेहूं की किस्म

गेहूं की यह किस्म खेत में 156 दिनों के समयांतराल में पककर तैयार हो जाती है। इसका औसतन पैदावार तकरीबन 81.2 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक किसानों को मिलती है। गेहूं की यह श्रीराम 303 गेहूं की किस्म पीला, भूरा और काला रतुआ रोधी किस्म है।

GW 322 किस्म

गेहूं की यह किस्म 3-4 बार सिंचाई के अंतर्गत ही पक जाती है। गेहूं की GW 322 किस्म से भारत के किसान लगभग 60-65 क्विंटल उपज हांसिल कर सकते हैं। इस किस्म की संपूर्ण फसल लगभग 115-125 दिन की समयावधि में बेहतर ढ़ंग से पककर तैयार हो जाती है।

पूसा तेजस 8759 किस्म

गेहूं की पूसा तेजस किस्म 110 से 115 दिनों के समयांतराल में पककर तैयार हो जाती है। बतादें, कि गेहूं की यह किस्म जबलपुर के कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई गई है। इसे किसान प्रति हेक्टेयर तकरीबन 70 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

श्री राम सुपर 111 गेहूं

गेहूं की यह उन्नत किस्म किसानों के लिए अत्यंत फायदेमंद है। क्योंकि यह किस्म बंजर भूमि पर भी सुगमता से उत्पादित की जा सकती है। गेहूं की श्रीराम सुपर 111 गेहूं से किसान प्रति हेक्टेयर लगभग 80 क्विंटल तक उपज हांसिल कर सकते हैं। साथ ही, इस प्रजाति से किसान बंजर भूमि पर तकरीबन 30 क्विंटल/हेक्टेयर तक उपज हांसिल कर सकते हैं। गेहूं की यह प्रजाति 105 दिनों के अंदर पक कर तैयार हो जाती है।

सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इस राज्य में 75 फीसद अनुदान

सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इस राज्य में 75 फीसद अनुदान

बिहार में सब्जियों की पैदावार को ज्यादा करने एवं किसानों की सहायता करने के मकसद से राज्य सरकार सब्जी विकास योजना चला रही है। इस योजना के तहत सरकार बीजों की खरीद पर 75 फीसद का अनुदान प्रदान कर रही है। बिहार में कृषकों ने सब्जी की खेती को बढ़ावा देने के लिए रबी फसलों के साथ ही सब्जी की बिजाई चालू कर दी है। सरकार भी उनका सहयोग कर रही है, जिससे कि पैदावार क्षमता के साथ किसानों की आमदनी बढ़ सके। इसके साथ-साथ सरकार सब्जी पैदावार के क्षेत्र में प्रोत्साहन के लिए अनुदान प्रदान कर रही है। साथ ही, जयादा से ज्यादा संख्या में कृषकों को सब्जी विकास योजना के अंतर्गत बीज उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करने की योजना तैयार कर रही है। बिहार सरकार ने सब्जी विकास योजना की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत विभिन्न सब्जियों की खेती के लिए अनुदान प्रदान किया जाएगा। इस योजना के तहत कृषकों को उच्च मूल्य वाली सब्जियों के बीजों के वितरण के लिए अनुदान मिलेगा। सरकार सब्जियों में बिना बीज के खीरा, बैंगन एवं बाकी सब्जियों की खेती पर भी अनुदान प्रदान कर रही है। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया भी चालू हो चुकी है। इच्छुक किसानों को आवेदन करने का अवसर मिला है, जिससे कि वे इस योजना का फायदा उठासकें।

सरकार बीजों पर 75 प्रतिशत तक अनुदान प्रदान कर रही है

बिहार सरकार की तरफ से सब्जियों की उन्नत प्रजाति के बीजों पर कृषकों को धनराशि देने का निर्णय किया गया है, जिसमें 75 फीसद अनुदान करके उच्च मूल्य वाले खीरे एवं बैंगन की इकाई लागत शम्मिलित है। सब्जी विकास योजना के तहत किसानों को एक उप-अवयव में निर्धारित सीमा तक धनराशि प्रदान की जाएगी। सब्जी के 1,000 से 10,000 तक के खरीद पर धनराशि प्रदान की जाएगी। किसानों को 0.25 एकड़ से 2.5 एकड़ तक की सब्जी खेती के बीज पर भी धनराशि प्रदान की जाएगी।

आवेदन ऑनलाइन माध्यम से करना पड़ेगा

उद्यान पदाधिकारी सूरज पांडेय का कहना है, कि सब्जी विकास योजना का फायदा लेने के लिए किसानों को ऑनलाइन आवेदन करना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि यह प्रक्रिया अब चालू कर दी गई है। उन्होंने बताया है, कि जिन कृषकों के पास जो योजना का फायदा उठाना चाहते हैं, तो उनके समीप पूर्व से ही 13 अंकों के डीबीटी संख्या होनी जरूरी है। बतादें, कि जिन कृषकों के पास यह तादात नहीं हो, वे आधिकारिक वेबसाइट DBTAGRICULTURE.BIHAR.GOV.IN पर पंजीकरण करके इस संख्या की प्राप्ति कर सकते हैं। पंजीकरण संख्या हांसिल होने के पश्चात, किसान HORTICULTURE.BIHAR.GOV.IN वेबसाइट के लिंक पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

मोदी जी ने पीएम किसान सम्मान निधि की 15वीं किस्त जारी की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 15वीं किस्त जारी कर दी है। बतादें, कि किसान भाई अपने बैंक खाते में जांच कर सकते हैं। जितने भी किसान भाइयों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 15वीं किस्त की प्रतीक्षा थी, अब वह समाप्त हो गई है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कृषकों के खाते में योजना की धनराशि हस्तांतरित कर दी है। इस बार योजना के अंतर्गत 8 करोड़ से ज्यादा कृषकों को लाभ प्रदान किया गया है। योजना के अंतर्गत लगभग 18 करोड़ रुपये की धनराशि हस्तांतरित कर दी गई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड के खूंटी में आयोजित एक कार्यक्रम से बटन दबाकर ये किस्त हस्तांतरित की है। इस योजना का मकसद कृषकों की आर्थिक सहायता करना है। किसानों को उनकी कृषि एवं बाकी आकस्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सरकार की ओर से सहायता की जाती है।

किसान भाइयों को यहां मदद मिलेगी

यदि किसी भी कृषक भाई को योजना से संबंधित अधिक जानकारी चाहिए तो वह **pmkisan-ict@gov.in** पर ईमेल भेज सकते हैं। इसके अतिरिक्त वह हेल्पलाइन नंबर 155261 अथवा 1800115526 या फिर 011-23381092 पर संपर्क साध सकते हैं।

पीएम किसान सम्मान निधि योजना क्या है ?

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना सरकार के द्वारा चलाई जा रही एक योजना है, जो भारत के समस्त कृषक परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस योजना के अंतर्गत हर लाभार्थी किसान परिवार को हर वर्ष 6 हजार रुपये तीन समान किस्तों में मुहैय्या कराए जाते हैं।

योजना के मकसद की बात की जाए तो इसके माध्यम से किसानों की आमदनी बढ़ाना, किसानों की आर्थिक स्थिति को बेहतर करना, किसानों के जीवन स्तर में सुधार करना तथा कृषि क्षेत्र में विकास को प्रोत्साहन देना है। योजना के जरिए हर एक किसान परिवार को प्रति वर्ष 6,000 रुपये तीन समान किस्तों में मिलते हैं। पहली किस्त अप्रैल माह में दूसरी किस्त जुलाई माह में एवं तीसरी किस्त नवंबर माह में जारी की जाती है।

औषधीय खेती

हल्दी की खेती को कमाई वाली फसल कहने के पीछे की वजह

कृषक भाई हल्दी की खेती कर काफी शानदार मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। हल्दी की मांग विदेशों में बेहद अधिक है। हल्दी की खेती करने से कृषकों को काफी लाभ होगा। भारत के तकरीबन हर घर में हल्दी का उपयोग किया जाता है। इसकी खेती कर कृषक भाई काफी शानदार धन अर्जित कर सकते हैं, जिसकी संपूर्ण जानकारी नीचे दी गई है।

जानकारी के लिए बतादें, कि हल्दी की खेती को आमदनी वाली फसल के नाम से जाना जाता है। बतादें कि ऐसा इसलिए है, क्योंकि ये विभिन्न कार्यों में उपयोग होने वाली फसल है। इसकी मांग सदैव बनी रहती है। हल्दी का उपयोग मसाले, औषधि, ब्यूटी प्रोडक्ट्स और अन्य बहुत सारे उत्पादों में होता है। इसके साथ ही हल्दी की खेती के दौरान ज्यादा पानी अथवा फिर सिंचाई की जरूरत नहीं होती है। यह एक ऐसी फसल है, जो कम खर्चा में उग सकती है। साथ ही, इससे काफी बेहतरीन आमदनी की जा सकती है।

हल्दी की खेती में आने वाली लागत

अगर आप एक हेक्टेयर भूमि में हल्दी की खेती करने के बारे में सोच रहे हैं, तो लगभग 10,000 रुपये के बीज, 10,000 रुपये की खाद एवं मजदूरी शुल्क जो उस वक्त लागू हो वह आपको देना पड़ेगा। हल्दी की खेती से होने वाली आमदनी विशेष रूप से उत्पादन पर निर्भर होती है। एक हेक्टेयर भूमि में हल्दी का औसत उत्पादन 20-25 क्विंटल तक का होता है। अगर हल्दी की कीमत 200 रुपये किलो है, तो एक हेक्टेयर में हल्दी की खेती से लगभग 5 लाख तक की आमदनी की जा सकती है।

हल्दी की जल निकासी व बाजार में मांग

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि हल्दी की खेती करने के लिए शानदार जल निकासी वाली मृदा को चुनें। हल्दी की खेती करने के लिए जैविक खाद का उपयोग करें। हल्दी की खेती के दौरान कीटों एवं बीमारियों से संरक्षण के लिए समुचित उपाय करें। फसल को सही वक्त पर खेत से निकाल लें। बाजार के अंदर हल्दी की काफी मांग है। भारत ही नहीं बल्कि विदेश में भी हल्दी की बेहद मांग है। आप हल्दी को ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से भी अच्छी कीमतों में बेच सकते हैं।

जानें कठिया गेहूं की टॉप पांच उन्नत किस्मों के बारे में

कठिया गेहूं की यह टॉप उन्नत किस्में एच.डी.-4728 (पूसा मालवी), एच.आई. – 8498 (पूसा अनमोल), एच. आई. – 8381 (मालव श्री), एम.पी.ओ.-1215 और एम.पी.ओ – 1106 किसानों को कम समय में 6.28 टन तक उत्पादन देने की क्षमता रखती हैं। इसके अतिरिक्त इन उन्नत किस्मों के गेहूं में विभिन्न प्रकार की बीमारियों से लड़ने के लिए पोषक तत्व विघमान रहते हैं।

हमारे भारत देश में किसान काफी बड़े स्तर पर गेहूं की खेती करते हैं, जिसको किसान बाजार में बेचकर ज्यादा मुनाफा हांसिल करते हैं। यदि आप भी गेहूं की खेती से बेहतरीन मुनाफा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप ऐसे में गेहूं की कठिया प्रजातियों का चयन कर सकते हैं। क्योंकि यह प्रजाति गेहूं का बंपर उत्पादन देने की क्षमता रखती है। यदि एक तरह से देखें तो भारत में कठिया गेहूं की खेती लगभग 25 लाख हेक्टेयर रकबे में की जाती है। कठिया गेहूं में विभिन्न प्रकार की बीमारियों से लड़ने हेतु पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त कठियां गेहूं आद्यौगिक इस्तेमाल के लिए बेहतर होता है।

दरअसल, इससे निर्मित होने वाले सिमोलिना (सूजी/रवा) से जल्दी पचने वाले व्यंजन जैसे कि – पिज्जा, स्पेघेटी, सेवेइयां, नूडल, वर्मीसेली इत्यादि तैयार किए जाते हैं। इसमें रोग अवरोधी क्षमता ज्यादा होने की वजह से बाजार में इसकी काफी ज्यादा मांग रहती है। ऐसी स्थिति में आज हम किसानों के लिए कठिया गेहूं की टॉप पांच उन्नत प्रजातियों की जानकारी लेकर आए हैं, जो 100 से 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। साथ ही, प्रति हेक्टेयर 6.28 टन तक पैदावार प्रदान करती है।

निम्नलिखित कठिया गेहूं की पांच उन्नत किस्में

एच.डी. 4728 (पूसा मालवी)

कठिया गेहूं की यह प्रजाति 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस प्रजाति के दाने बड़े एवं चमकीले होते हैं। गेहूं की कठिया एच.डी.-4728 (पूसा मालवी) प्रजाति से किसान प्रति हेक्टेयर 5.42 से 6.28 टन तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। यह प्रजाति तना और पत्ती के गेरुई रोग के प्रति रोधी मानी जाती है।

एच.आई. 8498 (पूसा अनमोल)

इस प्रजाति को किसान मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के इलाकों में सहजता से कर सकते हैं। कठिया गेहूं की इस प्रजाति में जिंक व आयरन की भरपूर मात्रा विघमान होती है।

एच. आई. – 8381 (मालव श्री)

यह प्रजाति विलंब से बुवाई की जाने वाली होती है। कठिया गेहूं की एच. आई. – 8381 (मालव श्री) प्रजाति से कृषक प्रति हेक्टेयर 4.0 से 5.0 टन तक उपज हांसिल कर सकते हैं।

एम.पी.ओ. 1215

कठिया गेहूं की इस प्रजाति से किसान प्रति हेक्टेयर तकरीबन 4.6 से 5.0 टन तक उत्पादन हांसिल कर सकते हैं। इस प्रजाति की फसल 100 से 120 दिन के समयांतराल में पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

एम.पी.ओ 1106

कठिया गेहूं की एम.पी.ओ 1106 प्रजाति लगभग 113 दिन के अंदर पूर्णतय पक जाती है। यह प्रजाति सिंचित इलाकों में भी शानदार पैदावार देने की भी क्षमता रखती है। कठिया गेहूं की इस प्रजाति को मध्य भारत के कृषकों के द्वारा सर्वाधिक पैदा किया जाता है।

लहसुन की इन पांच किस्मों की बुवाई करके आप भी ले सकते है बेहतर उपज

लहसुन की खेती करके किसानों को कम समय में अधिक पैसा मिल सकता है। लहसुन की फसल से ही किसान आसानी से दस से पंद्रह लाख रुपये की कमाई कर सकते हैं। लेकिन लहसुन की फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसानों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारी जाननी चाहिए। वास्तव में, लहसुन की खेती न तो अधिक गर्म न तो अधिक ठंडा सीजन में की जाती है। कुल मिलाकर, अक्टूबर-नवंबर का महीना लहसुन के लिए सबसे अच्छा है क्योंकि इस महीने में कम ठंड और कम गर्मी है। अगर आप भी लहसुन की खेती करना चाहते हैं तो आपको को ये भी पता होना जरुरी है कि किन किस्मों की बुवाई करके आप अच्छा मुनाफा कमा सकते है। यहां हम आपको लहसुन की टॉप पांच उन्नत किस्मों की जानकारी देंगे जो की अधिक पैदावार देती है।

लहसुन की टॉप पांच उन्नत किस्में कितनी पैदावार देती है

किसान भाइयों आपकी जानकारी के लिए बता दी की लहसुन की ये टॉप पांच उन्नत किस्में 140-170 दिनों में तैयार हो जाती हैं, और साथ ही 125-200 क्विंटल/हेक्टेयर तक उपज देने में सक्षम हैं। बता दें कि लहसुन की इन पांच उन्नत किस्मों का नाम यमुना सफेद-2 (जी-50), टाइप 56-4 किस्म, जी 282 किस्म, सोलन किस्म और एग्रीफाउंड सफेद (जी-41) है। आइए अब इन किस्मों के बारे में विस्तार से जानते है।

लहसुन की टॉप पांच उन्नत किस्में

यमुना सफेद-2 (जी-50)- लहसुन की इस किस्म का कंद काफी ठोस होता है और इसका गूदा क्रीमी रंग का होता है। इस किस्म की उपज 165-170 दिन में मिल सकती है और प्रति हेक्टेयर 130-140 क्विंटल उत्पादन देती है।

टाइप 56-4 किस्म- पंजाब कृषि विश्वविधालय ने हुसन टाइप 56-4 किस्म विकसित की है। इस लहसुन की गांठें छोटी और सफेद होती हैं। इस किस्म में 25 से 34 कलियां हैं। यह प्रति हेक्टेयर 150 से 200 क्विंटल की उत्कृष्ट उपज देता है।

जी 282 किस्म- इस किस्म की लहसुन काफी सफेद रंग की होती है, जिसके गांठे बड़े-बड़े होते हैं. 282 किस्मों से किसान प्रति हेक्टेयर 175 से 200 क्विंटल उत्पादन कर सकते हैं। खेत में 140 से 145 दिन में यह किस्म पककर तैयार हो जाती है।

सोलन किस्म – हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय ने सोलन किस्म का लहसुन बनाया है। इस प्रकार की लहसुन बहुत मोटी होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सोलन लहसुन की किस्म अन्य किस्मों की तुलना में अधिक उत्पादकता देती है।

एग्रीफाउंड सफेद (जी-41)- इस किस्म की लहसुन के कंद में 20-25 कलिया होती हैं। यह खेत में 160-165 दिन में तैयार होकर बेचने के लिए तैयार हो जाती है। लहसुन की एग्रीफाउंड सफेद (जी-41) से किसान प्रति हेक्टेयर 125-130 क्विंटल तक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

पशुपालन-पशुचारा

मवेशियों और फसलों की आने वाले 15 दिनों में विशेष ध्यान रखने की जरूरत

नवंबर माह में आगामी 15 दिनों के दौरान कृषकों को अपने खेत में क्या करना चाहिए एवं क्या नहीं इस संबंध में कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा सलाह जारी कर दी गई है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिकों ने पशुपालकों के लिए भी जरूरी सलाह जारी की है। जैसा कि हम जानते हैं, कि नवंबर महीना चाल हो चुका है। ऐसी स्थिति में प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के वैज्ञानिकों ने कृषकों के लिए नवंबर माह के प्रथम पखवाड़े मतलब कि आगामी 15 दिनों के चलते किए जाने वाले कृषि एवं पशुपालन से जुड़े कार्यों को सुव्यवस्थित ढ़ंग से करने के लिए सलाह जारी कर दी गई है। जिससे किसान इन कामों को करके स्वयं की आय को बढ़ा सकें। बतादें, कि कृषि वैज्ञानिकों की तरफ से जारी की गई सलाह में फसल उत्पादन, मसर, सब्जी उत्पादन, फसल संरक्षण और पशुधन इत्यादि के विषय में बताया गया है।

गेंहू की रबी फसलों का उत्पादन

भारत के विभिन्न राज्यों में गेहूं रबी मौसम की प्रमुख फसल है। ऐसे में गेहूं की आरंभिक फसल को शीतोष्ण वातावरण की आवश्यकता पड़ती है। यदि वातावरण प्रारंभ में गर्म है, तो फसल की जड़ काफी कम बनती है। साथ ही, इसके रोगग्रसित होने की संभावना भी ज्यादा बढ़ जाती है। साथ ही, निचले एवं मध्यवर्ती इलाकों के कृषक नवंबर माह के प्रथम पखवाड़े में गेहूं की ऐच.पी.डब्ल्यू-249, एच.पी.डब्ल्यू-368, एच.पी.डब्ल्यू-155, एच.पी.डब्ल्यू-236, वी.एल.-907, एच.एस.507, एच.एस.562 व एच.पी. डब्ल्यू-349 किस्मों को अपने खेत में लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त निचले इलाकों के किसान गेहूं की एच.डी. -3086. डी. पी. डब्ल्यू- 621-50-595, व एच.डी.-2687 किस्में लगाएं। किसान को बिजाई के लिए रैक्सिल 1 ग्राम/कि.ग्रा बीज बाविस्टिन या विटावेक्स 2.5 ग्राम/किग्रा. बीज से उपचारित बीज का उपयोग करना चाहिए। बतादें, कि गेहूं की बिजाई सितंबर माह के समापन या फिर अक्टूबर माह की शुरुआत में की गई हो। खरपतवारों के पौधे 2-3 पत्तों की अवस्था, बिजाई के 35 से 40 दिनों पश्चात में हो तो इस समय गेहूं में खरपतवार नाशक रसायनों का छिड़काव जरूर करें। आइसोप्रोट्यरॉन 75 डब्ल्यू.पी. 70 किग्रा दवाई या वेस्टा 16 ग्राम एक कनाल के लिए पर्याप्त होती है। छिड़काव के लिए 30 लीटर पानी प्रति कनाल के अनुरूप इस्तेमाल करें।

पशुओं में बिमारियों को पहचाने

पशुओं में शर्दियों के मौसम में होने वाले रोगों की और प्रबंधन से जुड़े काम को पशुपालक सुनिश्चित करें। अगर देखा जाए तो इस मौसम में फेफड़ों वसन तंत्र और चमड़ी के रोग ज्यादा होते हैं। घातक संक्रामक रोग जैसे पी. पी. आर. इस समय सिरमौर जनपद में सम्भावित भेड़ एवं बकरी पॉक्स, इस समय किन्नौर जनपद में संभावित गलघोंटू रोग, शिमला में खुरपका एवं मुंहपका रोग होते हैं। अगर पशुपालक मवेशियों में बीमारी के किसी भी लक्षण जैसे कि भूख न लगना अथवा कम होना, तीव्र बुखार की हालत में शीघ्र पशु चिकित्सक की सलाह लें। इस वक्त फेशियोला और एम्फीस्टोम नामक फीता कृमियों के संक्रमण को नजरअंदाज ना करें।

थनैला रोग का संरक्षण व उपचार

पशुओं में थनैला रोग लगने की मुख्य वजह क्या होती है, इससे संरक्षण व उपचार कैसे करें

डेयरी पशु थनैला रोग के बैक्टीरिया के लिए काफी ज्यादा संवेदनशील होते हैं। दरअसल, पशुओं में यह रोग स्ट्रेप्टोकोकस जीवाणुओं के माध्यम से होता है। पशुओं के अंदर होने वाला थनैला रोग शारीरिक तौर पर काफी कमजोर कर देता है। इसके साथ-साथ यह सामान्य से भी अधिक दुखदायक होता है। इस रोग की वजह से बहुत बार डेयरी पालकों को काफी ज्यादा नुकसान भी सहन करना पड़ता है। बैक्टीरिया की वजह से फैलने वाला यह रोग संक्रामक होता है। यही वजह है, जो इस पर शीघ्रता से उपचारात्मक कार्यवाही न की जाए तो इससे बाकी मवेशियों के बीमार होने का खतरा बढ़ जाता है।

आमतौर पर थनैला रोग सर्वाधिक गाय और भैंस के अंदर पाया जाता है। इसकी मुख्य वजह यह है, कि यह पशु थनैला रोग के बैक्टीरिया के लिए काफी ज्यादा संवेदनशील होता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि मवेशियों के अंदर यह रोग स्ट्रेप्टोकोकस जीवाणुओं की वजह से होता है।

थनैला रोग के बारे में जानकारी

थनैला रोग पशुओं के थन का एक संक्रमण है, जो मुख्य तौर पर बैक्टीरिया के प्रवेश की वजह से होता है। संक्रमित थन कम दूध और निम्न गुणवत्ता का दूध उत्पन्न करता है। बीमारी का संकट तब ज्यादा बढ़ जाता है, जब इस रोग की वजह से पशुओं में दस्त और भूख ना लगने जैसी दिक्कतें पैदा होने लगती हैं। गाय-भैंसों में ज्यादातर यह रोग स्ट्रेप्टोकोकस जीवाणुओं की वजह से होता है। परंतु, भारत में प्रमुख तौर पर इस रोग को फैलाने में स्टैफिलोकोकाई जीवाणु की वजह से होता है। इस संक्रमण के चलते पशुओं के थनों के साथ-साथ संपूर्ण शरीर में विभिन्न प्रकार की बीमारियां होने के चांस ज्यादा रहते हैं।

थनैला रोग की क्या-क्या निशानियां होती हैं

- थनों पर हल्की से अधिक सूजन होने की संभावना
- थन को छूने पर ज्यादा ही गर्म होने का एहसास होना
- थन दिखने में लाल होते हैं
- थन को छूने पर गाय को काफी असुविधा होगी
- गंभीर परिस्थिति में गाय के शरीर का तापमान काफी अधिक हो जाएगा
- थनैला रोग से संक्रमित मवेशी पानी जैसा दिखने वाला दूध देगी
- दूध के अंदर परतें, थक्के, मवाद अथवा खून भी हो सकता है

थनैला रोग को नियंत्रित करने का मुख्य उपाय

- एक गाय से दूसरी गाय में संक्रमण के संकट को कम करने के लिए इनको भिन्न-भिन्न स्थानों पर रखने की समुचित व्यवस्था करें।
- नियमित तौर से अपने आसपास की सफाई करें, साथ ही इनके प्राथमिक उपचार का भी बेहतर प्रबंध करें।
- रोगग्रस्त पशु को अन्य पशुओं के पास एवं गन्दगी में बिल्कुल भी ना जाने दें।

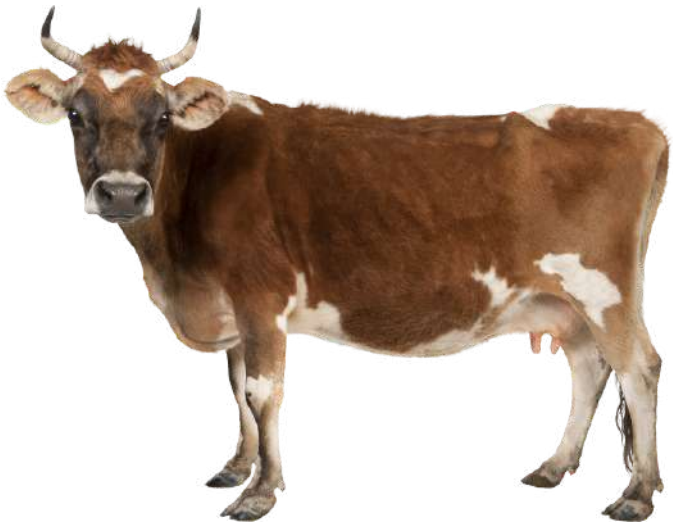

मिट्टी की सेहत - खाद

शीतकालीन गन्ने की वैज्ञानिक विधि से बुवाई करने पर नहीं लगेगा रोग

शीतकालीन गन्ने की बिजाई से ज्यादा उत्पादन अर्जित करने के लिए किसान को इसकी वैज्ञानिक विधि को स्वीकार करना चाहिए, जिससे कि फसल में किसी प्रकार के रोग न लग पाए। साथ ही, उत्पादन क्षमता में भी ज्यादा लाभ हांसिल किया जा सके। ऐसी स्थिति में आज हम किसान भाइयों के लिए गन्ने की वैज्ञानिक ढ़ंग से बुवाई की जानकारी लेकर आए हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में कृषकों ने शीतकालीन गन्ने की बुवाई करनी चालू कर दी है। ऐसी स्थिति में यदि किसान अपने खेत में गन्ने की बेहतर ढ़ंग से बिजाई करते हैं, तो वह ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसी कड़ी में कृषि वैज्ञानिकों ने गन्ने की बुवाई करने हेतु कुछ सावधानियां बरतने की सलाह जारी की है। दरअसल, कृषकों को गन्ने की बेहतरीन उपज हांसिल करने के लिए खेत की बेहतर ढ़ंग से जुताई करनी चाहिए। साथ ही, खेत में उच्च क्वालिटी में खाद को भी डालना चाहिए, जिससे कि फसल में तीव्रता से वृद्धि की जा सके। साथ ही, इसमें किसी तरह का कोई रोग न लग पाए।

शीतकालीन गन्ने की बिजाई से पूर्व ये कार्य अवश्य करें

किसान भाई यदि आप अपने खेत के अंदर हाल ही में शीतकालीन गन्ने की बिजाई करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको सर्व प्रथम खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए। इसके उपरांत खेत में आपको प्रति हेक्टेयर के अनुरूप 10 टन गोबर की खाद को डालना चाहिए। बतादें, कि खेत में उपस्थित रोग समाप्त हो सकें और फसल शानदार तरीके से विकसित हो सके। इसके उपरांत आपको एक बार पुनः खेत की जुताई करनी है। इसके बाद में पाटा चलाकर मृदा को एकसार बना लेना है। इतना करने के उपरांत आप अब खेत में सिंगल बड़ विधि से गन्ने की बुवाई कर सकते हैं। सिंगल बड़ विधि से गन्ने की बिजाई करने के लिए प्रति हेक्टेयर 10-12 क्विंटल गन्ने का बीज किसान सहजता से लगा सकते हैं।

गन्ने की बिजाई के दौरान उर्वरक

गन्ने की बिजाई के दौरान प्रति हेक्टेयर 100 किलो यूरिया एवं 500 किलो सिंगल सुपर फास्फेट दें। वहीं, एमओपी- प्रति हेक्टेयर 100 किलो, जिंक सल्फेट- प्रति हेक्टेयर 25 किलो, रीजेंट – प्रति हेक्टेयर 25 किलो, बवेरिया बेसियाना मेटाराइजियम एनिसोपली- प्रति हेक्टेयर 5 किलो, पीएसबी- प्रति हेक्टेयर 10 किलो, एजोटोबैक्टर – प्रति हेक्टेयर 10 किलो तक डालें। गन्ने की बिजाई के दौरान समुचित और निर्धारित मात्रा में ही रासायनिक खादों का इस्तेमाल करें।

काले गेंहू की खेती

काले गेहूं की खेती से कृषक अपनी आय किस प्रकार बढाऐं

काले गेहूं की खेती कृषकों की आय को बढ़ाने के साथ में यह सेहत के लिए भी काफी लाभकारी है। अगर हम काले गेंहू के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य लाभों की बात करें तो यह बहुत सारे रोग जैसे कि कैंसर, शुगर, रक्तचाप एवं अन्य विभिन्न रोगों से व्यक्ति को फायदा मिलता है। इसकी मुख्य वजह यह है, कि काले गेंहू के अंदर विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व विघमान होते हैं।

काले गेहूं का उत्पादन कई वर्षों से किया जा रहा है। साथ ही, काले गेहूं में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व विघमान होते हैं। इन पोषक तत्वों में विटामिन, खनिज, जिंक, कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम, अमीनो एसिड, कॉपर, एंटीऑक्सीडेंट, फाइबर और प्रोटीन इत्यादि विघमान होते हैं। काले गेहूं के अंदर इन समस्त पोषक तत्वों की भरपूर मात्रा उपस्थित होती है। बतादें, कि काले गेहूं को संपूर्ण अनाज भी माना जाता है। यदि व्यक्ति काले गेहूं से निर्मित रोटी का सेवन करता है, तो वह मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोगियों, कैंसर, शुगर और अन्य कई बीमारियों से काफी अलग होता है। भारत में काले गेहूं की खेती सबसे ज्यादा उत्तर पूर्वी राज्यों में की जाती है। गेहूं की खेती में यह प्रजाति किसानों को सर्वाधिक मुनाफा देती है।

काले गेहूं का सेवन करने से होने वाले लाभ

हृदय संबंधी फायदे क्या-क्या हैं

किसान भाइयों यदि आप काले गेहूं से निर्मित रोटी का सेवन करते हैं, तो आपको हृदय रोग का संकट काफी कम होगा। क्योंकि यह शरीर में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सामान्य बनाए रखने में सहायता करता है।

काले गेंहू का सेवन मधुमेह में लाभकारी होता है

काला गेहूं एंथोसायनिन मधुमेह के रोगियों के ब्लड शुगर, मेटाबॉलिज्म में तीव्रता के साथ सुधार करता है। यदि डायबिटीज रोगी नियमित तौर पर काले गेहूं के उत्पादों का सेवन करते हैं, तो वह उनके लिए काफी लाभकारी साबित होगा।

काला गेंहू कैंसर के लिए काफी फायदेमंद होता है

काले गेहूं के एक शोध में पता चला है, कि इसमें कैंसर रोधी गुण विघमान रहते हैं, जो डीएनए के नुकसान से स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। साथ ही, यह कैंसर की कोशिकाओं को फैलने से रोकती है।

विश्व मृदा दिवस के अवसर पर पौधों की बीमारियों के प्रबंधन में स्वस्थ मिट्टी की भूमिका - प्रोफेसर (डॉ) एसके सिंह

स्वस्थ मिट्टी विभिन्न परस्पर जुड़े तंत्रों के माध्यम से पौधों की बीमारी के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो पौधों की समग्र स्वस्थ में योगदान करती है। एक मिट्टी का पारिस्थितिकी तंत्र जो पोषक तत्वों से समृद्ध है, सूक्ष्म जीवों की आबादी में संतुलित है, और अच्छी भौतिक संरचना रखता है, पौधों की बीमारियों की गंभीरता को काफी कम करता है। स्वस्थ मिट्टी पौधों के रोगजनकों के खिलाफ अग्रिम पंक्ति की रक्षा के रूप में कार्य करती है।

पोषक तत्व संतुलन

स्वस्थ मिट्टी पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का इष्टतम संतुलन प्रदान करती है। पौधों में मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम) और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्याप्त स्तर महत्वपूर्ण है। संतुलित पोषक तत्व वाले पौधे संक्रमण से लड़ने और बीमारियों से उबरने में बेहतर सक्षम होते हैं। मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी होने से पौधे विभिन्न बीमारियों के प्रति रोगग्राही (Susceptible)हो जाते है।

माइक्रोबियल विविधता

स्वस्थ मिट्टी विभिन्न परस्पर जुड़े तंत्रों के माध्यम से पौधों की बीमारी के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो पौधों की समग्र स्वस्थ में योगदान करती है। एक मिट्टी का पारिस्थितिकी तंत्र जो पोषक तत्वों से समृद्ध है, सूक्ष्म जीवों की आबादी में संतुलित है, और अच्छी भौतिक संरचना रखता है, पौधों की बीमारियों की गंभीरता को काफी कम करता है। स्वस्थ मिट्टी पौधों के रोगजनकों के खिलाफ अग्रिम पंक्ति की रक्षा के रूप में कार्य करती है। पोषक तत्व संतुलन स्वस्थ मिट्टी पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का इष्टतम संतुलन प्रदान करती है। पौधों में मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम) और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्याप्त स्तर महत्वपूर्ण है। संतुलित पोषक तत्व वाले पौधे संक्रमण से लड़ने और बीमारियों से उबरने में बेहतर सक्षम होते हैं। मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी होने से पौधे विभिन्न बीमारियों के प्रति रोगग्राही (Susceptible)हो जाते है।

मिट्टी की संरचना और वातन
अच्छे वातन के साथ अच्छी तरह से संरचित मिट्टी इष्टतम जड़ विकास की सुविधा प्रदान करती है और पौधे की पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता को बढ़ाती है। मजबूत, स्वस्थ जड़ें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती हैं, और बेहतर मिट्टी की संरचना जलभराव को रोक सकती है, जो अक्सर जड़ रोगों से जुड़ा होता है।

दमनकारी मिट्टी
कुछ मिट्टी विशिष्ट पादप रोगजनकों के प्रति प्राकृतिक दमन प्रदर्शित करती हैं। इस घटना को विरोधी सूक्ष्मजीवों या पदार्थों की उपस्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जो रोगजनकों के विकास में बाधा डालते हैं। दमनकारी मिट्टी की क्षमता को समझना और उसका दोहन करना पादप रोग प्रबंधन में एक प्रभावी रणनीति हो सकती है।

प्रेरित प्रणालीगत प्रतिरोध (आईएसआर)
स्वस्थ मिट्टी पौधों में प्रणालीगत प्रतिरोध उत्पन्न करती है। जब पौधे मिट्टी में मौजूद कुछ लाभकारी सूक्ष्मजीवों या यौगिकों के संपर्क में आते हैं, तो वे अपने रक्षा तंत्र को सक्रिय कर देते हैं। यह प्रेरित प्रणालीगत प्रतिरोध पौधे की बाद के रोगज़नक़ हमलों का सामना करने की क्षमता को बढ़ाता है।

जैविक रोग नियंत्रक
स्वस्थ मिट्टी लाभकारी जीवों के लिए एक भंडार है जो जैविक नियंत्रण एजेंटों के रूप में कार्य करती है। शिकारी नेमाटोड, माइकोपरसिटिक कवक और अन्य जीव अपनी आबादी को नियंत्रण में रखते हुए, पौधों के रोगजनकों का शिकार कर सकते हैं। इन प्राकृतिक शत्रुओं को मृदा पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत करने से टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल रोग प्रबंधन में योगदान मिलता है।

ह्यूमस और कार्बनिक पदार्थ
विघटित कार्बनिक पदार्थों से प्राप्त ह्यूमस, मिट्टी की संरचना, जल धारण और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करता है। इसके अतिरिक्त, कार्बनिक पदार्थ लाभकारी सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को बढ़ाते हैं, जिससे मिट्टी के वातावरण को बढ़ावा मिलता है जो रोगज़नक़ों के जीवित रहने के लिए कम अनुकूल होता है।

चक्रण के माध्यम से पादप रोगों का विनाश
फसल चक्रण एक ऐसी प्रथा है जो मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में निहित है। फसलों को बदल-बदलकर, किसान विशिष्ट रोगजनकों और कीटों के जीवन चक्र को बाधित करते हैं। इससे मिट्टी में रोगजनकों का जमाव कम हो जाता है और रोग फैलने का खतरा कम हो जाता है।

मृदा पीएच विनियमन
मिट्टी का पीएच पोषक तत्वों की उपलब्धता और माइक्रोबियल गतिविधि को प्रभावित करता है। विशिष्ट फसलों के लिए उचित पीएच रेंज बनाए रखने से एक ऐसा वातावरण बनता है जो पौधों के स्वास्थ्य का समर्थन करता है। कुछ रोगज़नक़ अम्लीय या क्षारीय मिट्टी में पनपते हैं, और पीएच को समायोजित करने से उनका प्रभाव सीमित हो सकता है।

पर्यावरणीय तनावों के प्रति लचीलापन
स्वस्थ मिट्टी सूखे या अत्यधिक तापमान जैसे पर्यावरणीय तनावों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करती है। पोषक तत्वों से भरपूर, अच्छी तरह से संरचित मिट्टी में उगने वाले पौधे तनाव झेलने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं, जिससे वे अवसरवादी रोगजनकों के प्रति कम संवेदनशील होते हैं जो अक्सर कमजोर पौधों को निशाना बनाते हैं।

सारांश
पादप रोग प्रबंधन में स्वस्थ मिट्टी की भूमिका बहुआयामी और परस्पर जुड़ी हुई है। पोषक तत्वों के प्रावधान से लेकर माइक्रोबियल इंटरैक्शन तक, मिट्टी का स्वास्थ्य विभिन्न कारकों को प्रभावित करता है जो सामूहिक रूप से पौधों की बीमारियों का विरोध करने और उनसे उबरने की क्षमता में योगदान करते हैं। मिट्टी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने वाली स्थायी कृषि पद्धतियाँ न केवल मजबूत पौधों के विकास को बढ़ावा देती हैं, बल्कि पौधों के रोगजनकों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का दीर्घकालिक समाधान भी प्रदान करती हैं।

खुबानी तेल का व्यवसाय शुरू कर किसान लाखों की आय कर सकते हैं

आप भी यदि हाल ही में कोई व्यवसाय शुरू करने के विषय में सोच रहे हैं, तो आपके लिए खुबानी तेल का व्यापार काफी अच्छा विकल्प सिद्ध हो सकता है। इस व्यवसाय से आप प्रति माह सुगमता से 60 से 70 हजार रुपये की आमदनी कर सकते हैं।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आज के इस आधुनिक दौर में हर कोई अपनी नौकरी से ज्यादा आय करना चाहता हैं, जिसके चलते लोग अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के विषय में विचार करते हैं। जिससे कि वह शानदार मोटी आमदनी सहजता से कर पाएं। यदि आप भी वर्तमान में व्यवसाय चालू करने के संदर्भ में विचार कर रहे हैं, तो आज हम आपके लिए एक ऐसा शानदार बिजनेस आइडिया लेकर आए हैं, जिसे शुरू करके आप प्रति महीने लगभग 60 से 70 हजार रुपये की आमदनी हांसिल कर सकते हैं। दरअसल, हम खुबानी तेल के कारोबार की बात कर रहे हैं। इस तेल को तैयार करने के लिए लागत बेहद कम आएगी।

खुबानी तेल का व्यापार ऐसे शुरू करें

खुबानी तेल के व्यवसाय के लिए आपको एक यूनिट स्थापित करनी है, जो बाजार में आपको सुगमता से मिल जाएगी। सर्व प्रथम आपको बाजार से मशीनरी, फर्नीचर एंड फिक्सर्स इत्यादि खरीदने होंगे। जिससे कि आपका व्यवसाय बेहतर ढ़ंग से चल सके। उसके बाद आपको तेल निकालने के लिए खुबानी के बीज की जरूरत पड़ेगी। यह बीज आप प्रत्यक्ष तौर पर किसानों से सही कीमतों पर खरीद सकते हैं। इसके उपरांत आपको यह बीज धूप में सुखाने के लिए छोड़ देने हैं। उसके बाद आपको इन बीजों को कोहलू में डालकर पीसना पड़ेगा।

इस प्रक्रिया के आधे घंटे के उपरांत इन बीजों से तेल निकलना चालू हो जाएगा। इसके पश्चात आपको तेल की सफाई करके उसे बोतलों में पैक कर देना है। इस प्रकार से आप खुबानी तेल को तैयार कर सकते हैं।

खुबानी तेल के कारोबार में आने वाला खर्चा और आमदनी

यदि आप खुबानी तेल का व्यवसाय बड़े पैमाने पर चालू करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको न्यूनतम 10 लाख रुपये तक खर्चा करना पड़ेगा। इस खर्चे में मशीन से लेकर बाकी भी बहुत से आवश्यक सामान आ जाएंगे। साथ ही, यदि आप इस व्यवसाय को कम बजट में चालू करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको कम से कम दो लाख रुपये तक का खर्चा करना पड़ेगा। एक बार आपका व्यवसाय चल जाएगा, तो आप इसके जरिए प्रति माह 60-70 हजार रुपये की आमदनी सुगमता से कर सकते हैं। इस व्यवसाय की यह विशेषता है, कि इससे आप हर दिन दोगुना मुनाफा हांसिल कर सकते हैं।

खुबानी तेल का उपयोग

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में खुबानी तेल की मांग सबसे ज्यादा होती है। बतादें कि इस तेल को खुबानी के बीज से निकाला जाता है। बतादें, कि यह तेल काफी ज्यादा हल्का होता है। इस तेल का उपयोग विभिन्न प्रकार के उत्पादों में किया जाता है। कुछ लोग तो इस तेल का उपयोग शरीर की मालिश करने के लिए करते हैं। क्योंकि, इसके अंदर विटामिन E, विटामिन K इत्यादि विभिन्न प्रकार के तत्व पाए जाते हैं। यह तेल त्वचा में नमी बरकरार रखने एवं बालों को मजबूत और सशक्त बनाने के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है।

www.merikheti.com

Address: 5A-46, 6th Floor, Cloud9 Tower, Vaishali
Sector 1, Ghaziabad – 201010